ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्
भगवान इस जग के कण-कण में विद्यमान हैं।

पंजाब केसरी संपादकीय

संस्थापक: शहीद शिरोमणि लाला जगतनारायण जी, अमर शहीद रमेश चन्द्र जी एवं कलम के योद्धा अश्विनी कुमार जी

आदित्य नारायण चोपड़ा
adityachopra@punjabkesari.com

मणिपुर में फिर भाजपा सरकार

लगभग एक वर्ष के राष्ट्रपति शासन के बाद मणिपुर में पूर्व मंत्री युमनाम खेमचंद सिंह के नेतृत्व में लोकप्रिय सरकार का गठन हो गया है। उन्होंने बुधवार शाम को मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। उनके साथ दो उपमुख्यमंत्री कुकी समुदाय से नेमचा किपगेन और नागा समुदाय से लोधी दिखो ने भी शपथ ली। पूर्व मुख्यमंत्री एन. बीरेन सिंह के कट्टर आलोचक खेमचंद सिंह को भाजपा नेतृत्व में स्वयं मुख्यमंत्री के रूप में चुना है। लम्बे समय से जातीय हिंसा और राजनीतिक अनिश्चितता झेल रहे राज्य में नई सरकार का गठन कर भाजपा ने स्थिति को संतुलित करने के लिए बड़ा दांव खेला है। भाजपा ने मैतेई और कुकी समुदाय के नेताओं को सत्ता में साथ लाने की रणनीति पर काम किया। इसके पीछे सामाजिक संतुलन और शांति बहाली के प्रयास के रूप में देखा जा रहा है। भाजपा ने कुकी समुदाय से आने वाली महिला नेता नेमचा किपजेन को डिप्टी सीएम बनाने का फैसला किया। दोनों समुदायों को सत्ता में प्रतिनिधि देकर बीजेपी राजनीतिक और सामाजिक तनाव कम करके राज्य में स्थिर सरकार देना चाहती है। मणिपुर में नई सरकार का गठन संवैधानिक जरूरत और राजनीतिक अनिवार्यता दोनों ही थी क्योंकि राज्य में राष्ट्रपति शासन की अवधि फरवरी में खत्म हो रही है। ऐसे में समय पर सरकार का गठन जरूरी था। नई सरकार बनने से प्रशासनिक फैसले तेजी से लिए जा सकेंगे और शांति की बहाली की प्रक्रिया मजबूत होगी।

60 सदस्यीय विधानसभा में भाजपा के पास 37 विधायक हैं और उसके पास सरकार बनाने के लिए पर्याप्त आंकड़े हैं लेकिन महत्वपूर्ण बात यह थी कि मैतेई-कुकी संघर्ष को पूरी तरह से समाप्त करने के लिए भाजपा क्या संतुलन कायम करती है जिससे शांति बहाली हो सके। मैतेई समुदाय से ताल्लुक रखने वाले युमनाम खेमचंद सिंह की पहचान ऐसे नेता की है जिन्हें हर समुदाय का समर्थन हासिल है। वे हर किसी समूह के साथ जाकर काम कर सकते हैं। उनकी छवि एक सुलझे हुए राजनेता की है जो संगठन और सरकार दोनों का अनुभव रखते हैं। वे 2017 से 2022 तक मणिपुर विधानसभा के स्पीकर रह चुके हैं। इस दौरान उन्होंने कई विधायी निर्णय लिए और सदन को सुचारू रूप से चलाने का अनुभव प्राप्त किया। 2022 में पुन: बीजेपी सरकार बनने पर उन्हें एन. बीरेन सिंह की कैबिनेट में शामिल किया गया था और उनके पास नगर प्रशासन और आवास विकास, ग्रामीण विकास और पंचायत राज जैसे भारी-भरकम मंत्रालय थे। खेमचंद सिंह को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का समर्थन हासिल है और भाजपा के शीर्ष नेतृत्व के साथ भी उनके अच्छे संबंध हैं। मणिपुर में 3 मई 2023 को जातीय हिंसा शुरू हुई थी जिसमें 300 से अधिक लोग मारे गए और हजारों लोग बेघर हुए। हिंसा की शुरूआत तब हुई जब मणिपुर हाईकोर्ट ने राज्य सरकार को मैतेई समुदाय को एसटी का दर्जा देने की सिफारिश भेजने को कहा। इस फैसले से पहाड़ी इलाकों में रहने वाली कुकी जनजातियों में असुरक्षा बढ़ी। उनका मानना था कि मैतेई समुदाय को एसटी का दर्जा मिलने पर आरक्षण में उनकी हिस्सेदारी कम हो जाएगी। साथ ही घाटी का प्रभाव बढ़कर पहाड़ी इलाकों के प्रभावों को कम करेगा। कुकी लोगों को डर था कि अगर मैतेई लोगों को जनजातीय दर्जा मिल जाता है तो वे और भी ज्यादा हाशिये पर चले जाएंगे। बहुसंख्यक मैतेई मुख्य रूप से इम्फाल घाटी में बसे हुए हैं जबकि कुकी लोगों की बसावट पहाड़ी इलाकों में है।

> **60 सदस्यीय विधानसभा में भाजपा के पास 37 विधायक हैं और उसके पास सरकार बनाने के लिए पर्याप्त आंकड़े हैं लेकिन महत्वपूर्ण बात यह थी कि मैतेई-कुकी संघर्ष को पूरी तरह से समाप्त करने के लिए भाजपा क्या संतुलन कायम करती है जिससे शांति बहाली हो सके। मैतेई समुदाय से ताल्लुक रखने वाले युमनाम खेमचंद सिंह की पहचान ऐसे नेता की है जिन्हें हर समुदाय का समर्थन हासिल है। वे हर किसी समूह के साथ जाकर काम कर सकते हैं। उनकी छवि एक सुलझे हुए राजनेता की है जो संगठन और सरकार दोनों का अनुभव रखते हैं।**

मणिपुर में भूमि अधिकार, जंगलों का नियंत्रण, सीमा निर्धारण और पुनर्वास जैसे मुद्दे कई वर्षों से विवाद का केन्द्र रहे हैं। कुकी समुदाय का आरोप था कि मैतेई समुदाय उनके अधिकारों में हस्तक्षेप कर रहा है। मैतेई समुदाय मुख्यत: हिन्दू हैं जबकि कुकी अधिकतर ईसाई हैं। यह पहचान राजनीति में बदल कर संघर्ष को और गहरा कर गई। हिंसा फैली तो घर जले। मंदिरों और चर्चों पर हमले हुए। हजारों लोग विस्थापित हुए। कई जिलों में महीनों तक कर्फ्यू लगा रहा। इंटरनेट बंद रहा। सुरक्षा बलों की तैनाती की गई। तत्कालीन एन. बीरेन सरकार हिंसा को रोकने में पूरी तरह विफल रही। इस हिंसा ने मणिपुर के समाज को पूरी तरह से बांट दिया। कुकी और मैतेई समुदाय अपनी-अपनी सुरक्षा में लग गए। हालात ऐसे बने कि दोनों समुदायों ने एक-दूसरे के इलाकों में जाना ही बंद कर दिया। कुकी समूहों ने एन. बीरेन पर मैतेई लोगों का पक्ष लेने का आरोप भी लगाया। अंतत: केन्द्र सरकार ने राज्य में राष्ट्रपति शासन लगा दिया लेकिन विधानसभा निलम्बित रखी गई। केन्द्र सरकार ने दोनों समुदायों में दूरियां पाटने के लिए बातचीत का सिलसिला शुरू किया। कुकी समुदाय का कहना है कि समस्या का हल सिर्फ शांति प्रक्रिया के दौरान ईमानदारी और गैर पक्षपाती रवैया अपना कर ही हो सकता है। जब तक संसाधनों का समान बंटवारा या केन्द्रीय व्यवस्था नहीं स्थापित होती, समस्या खत्म नहीं होगी और समाधान की प्रक्रिया जटिल बनी रहेगी।

इस समस्या से निपटने का टिकाऊ तरीका यही है कि जातीय तनाव की जड़ के जो मुद्दे हैं उन्हें हल किया जाए और ऐसा समाधान किया जाए जो दोनों पक्षों को स्वीकार्य हो। कुकी में नगा समुदाय भी शामिल है। कुकी और मैतेई समुदायों में तनाव तो अंग्रेजों के शासन से ही चल रहा है। अब जबकि राज्य में फिर से सरकार बन गई है तो उम्मीद की जानी चाहिए कि युमनाम सरकार राज्य में शांति बहाल के प्रयास करेगी और दोनों समुदायों के बीच गहरी हो चुकी अविश्वास की खाई को पाटने के लिए बातचीत की प्रक्रिया शुरू करेगी। हाल ही में युमनाम खेमचंद सिंह ने कुकी बहुल इलाकों का दौरा कर शांति और बातचीत की वकालत की थी।

मैतेई समुदाय से होने के बावजूद दूसरे समुदायों तक उनकी पहुंच उन्हें मौजूदा संकट में एक स्वीकार्य चेहरा बना सकती है। विवादों से दूर रहने वाले नेता के तौर पर उनकी पहचान बड़ी भूमिका निभा सकती है। जरूरत इस बात की है कि दोनों समुदायों के बीच संवाद कायम हो। जमीन और आरक्षण पर स्पष्ट नीति तैयार की जाए। अगर ऐसा नहीं हुआ तो फिर से तनाव पैदा हो सकता है। कुकी समुदाय को भी कुकीलैंड या जूमलैंड नाम से अलग प्रशासनिक स्वायत्तता की मांग छोड़नी होगी। क्योंकि मैतेई समुदाय इस मांग को राज्य की अखंडता के लिए खतरा मानता है। पड़ोसी देश से होने वाली अवैध घुसपैठ को भी नियंत्रित किए जाने की जरूरत है। राज्य में निष्पक्ष सरकार का होना बहुत जरूरी है। ताकि लोगों को भरोसा हो कि सरकार उनके हक के लिए काम कर रही है।

प्रतिभा को पहचान मिले...

गीता पाढा

"विश्वविद्यालय अनुदान आयोग बिल 2026 सामाजिक
समानता की ओर कदम बढ़ाने को तैयार है,
अनुसूचित जाति और जनजाति एक बेहतर भविष्य की हकदार है,
शिक्षा के द्वार खुले हों, यह प्रत्येक वर्ग का अधिकार है,
प्रतिभा को पहचान मिले, न हो कोई भेदभाव का प्रहार है,
नीति में समावेश हो, यही तो सच्चा सुधार है,
ज्ञान के इस महायज्ञ से सशक्त होगा भारत के विकास का आधार है...!"

मर्यादाएं
चन्द्रमोहन
संपादक : वीर प्रताप
chander_m@ hotmail.com
BLOG: chandermohan.net

हमारी ज़िन्दगी कब सुधरेगी ?

निर्मला जी ने एक और बजट पेश कर दिया। यह उनका लगातार 9वां बजट था। उनसे अधिक केवल मोरारजी देसाईं ने 10 बजट पेश किए थे, पर वह लगातार नहीं थे। मैं अर्थ शास्त्री नही हूं इसलिए बजट के गुण- दोष पर टिप्पणी नहीं कर रहा। यह नोट किया गया है कि वर्तमान वित्त वर्ष में अर्थव्यवस्था 7.4% की अच्छी दर से तरक्की करेगी। हम चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था हैं और कुछ सालों में जर्मनी को पछाड़ कर हम तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रहे हैं। यह उस देश के लिए मामूली उपलब्धि नहीं है जो कभी अपने लोगों का पेट भरने के लिए अमेरिका से PL-480 कार्यक्रम के अधीन अनाज के लिए निर्भर था। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज़ शरीफ़ ने कहा है कि दूसरे देशों से 'भीख मांगते' उनका सिर झुक जाता है और उन्हें शर्म आती है। भारत की वह हालत नहीं बनी। यह आज़ादी से लेकर अब तक हमारे नेतृत्व की सही सोच का परिणाम है।

वर्तमान मोदी सरकार ने लगभग 12 सालों में देश को स्थिरता दी है जिस कारण भी देश तरक्की कर रहा है। हाल ही में हम ई-यू से बड़ी डील कर हटे हैं और डोनाल्ड ट्रम्प ने भी डील की घोषणा की है, पर इसका ब्यौरा अभी स्पष्ट नहीं। देश मज़बूती से 2047 में 'विकसित भारत' के लक्ष्य की तरफ़ चल रहा है,ऐसा हमें बताया गया है। यह सब तो ठीक है, संतोषजनक है, पर ज़मीनी हकीकत तो यह है कि इन आंकड़ों से अलग आम भारतीय की ज़िन्दगी भी है जिसमें कोई सुधार नहीं हुआ। हम प्रदूषित शहरों में रहते हैं, जहां क्राइम बढ़ रहा है, सड़कें टूटी हुई हैं,कूड़े-कचरे के ढेर हैं,पर कोई परवाह करने वाला नहीं क्योंकि चुनाव रोज़मर्रा के मसलों पर नहीं, भावनात्मक मुद्दों पर लड़े जाते हैं। धर्म पर बांटने के बाद जाति पर बांटने का भी प्रयास होता रहता है। दुख की बात है कि यूजीसी जैसी उच्च संस्था जिसकी ज़िम्मेवारी बच्चों का भविष्य संवारने की है, ने ही ऐसे नियम बना दिए जिन्हें सुप्रीम कोर्ट ने 'विभाजनकारी' और 'ख़तरनाक' करार दिया। नियम ऐसे थे कि कैम्पस के अंदर जातिगत बंटवारा हो सकता था। बड़ी अदालत ने रोक तो लगा दी, पर सवाल तो उठता है कि प्रयास ही क्यों किया गया?

यह लेख मैं दिल्ली में लिख रहा हूं। चार दिन पहले मैं जालंधर से यहां सड़क के रास्ते आया था। विभाजन से पहले इसे कभी सड़क-ए-आज़म कहा जाता था। अंग्रेजों ने इसे जीटी रोड का नाम दिया और आज़ाद भारत में यह शेरशाह सूरी मार्ग बन गया। आजकल यह NH-1 कहा जाता है। इसका आकार बढ़ चुका है। दोनों तरफ़ तीन-तीन लेन हैं। नितिन गडकरी को ऐसे हाईवे बनाने का जायज़ श्रेय दिया जाता है। देशभर में हाईवे और सुपर हाईवे का जाल बिछ गया है लेकिन यह नहीं देखा जाता कि मैटेरियल कैसा लगता है, या हाईवे की मेनटेनेंस कैसी है? जालन्धर से दिल्ली तक अब इस हाईवे पर झटके मिलते हैं। लालू प्रसाद यादव ने एक बार कहा था कि सड़कें एक प्रसिद्ध अभिनेत्री (नाम नहीं लूंगा, क्योंकि वह सही नहीं है) के गाल जैसे मुलायम होंगी। पर अब तो गाल में गड्ढे पड़ गए हैं! असली समस्या है कि देश में वर्क कलचर में सुधार नहीं हुआ। जिनका काम देखना है, वह ज़िम्मेवारी सही नहीं निभा रहे। बाबुओं की मानसिकता नहीं बदली। बाक़ी तबाही भ्रष्टाचार ने पूरी कर दी।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था, 'मिनिमम गवर्नमेंट, मैकसिमम गवर्नस'। अर्थात सरकार बढ़िया शासन देगी। पर आज भी काम करने की संस्कृति वही है जिसका दुष्परिणाम आम आदमी भुगत रहा है। मैं पिछले महीने मलेशिया की राजधानी कौलालम्पुर में था। सड़कें सचमुच उस अभिनेत्री की गाल की तरह मुलायम थी। कहीं कोई हार्न नहीं बजाता, कहीं पुलिस वाला नज़र नहीं आता। वातावरण भी साफ़-सुथरा था जबकि दिल्ली में आते ही प्रदूषण आपको पकड़ लेता है। गला ख़राब हो गया, नाक बहने लगी। देश की राजधानी, दिल्ली दुनिया का सबसे प्रदूषित शहर है। बीमारी का घर है। बाहर से लोग आने से घबराते है। कोई इलाज भी नहीं। यह कैसी गवर्नेंस है कि राजधानी में ही लोगों को बीमार होने और कईयों को मरने के लिए छोड़ दिया गया है क्योंकि प्रदूषण को कम करना सरकारी प्राथमिकता में नहीं है? जिस संसद ने 150 साल पुराने वंदे मातरम् पर एक दिन बहस में लगाया, उसके पास प्रदूषण पर बहस के लिए कोई समय नहीं था जबकि हर सर्दियों में बड़ी संख्या में नागरिक मरीज़ बन रहे हैं।

और अगर आप बीमार हो गए तो किधर जाओगे? सरकारी अस्पतालों की जो शोचनीय हालत है वह सबके सामने है। ठिठुरती सर्दी में देश के सबसे बड़े सरकारी अस्पताल एम्स के बाहर खुले में मरीज़ों के सम्बंधी सोने के लिए मजबूर हैं। ऐसे चित्र प्रकाशित हो चुके हैं, पर शासन को परवाह नहीं है। सरकार इलाज के बहुत से खर्चे कम कर रही है, पर क्योंकि सरकारी अस्पतालों की हालत नहीं सुधरती इसलिए, नीति आयोग के आंकड़ों के अनुसार, 60% लोग प्राइवेट अस्पतालों में महंगा इलाज करवाने के लिए मजबूर हैं। बात वहीं आती है कि वर्क कलचर कब संवेदनशील, कार्य कुशल और भ्रष्टाचार मुक्त बनेगा? दिल्ली में राजपथ को 'कर्त्तव्य पथ' का नाम दे दिया गया है, पर कर्त्तव्य के प्रति भावना कब पैदा होगी? बार-बार नवनिर्मित पुल यहां क्यों गिरते हैं? बिहार में तो बरसात में एक दर्जन पुल बह गए, पर जनता ने उसी अक्षम सरकार को भारी बहुमत से निर्वाचित कर दिया। इंदौर को कई वर्षों से सबसे स्वच्छ शहर घोषित किया जा रहा है, पर वहां ही लगभग दो दर्जन लोग पानी पीने से मारे गए क्योंकि पानी और सीवरेज मिल गए थे। सरकारी स्कूलों की हालत सब जानते हैं। केवल दिखावा होता है, पर बेहतर करने का कोई ठोस प्रयास नहीं किया जाता। शायद इसलिए क्योंकि जिन की ज़िम्मेवारी इन्हें ठीक करना है उनके बच्चे सरकारी स्कूलों में नहीं पढ़ते। कुछ वर्ष पहले मुम्बई के पॉश इलाक़े में रहने वाले अभिनेता रितिक रोशन ने प्रेस में शिकायत की कि उनके नल में भूरे रंग का पानी आ रहा है। वहां भी पानी में सीवरेज मिल गया था। हर बरसात में हमारे बड़े शहर, दिल्ली, मुम्बई, बैंगलोर पानी में डूब जाते हैं। इसे प्रदूषण की तरह सामान्य समझा जाता है इसलिए स्थाई समाधान ढूंढने की कोशिश नहीं की जाती। बैंगलोर को कभी गार्डन सिटी कहा जाता था, पर अब वह खचाखच भरे ट्रैफ़िक और चरमरा रहें इंफ्रास्ट्रक्चर का शहर बन चुका है। सुध लेने वाला कोई नहीं क्योंकि सीएम और डिप्टी सीएम कुर्सी की खींचातानी में लगे हुए हैं। हमारे शहर गारबेज, गड्ढों और ट्रैफ़िक के दु:स्वप्न हैं। टिकाऊ सड़कों से किसी की जेब नहीं भरती इसलिए खुदाई होती रहती है, टेंडर होते रहते हैं, सड़कें फिर बनाई जाती हैं। पहली बरसात में गड्ढे पड़ जाते हैं।

> **टिकाऊ सड़कों से किसी की जेब नहीं भरती इसलिए खुदाई होती रहती है, टेंडर होते रहते हैं, सड़कें फिर बनाई जाती हैं। पहली बरसात में गड्ढे पड़ जाते हैं। जनवरी की धुंध में ग्रेटर नोएडा में सॉफ्टवेयर इंजीनियर युवराज मेहता की कार पानी से भरे निर्माणाधीन गड्ढे में गिर गई। सावधान करने के लिए न कोई बोर्ड था, न कोई बाड़ या चारदीवारी इसलिए वह सीधा पानी में चले गए और डूब गए। पिता को अंतिम फ़ोन में उसने कहा, "मैं मरना नहीं चाहता'। नोएडा तो 'स्मार्ट सिटी" घोषित है। पर किसी अफ़सर ने नहीं देखा कि खुला असुरक्षित गड्ढा है और हादसा हो सकता है?**

जनवरी की धुंध में ग्रेटर नोएडा में सॉफ्टवेयर इंजीनियर युवराज मेहता की कार पानी से भरे निर्माणाधीन गड्ढे में गिर गई। सावधान करने के लिए न कोई बोर्ड था, न कोई बाड़ या चारदीवारी इसलिए वह सीधा पानी में चले गए और डूब गए। पिता को अंतिम फ़ोन में उसने कहा, "मैं मरना नहीं चाहता"। नोएडा तो 'स्मार्ट सिटी' घोषित है। पर किसी अफ़सर ने नहीं देखा कि खुला असुरक्षित गड्ढा है और हादसा हो सकता है? बिल्डर भी समझते हैं कि रिश्वत से उनका काम चल जाएगा, इसलिए नियमों का पालन नहीं करते। हर प्रदेश में अवैध खनन हो रहा है। सब कुछ ड्रोन से नज़र आ सकता है, पर रुकता क्यों नहीं? अरावली के जंगलों को बचाने के लिए सुप्रीम को दखल क्यों देनी पड़ी? सरकार ने तो नियम बदल दिए थे जिनका सहारा लेकर कटान चलता रहता और दिल्ली का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाता।

नई समस्या बढ़ता क्राइम है। हर शहर में गैंग बन गए हैं जो लूटपाट करते हैं। मुम्बई में फिल्म निर्माता रोहित शेट्टी के घर पर फायरिंग हो कर हटी है। पंजाब में यह सामान्य बन चुका है। विदेश में बैठे या जेल में बंद गैंगस्टर फरौती की मांग करते हैं और न मिलने पर हिंसा का रास्ता अपना रहे हैं। कई परिवार तो इनके आतंक के कारण देश छोड़ने पर मजबूर हैं। इसके बारे कोई राष्ट्रीय नीति बनाने की ज़रूरत है। आशा है गृहमंत्री अमित शाह इस तरफ़ ध्यान देंगे। सरकार की पहली ज़िम्मेदारी नागरिक को सुरक्षा देना है। हमारे शहर असुरक्षित बनते जा रहे हैं।

हम जो टैक्स देते हैं, उन्हें सरकार की तरफ़ से क्या मिलता है? हवा साफ़ नहीं, पानी साफ़ नहीं, रिश्वत अभी भी चलती है, शहर गंदे हैं। क्राइम और ड्रग्स बढ़ते जा रहे हैं। सुरक्षा नहीं है। निर्मला जी का कहना है कि सरकारी ख़र्चा बढ़ाने के लिए वह टैक्स का जाल और बढ़ाएंगी, पर क्या इससे हमारी ज़िन्दगी में सुधार आएगा? जो भारतीय विदेश चला जाता है वह लौटना नहीं चाहता क्योंकि बाहर "क्वालिटी ऑफ लाइफ़' बेहतर बताई जाती है। हमारी तो राजधानी रहने योग्य नहीं रही। सरकार ने स्मार्ट सिटिज़ बनाई हैं, पर क्या एक भी शहर उस मायने में स्मार्ट है? हमारी क्वालिटी ऑफ लाइफ़ कब इम्प्रूव करेगी? क्या समय नहीं आ गया कि इस तरफ़ ध्यान दिया जाए ताकि टैक्स देने वाला नागरिक महसूस कर सके कि उसे भी बदले में कुछ मिलता है। या ऐसा ही होता रहेगा? बजट आएंगे, बजट जाऐंगे, पर हमारी ज़िंदगी ऐसे ही चलती जाएगी?

भगवती बल्दवा

भविष्य की करेंसी पर भारत का होगा कंट्रोल

तारीख 1 फरवरी 2026। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण जब संसद में बजट का पिटारा खोल रही थीं तो पूरी दुनिया की नजरें टीवी स्क्रीन्स पर चिपकी थीं लेकिन यह बजट सिर्फ आमदनी और खर्च का हिसाब-किताब नहीं था। यह भारत का एक ऐसा 'वॉर डिक्लेरेशन' था जिसकी गूंज बीजिंग से लेकर वाशिंगटन तक सुनाई दी है। इसे सिर्फ एक आर्थिक दस्तावेज समझना सबसे बड़ी बेवकूफी होगी। इसे भारत की जियोपॉलिटिकल सर्जिकल स्ट्राइक कहना ज्यादा मुफीद होगा।

आज हम जिस दौर में जी रहे हैं, वहां तेल अब पुरानी खबर हो चुका है। "डेटा नया तेल है", यह भी अब घिसा-पिटा डायलॉग हो गया है। असली खेल अब क्रिटिकल मिनरल्स, रेयर अर्थ एलिमेंट्स और सेमीकंडक्टर्स का है। जिसे हम और आप मामूली पत्थर या रेत समझते हैं, असल में वही 21वीं सदी का सोना है और 2026 के इस बजट में मोदी सरकार ने साफ कर दिया है कि भारत अब इस सोने का खरीदार नहीं, बल्कि सौदागर बनेगा।

मामला बड़ा पेचीदा है। इसे समझने के लिए थोड़ा फ्लैशबैक में चलते हैं। आज हमारे हाथ में मौजूद स्मार्टफोन हो, सड़क पर दौड़ती इलेक्ट्रिक कार हो, सीमा पर तैनात हमारी मिसाइलें हों, फाइटर जेट का गाइडेंस सिस्टम हो, या फिर विंड टरबाइन के मैग्नेट-इन सबमें रेयर अर्थ एलिमेंट्स लगते हैं। और कड़वा सच यह है कि पिछले तीन दशकों से चीन ने इस मार्केट को अपनी जागीर बना रखा था लेकिन 1 फरवरी 2026 को भारत ने कह दिया है, "बस, अब और नहीं!" बजट में जो सबसे बड़ी बात सामने आई, वह है डेडिकेटेड रेयर अर्थ कॉरिडोर और सेमीकंडक्टर मिशन 2.0। यह कोई हवा-हवाई बात नहीं है। सरकार ने अपनी तिजोरी का मुंह खोल दिया है, ताकि हम चीन की गुलामी से आजाद हो सकें। सरकार ने कस्टम ड्यूटी में भारी कटौती की है अब जरा इस खेल के सबसे बड़े खिलाड़ी की बात करते हैं जो अब तक पर्दे के पीछे था, वह है हमारा राजस्थान। वीरों की भूमि राजस्थान! अब तक हम राजस्थान को सिर्फ पर्यटन, किले और रेगिस्तान के लिए जानते आए हैं लेकिन बजट 2026 ने राजस्थान की तकदीर का पन्ना पलट दिया है। यहां की चट्टानों में ऐसे रेयर अर्थ छिपे हैं जो दुनिया में बहुत कम जगहों पर मिलते हैं। तटीय इलाकों में जो रेयर अर्थ मिलता है, वो रेत में होता है लेकिन राजस्थान में यह ठोस चट्टानों में है। बजट में इसी एडवांस टेक्नोलॉजी और एक्सप्लोरेशन के लिए भारी-भरकम छूट दी गई है। इसका मतलब है कि नागौर और आस-पास के क्षेत्रों में अब बड़ी-बड़ी रिफाइनरीज खड़ी होंगी। नागौर के डेगाना क्षेत्र में तो पहले ही लिथियम और अन्य क्रिटिकल मिनरल्स के संकेत मिल चुके हैं। चूंकि राजस्थान पहले से ही सोलर एनर्जी का किंग है, अब वहां बैटरी बनाने की फैक्ट्रियां भी लगेंगी। यानी बिजली भी वहीं बनेगी और उसे स्टोर करने वाली बैटरी भी। सोचिए, अब राजस्थान में किस कदर नौकरियों की बाढ़ आने वाली है।

अब नजर घुमाते हैं देश के बाकी हिस्सों पर, क्योंकि यह लड़ाई अकेले राजस्थान नहीं लड़ सकता। यह टीम इंडिया का गेम है। बजट ने दक्षिण और पूर्वी भारत के राज्यों - केरल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और ओडिशा को एक रणनीतिक कवच में बदल दिया है। सरकार ने इन चार राज्यों में डेडिकेटेड रेयर अर्थ कॉरिडोर बनाने का ऐलान किया है। यह कोई सड़क वाला कॉरिडोर नहीं है, यह एक पूरा इंडस्ट्रियल क्लस्टर है। केरल और तमिलनाडु के पास समुद्र तट पर मोनाजाइट रेत का खजाना है। बजट में 7,280 करोड़ रुपये की रेयर अर्थ परमानेंट मैग्नेट स्कीम (REPM) को हरी झंडी दिखाई गई है। इसका मकसद कच्ची मिट्टी नहीं, बल्कि फिनिश्ड प्रोडक्ट बेचना है। तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश को तो सरकार ने ईवी और मैग्नेट हब बनाने की ठान ली है। रेयर अर्थ से जो परमानेंट मैग्नेट बनते हैं, वो इलेक्ट्रिक मोटर का दिल होते हैं। अब तक हम ये चुंबक चीन से मंगाते थे। बजट का प्लान यह है कि तमिलनाडु की फैक्ट्रियों में ये चुंबक बनें और वहीं बगल में बन रही इलेक्ट्रिक कारों में फिट हो जाएं।

सप्लाई चेन का ऐसा इंटीग्रेशन चीन की नींद उड़ाने के लिए काफी है और गुजरात तो सेमीकंडक्टर का हब बनने जा रहा है। बजट में वित्त मंत्री ने इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन 2.0 (ISM 2.0) का ऐलान किया है। पहले मिशन में हमने दुनिया को दिखाया कि हम फैब लगा सकते हैं, अब मिशन 2.0 में हम दिखाएंगे कि हम टेक्नोलॉजी ईजाद भी कर सकते हैं। ISM 2.0 के लिए शुरुआती 1,000 करोड़ रुपये अलग से रख दिए गए हैं। सानंद में माइक्रोन का प्लांट फरवरी 2026 के अंत तक पूरी तरह उत्पादन शुरू करने जा रहा है। यह भारत का पहला बड़ा कमर्शियल चिप पैकेजिंग प्लांट है। धोलेरा में टाटा का जो प्लांट आ रहा है, वो तो गेम चेंजर है ही। बजट 2026 ने इस आग में घी डालने का काम किया है। इलेक्ट्रॉनिक्स कंपोनेंट्स मैन्युफैक्चरिंग स्कीम (ECMS) का बजट बढ़ाकर 40,000 करोड़ रुपये कर दिया गया है। इसका मतलब है कि मोबाइल और लैपटॉप का हर छोटा-बड़ा पुर्जा अब मेड इन इंडिया होगा।

अब असली बात पर आते हैं कि आखिर मोदी सरकार इतना आक्रामक क्यों हो रही है? तो मोदी सरकार के लिये यह विशुद्ध रूप से देश की सुरक्षा का मामला है। सरकार की सोच एकदम साफ है-"स्ट्रैटेजिक ऑटोनॉमी"। मतलब, अपनी शर्तों पर जीना। आज के दौर में अगर आपके पास सेमीकंडक्टर और रेयर अर्थ नहीं हैं, तो आपकी आधुनिक सेना अपाहिज है। हमारे तेजस फाइटर जेट, ब्रह्मोस मिसाइलें, न्यूक्लियर सबमरीन, सैटेलाइट्स और ड्रोन, इन सबमें हाई-ग्रेड चिप्स और रेयर अर्थ मैग्नेट लगते हैं। सरकार चीन को पछाड़ कर 'इंडिया फर्स्ट' की रणनीति ला रही है। इन सबके लिए हमें लिथियम, कोबाल्ट, निकेल और रेयर अर्थ चाहिए। मोदी सरकार आज जो बीज बो रही है, उसका फल आने वाली पीढ़ियां खाएंगी। यह भविष्य की करेंसी को अपने कंट्रोल में लेने की तैयारी है। इसके अलावा, यह आर्थिक आजादी का भी दूसरा नाम है। हम हर साल अरबों डॉलर का तेल और इलेक्ट्रॉनिक्स आयात करते हैं। अगर हम अपने ही देश में चिप और बैटरी बनाने लगें, तो हमारा इंपोर्ट बिल धड़ाम से नीचे गिरेगा। रुपया मजबूत होगा और डॉलर के सामने हमारी करंसी सीना तानकर खड़ी होगी।

कुल मिलाकर लब्बोलुआब यह है कि बजट 2026 कोई साधारण बजट नहीं था। यह भारत को सुपरपावर बनाने की दिशा में उठाया गया एक बहुत बड़ा, भारी और साहसी कदम है। राजस्थान के रेगिस्तान से लेकर केरल के समुद्र तटों तक, एक नई क्रांति की आहट सुनाई दे रही है। सरकार ने अपना काम कर दिया है - रास्ता दिखा दिया है, पैसा दे दिया है और नियम आसान कर दिए हैं। अब बारी हमारी इंडस्ट्री और हमारे युवाओं की है कि वे इस मौके को लपक लें। याद रखिए, दुनिया बदल रही है। जो देश आज अपनी सप्लाई चेन सुरक्षित कर लेगा, कल वही दुनिया पर राज करेगा। भारत ने अपनी कमर कस ली है। चीन को टक्कर देने के लिए हम मैदान में उतर चुके हैं। यह खनिजों का युद्ध है, और इस बार भारत जीतने के लिए खेल रहा है।

सिख सियासत
सुदीप सिंह
newsreporter.2008@gmail.com

पंजाब की राजनीति में डेरों का असर

पंजाब की राजनीति में डेरों का प्रभाव कोई नई बात नहीं है, यह सालों से चलता आ रहा है। असल में डेरों की शुरुआत अंग्रेजों के समय से हुई जब उन्होंने सिखों की ताकत को कम करने के लिए, उन्हें गुरु ग्रन्थ साहिब से तोड़कर डेरों की ओर अग्रसर किया। देखते ही देखते सिख समुदाय के ज्यादातर लोगों का रुख डेरों की ओर बढ़ने लगा क्योंकि जितने भी डेरे खोले गए हैं उनमें से ज्यादातर डेरों के संचालक सिख समुदाय से ही लिए जाते। इतना ही नहीं डेरों के अन्दर गुरबाणी कीर्तन या गुरु ग्रन्थ साहिब से पंक्तियां लेकर उन्हें इधर-उधर जोड़कर लोगों को लुभाने का कार्य किया जाता। आज तक किसी भी डेरे के द्वारा अपनी बाणी नहीं लिखी गई। आज हालात ऐसे बन चुके हैं कि पंजाब केवल खेत-खलिहानों और गुरुओं की धरती ही नहीं है, बल्कि यह डेरों की संस्कृति का भी बड़ा केंद्र बन चुका है। समय के साथ-साथ यह डेरे सिर्फ धार्मिक स्थल नहीं रहे, बल्कि उन्होंने सामाजिक और राजनीतिक जीवन में भी गहरी दख़लअंदाज़ी शुरू कर दी। आज पंजाब की राजनीति को समझने के लिए डेरों के प्रभाव को समझना बेहद ज़रूरी है। अनौपचारिक आंकड़े बताते हैं कि पंजाब के 13 हजार में से 9 हजार गांवों में डेरों का प्रभाव है। इसलिए सभी राजनीतिक दलों को यह लगता है कि बिना डेरों से जुड़े उनका राजनीति में आगे बढ़ना संभव नहीं है जिसके चलते वह डेरों में हाजरियां भरते हैं। कांग्रेस, भाजपा, आप से लेकर स्वयं को पंथक कहलाने वाली पार्टी शिरोमणि अकाली दल के ज्यादातर नेतागण भी लम्बे समय से ऐसा ही करते आ रहे हैं। असल में डेरों के द्वारा समाजिक सेवाएं कर राजनीतिक पहचान बनाई जाती है जैसे शिक्षा, नशा-मुक्ति, लंगर और स्वास्थ्य सेवाएं देते हैं। इससे लोगों में भरोसा बनता है और वही भरोसा चुनाव के समय राजनीतिक फैसले में बदल जाता है। आज पंजाब में वैसे तो सैंकड़ों डेरे चल रहे हैं मगर उनमें से कुछ प्रमुख हैं जिनमें डेरा सच्चा सौदा, राधा स्वामी सत्संग ब्यास, निरंकारी मिशन, नामधारी पंथ (भैणी साहिब), डेरा बाबा मुराद शाह (नकोदर), डेरा बाबा बालक नाथ, डेरा बल्लन रविदासिया डेरा है जिनके हजारों लाखों अनुयाई हैं और उन्हें डेरों से जो भी आदेश मिलता है वह उसी पर चलते हुए वोट करते हैं और उन्हें देखते हुए ज्यादातर आम वोटर की राय भी बदल जाती है जिससे यह तय माना जाता है कि डेरा प्रमुख की दिव्य दृष्टि जिस पार्टी या नेता पर पड़ गई उसके समर्थन में वोटों की बारिश होना तय है।

प्रधानमंत्री मोदी का पंजाब दौरा

देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का पंजाब दौरा और वह भी संत रविदास की जयंती वाले दिन उनके डेरे में जाना पंजाब की राजनीति में होने वाले बदलाव की ओर इशारा करता दिख रहा है। नरेन्द्र मोदी शायद पहले प्रधानमंत्री हैं जिन्होंने रविदास भाईचारे के डेरे में जाकर ना सिर्फ हाजरी भरी, बल्कि उन्हें पूर्ण सम्मान भी दिया और आदमपुर हवाई अड्डे का नाम भी संत रविदास के नाम पर रखा गया। देखा जाए तो इस क्षेत्र में 32 प्रतिशत दलित समुदाय के वोट हैं और इस सम्मान के बाद निश्चित तौर पर

उनकी सोच भाजपा के प्रति बदलने वाली है। आम तौर पर देखा जाता है कि यह वोट किसी एक पार्टी का ना जाकर इसका बंटवारा होता आया है, पर अब माना जा रहा है कि प्रधानमंत्री के इस कदम के बाद यह एकतरफा भाजपा के समर्थन में भुगत सकता है जिसके चलते अन्य सभी पार्टियों की चिन्ता बढ़ना स्वभाविक सी बात है। आज तक पंजाब में भाजपा अकाली दल की बैसाखी बनकर सरकार बनाती आई है मगर अब पार्टी का शीर्ष नेतृत्व अपने दम पर सरकार बनाने का ख्वाब संजोए हुए है और वह तभी पूरा हो सकता है जब शहरों के साथ साथ गांव देहात का वोट भी भाजपा के हक में भुगतें जो कि शुरू से ही एकतरफा शिरोमणि अकाली दल और पिछले चुनाव में आप को मिला। इसी के चलते शायद भाजपा ने अब डेरों का रुख किया और हाल ही में डेरा बल्लन में प्रधाननमंत्री ने हाजरी भरी। इससे पूर्व डेरा ब्यास में भी प्रधानमंत्री मोदी होकर आए। 2022 के विधानसभा चुनाव में भाजपा का प्रदर्शन सीमित था लेकिन 2024 के लोकसभा चुनाव में पार्टी ने कुछ बढ़ौतरी दर्ज की। भाजपा की नजर अब दोआबा क्षेत्र की उन विधानसभा सीटों पर है जहां दलित और रविदासिया मतदाता निर्णायक भूमिका निभाते हैं। भाजपा की रणनीति यही संकेत देती है कि पार्टी पंजाब में केवल पारंपरिक शहरी या सीमित वर्गीय राजनीति से बाहर निकलकर व्यापक सामाजिक संतुलन बनाने की कोशिश कर रही है। इसी प्रकार पंजाब के बड़े सियासी चेहरों को भी पार्टी में शामिल किया जा रहा है।

दिल्ली आर.एन.आई. नं. 40474/83
पंजाब केसरी
दिल्ली कार्यालय :
फोन आफिस: 011-30712200, 45212200,
प्रसार विभाग: 011-30712224
विज्ञापन विभाग: 011-30712229
सम्पादकीय विभाग: 011-30712292-93
मैगजीन विभाग: 011-30712330
फैक्स : 91-11-30712290, 30712384, 011-45212383, 84
Email: Editorial@punjabkesari.com
स्वत्वाधिकारी दैनिक समाचार लिमिटेड, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, नजदीक वजीरपुर डीटीसी डिपो, दिल्ली-110035 के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक अनिल शारदा द्वारा पंजाब केसरी प्रिंटिंग प्रैस, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से मुद्रित तथा 2, प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से प्रकाशित।

हो सकता है मैं आपके विचारों से सहमत न हो पाऊं फिर भी विचार प्रकट करने के आपके अधिकारों की रक्षा करूंगा। **–वाल्तेयर**

राजस्थान पत्रिका
संस्थापक
कर्पूर चन्द्र कुलिश

संवेदनशीलता से थामना होगा बच्चों का हाथ

तकनीक जिस गति से हमारे जीवन में घुसी है, वैसे इसके दुष्प्रभावों से निपटने की तैयारी नहीं हुई। गाजियाबाद में एक ही परिवार की तीन नाबालिग बहनों की मौत की खबर समूचे समाज को झकझोरने वाली है। यह घटना सिर्फ एक परिवार पर आई त्रासदी नहीं है, बल्कि डिजिटल दौर में बच्चों के सामने खड़े होते जा रहे बड़े खतरे को लेकर चेतावनी भी है। ऑनलाइन गेमिंग की आदी इन बहनों का स्कूल भी नियमित नहीं हो रहा था। चिंता यह है कि बच्चे अब स्क्रीन के सहारे अपनी दुनिया गढ़ने लगे हैं। ऑनलाइन गेमिंग आज महज मनोरंजन का साधन ही नहीं रह गई है।

यह एक ऐसा उद्योग बन चुका है, जो बच्चों और किशोरों की मानसिक कमजोरियों को पहचानकर उन्हें लंबे समय तक स्क्रीन से बांधे रखने की रणनीति पर काम करता है। इन खेलों की बनावट ही ऐसी होती है कि खिलाड़ी बार-बार लौटने को मजबूर हो जाता है। लेवल, रिवॉर्ड, वर्चुअल करेंसी और लगातार मिलने वाली चुनौतियां दिमाग में एक तरह की लत पैदा करती है। बच्चों के लिए यह खतरा और भी बड़ा है, क्योंकि उनका मानसिक विकास अभी अधूरा होता है और वे जोखिम का आकलन करने में सक्षम नहीं होते। दरअसल, कोरोनाकाल के बाद यह समस्या और गहरा गई। स्कूल बंद हुए, खेल के मैदान सूने हो गए और बच्चों का सामाजिक दायरा सिमटकर मोबाइल स्क्रीन तक रह गया। कई परिवारों ने हालात की मजबूरी में बच्चों को फोन और टैबलेट थमा दिए, ताकि वे घर में व्यस्त रहें। लेकिन धीरे-धीरे यही सुविधा लत में बदलती चली गई। आज, जो बच्चे घंटों तक ऑनलाइन गेम में डूबे रहते हैं उनका वास्तविक दुनिया से रिश्ता कमजोर होता जा रहा है। बड़ा सवाल जिम्मेदारी का है। क्या केवल अभिभावक जिम्मेदार हैं? या वह व्यवस्था भी, जो मुनाफे की अंधी दौड़ में बच्चों को उपभोक्ता की तरह देखने लगी है? ऑनलाइन गेमिंग कंपनियां यह जानती हैं कि उनका बड़ा बाजार बच्चे और किशोर हैं, फिर भी वे उम्र-सीमा, समय-सीमा और मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े जोखिमों को गंभीरता से नहीं लेतीं। स्व-नियमन की बातें अक्सर कागजों तक सीमित रह जाती हैं। दुनिया के कई देशों ने खतरे को समझते हुए सख्त कदम उठाए हैं। साफ है कि जब सरकारें सख्ती दिखाती हैं, तभी कंपनियां जिम्मेदारी से नियम बनाती हैं।

भारत में भी अब ठोस और कड़े कदम उठाने की जरूरत है। सलाह और जागरूकता अभियान काफी नहीं, बल्कि स्पष्ट कानून, निगरानी और दंड का प्रावधान जरूरी है। साथ ही, अभिभावकों की भूमिका भी बेहद अहम है। बच्चों के व्यवहार में बदलाव, चिड़चिड़ापन या एकांतप्रियता जैसे संकेतों को गंभीरता से लेना होगा। उन्हें खेल, कला, पढ़ाई और परिवार के साथ समय बिताने के अवसर भी देने होंगे। बच्चों को तकनीक के भरोसे नहीं छोड़ें, बल्कि संवेदनशीलता के साथ उनका हाथ थामें।

कर्पूर चन्द्र कुलिश
जन्म शताब्दी वर्ष
भाग -46

चूंकि तबादले अब बड़ी चीज बन गए हैं इसलिए यह सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि सरकारी तंत्र कितनी गिरावट पर चला गया

तबादलों में रिश्वतखोरी उच्च स्तर पर सफाई जरूरी

रोजमर्रा के कामों के लिए जनता को नजर आए फुर्ती

राजस्थान हाईकोर्ट ने जर्जर स्कूल भवनों की मरम्मत में देरी पर टिप्पणी की है कि 'राजनेता तबादलों में व्यस्त हैं और बच्चों पर ध्यान ही नहीं है।' सरकारी स्तर पर तबादलों का दौर और इनमें राजनेताओं की रुचि नई बात नहीं। करीब पचपन साल पहले भी तबादलों को लेकर कुछ ऐसा ही माहौल था। राजस्थान में तत्कालीन सरकार ने तबादला प्रक्रिया में बदलाव किया तब भी श्रद्धेय कुलिश जी ने शासन को जो नसीहत दी वह आज भी प्रासंगिक है। आलेख के प्रमुख अंश:

यों देखा जाए तो तबादले अपने आप में कोई चीज नहीं है। चूंकि अब यह एक बड़ी चीज बन गई है इसलिए यह सहज ही समझा जा सकता है कि सरकारी तंत्र कितनी गिरावट पर चला गया है। कुछ सालों से राजस्थान में यह माहौल बन गया था कि मंत्री और विधायकों का सबसे बड़ा काम तबादले करवाना ही रह गया था। तबादला अपने आप में इतना बड़ा कारोबार बन गया था कि विधायक व अन्य कार्यकर्ता इसमें बिचौलिए का काम संभाल बैठे थे। हालात ऐसे हो गए जिनसे लगता था कि राज्य की एक-एक कुर्सी बोली लगाकर ठेके पर उठा दी गई है। एक लाख नर-नारियों के प्रतिनिधि विधायक का सबसे बड़ा धंधा तबादले करवाना और ढाई करोड़ पर शासन करने वाले मंत्री का स्वार्थ और परमार्थ तबादले करना रह गया था। विभागों के अध्यक्ष अपनी कुर्सी पर बैठे-बैठे दस्तखत मारकर चौथ वसूली कर लेते थे। अगर किसी विभाग में किसी अफसर को मनचाही जगह के लिए तुरंत कुछ नहीं देना पड़ा तो चंदे के नाम पर बाद में वसूल हो जाता था। यह जलालत और गिरावट की हद थी जब शासक अपने मुलाजिम से रिश्वत मार ले। तबादलों में रिश्वतखोरी और चुनाव में चंदा वसूली के लिए जब अफसर लिप्त हो जाते हैं तो भ्रष्टाचार एक कानून या रिवाज का रूप धारण कर लेता है। तबादलों की रिश्वत और अफसरों की चंदाखोरी पर रोक लग जाए तो उसका असर नीचे तक पड़े बिना नहीं रहेगा। तबादलों के प्रसंग पर चर्चा करते समय एक और पहलू पर नजर डालना ठीक होगा। कुछ सरकारी विभाग ऐसे मिलेंगे जिनमें अगर किसी एलडीसी को यूडीसी बना दिया जाए तो शायद वह मंजूर नहीं करे। क्योंकि ऐसे एलडीसी के पास ऊपर की आमदनी के जो अवसर हैं वे यूडीसी के पास नहीं होते। जब तक उच्च स्तर पर सफाई नहीं होगी तब तक आम जनता को राहत नहीं मिलेगी। प्रशासन तंत्र से यह अपेक्षा की जाएगी कि काम करके दिखाएं। प्रशासन की जो साख जनता में समाप्त हो गई है उसे फिर जमाना है। रोजमर्रा के कामों में आम जनता को चुस्ती और फुर्ती नजर आनी चाहिए और सरकार की नीतियों पर अमल होना चाहिए।

तबादलों की दूकानदारी ठप्प, दलालो ठप्प

*(5 जुलाई 1972 को प्रकाशित **'तबादलों की दुकानदारी ठप्प, दलाली ठप्प'** आलेख के अंश)*

सत्ता की जाति

दो पदार्थ संसार में,
इक सत्ता इक भाति।
उठा आँगली जाँणल्यो,
या सत्ता की जाति।।

('सात सैंकड़ा' से)

सर..सर..सर..अफसर कहे,
नेता बोले 'सा ब'।
सर साहब की ताकड़ी,
तुलै माल-असबाब।।

('पोलमपोल' से)

लोकशाही और नौकरशाही की मिलीभगत

यह देखकर दर्द होता है और शर्म भी आती है कि जिन लोगों को नीतियां बनाने व इन्हें अमल में लाने के लिए चुना जाता है, उनका पूरा नहीं तो ज्यादातर समय तबादले करने या रुकवाने में जाता है और शेष समय तथाकथित जनसम्पर्क में। तहसील से लेकर सचिवालय तक कामकाजी आदमी फैसलों के इंतजार में चक्कर लगाते रहते हैं लेकिन फाइल एक मेज से दूसरी मेज पर पहुंचने का नाम ही नहीं लेती। जिस पर भी दफ्तर वालों की सारी प्रतिभा इस बात में खर्च हो जाती है कि काम में किस तरह से फच्चर फंसाया जा सकता है। प्रशासनिक सुधार आयोग में बड़े-बड़े धुरंधर बैठे हुए हैं और बरसों से रिपोर्ट पेश करते रहे हैं। लेकिन देश का यह साम्राज्यशाही प्रशासन टस से मस नहीं होना चाहता। वह भ्रष्ट भी है और निकम्मा भी। अनुभवी लोगों का तो यहां तक मानना है कि प्रशासन की कारगुजारी में गिरावट आई है और यह गिरावट ऊपर से आई है। यह लोकशाही और नौकरशाही की मिलीभगत समझी जाती है। जन-जन की रोजमर्रा की इस जिंदगी से इस ढांचे को, इस ढर्रे को कोई सरोकार नहीं है। जिसने गरीबी हटाने के नाम पर छप्पर फाड़ वोट दिया है वह अब देखना चाहता है और तुरंत देखना चाहता है कि शासन तंत्र का आडम्बर दूर होता है या नहीं। लालफीताशाही दूर होती है या नहीं। भ्रष्टाचार दूर होता है या नहीं। जनसाधारण की यह अकिंचन-सी मांग है। इससे ज्यादा मिल जाए तो कहना ही क्या?

*(कुलिश जी के अग्रलेखों पर आधारित पुस्तक **'हस्ताक्षर'** से)*

(जारी... कुलिश जी का सृजन संसार पढ़ें आगामी गुरुवार को भी)

रेड फ्लैग्स: डिजिटल अरेस्ट और साइबर अपराध पर सुप्रीम कोर्ट की गंभीर चिंता

पुख्ता रोकथाम, मजबूत समन्वय और समय पर कार्रवाई ही सुरक्षा कवच

राकेश हरि पाठक
वरिष्ठ पत्रकार एवं स्तंभकार
@patrika.com

अंतरराष्ट्रीय आकलनों के अनुसार, वैश्विक स्तर पर साइबर ठगी का आकार दस ट्रिलियन अमरीकी डॉलर से भी अधिक हो सकता है, जो भारतीय अर्थव्यवस्था के दोगुने से ज्यादा है।

यदि फिशिंग कॉल्स के जरिये साइबर ठगी पर बनी 2020 की लोकप्रिय वेब-सीरीज 'जामताड़ा' को एक चेतावनी माना जाए, तो बीते वर्ष को खतरे की घंटी कहना गलत नहीं होगा। सर्वोच्च न्यायालय ने साफ शब्दों में पिछले वर्ष बताया था कि बैंकिंग व्यवस्था और दूरसंचार कंपनियों की कुछ गंभीर चूकें आज साइबर ठगों के लिए खुला मैदान बन चुकी हैं। नतीजा यह है कि बेनाम, बेखौफ ठग लाखों आम और असहाय लोगों को आर्थिक रूप से तबाह कर रहे हैं।

साइबर ठगी का मतलब है- डिजिटल माध्यमों से धोखा देना। इसमें अनाधिकृत पहुंच, डेटा चोरी, फिशिंग कॉल्स, फर्जी ईमेल और ऑनलाइन घोटाले शामिल हैं, जिनका मकसद सीधे-सीधे लोगों का पैसा हड़पना होता है। सरकार के अपने आंकड़े बताते हैं कि साइबर सुरक्षा से जुड़ी घटनाएं 2022 में जहां 10.29 लाख थीं, वहीं 2024 में बढ़कर 22.68 लाख तक पहुंच गईं। राज्य और केंद्र की एजेंसियों के बीच तालमेल का काम करने वाली संस्था इंडियन साइबर क्राइम कोऑर्डिनेशन सेंटर का अनुमान है कि सिर्फ इस साल साइबर ठगी से भारतीयों को 1.2 लाख करोड़ रुपए से अधिक का नुकसान हो सकता है। इसी तरह केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआइ) के अनुसार 'डिजिटल अरेस्ट' और साइबर डकैती के जरिये अब तक करीब तीन हजार करोड़ रुपए की ठगी हो चुकी है। इस स्थिति को बेहद गंभीर मानते हुए सुप्रीम कोर्ट की पीठ ने कहा कि डिजिटल अरेस्ट और साइबर ठगी के जरिये लोगों से छीना गया धन चौंकाने वाला है। अदालत ने कहा कि बैंकिंग सिस्टम में ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए, जो इन खामियों को तुरंत पहचान सके और पूरे देश में समय रहते चेतावनी जारी करे। ठगी को रोकने के उपाय अब भी कमजोर हैं। उदाहरण के लिए, किसी एक व्यक्ति या संस्था को सैकड़ों सिम कार्ड मिल जाना। गिरफ्तारी, एफआइआर और मुकदमे जरूरी हैं, लेकिन ये समस्या की जड़ नहीं काटते। असली समाधान उन खामियों को खत्म करने में है, जिनके जरिये पैसा लूटा जाता है और पीड़ितों को उनकी रकम वापस दिलाने में है। यह समस्या केवल भारत की नहीं है। पूरी दुनिया इससे जूझ रही है। अंतरराष्ट्रीय आकलनों के अनुसार, वैश्विक स्तर पर साइबर ठगी का आकार दस ट्रिलियन अमरीकी डॉलर से भी अधिक हो सकता है, जो भारतीय अर्थव्यवस्था के दोगुने से ज्यादा है।

'पिग बुचरिंग' जैसी मनोवैज्ञानिक चालों से अक्सर फिशिंग कॉल्स के जरिये लोगों को धीरे-धीरे जाल में फंसाया जाता है। एक बार पैसा सैकड़ों बैंक शाखाओं में फैले हजारों 'म्यूल अकाउंट्स' में पहुंच गया, तो विदेशों में बैठे ठगी के मास्टरमाइंड जांच शुरू होने से पहले ही रकम बाहर भेजने में देर नहीं करते। बैंकों की ओर से केवाईसी की ढिलाई, संदिग्ध खातों में तेज लेन-देन और नए लाभार्थियों को समय पर न पकड़ पाना वो कमजोरियां हैं, जिनका फायदा ये 'अदृश्य ठग' उठाते हैं। ठग आज नई तकनीकों का भी भरपूर इस्तेमाल कर रहे हैं। 'स्पूफिंग' से वे खुद को भरोसेमंद संस्थान दिखाते हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से बने 'डीपफेक' वीडियो और फिशिंग ईमेल-संदेश लोगों को गुमराह कर निजी जानकारी निकलवाते हैं। भारत की सबसे लोकप्रिय डिजिटल भुगतान प्रणाली यूपीआइ भी सुरक्षित नहीं रही है। साइबर ठगी पर लगाम कसने के लिए सरकार ने पिछले वर्ष प्रमोशन एंड रेगुलेशन ऑफ ऑनलाइन गेमिंग बिल, 2025 पारित किया। इसका उद्देश्य ई-स्पोर्ट्स और सामाजिक खेलों को बढ़ावा देना है, जबकि ऑनलाइन पैसे के खेल, उनके प्रचार और लेन-देन पर पूरी तरह रोक लगाई गई है। सुप्रीम कोर्ट में अटॉर्नी जनरल आर. वेंकटरमणि ने भी माना कि व्यवस्था में कुछ गंभीर खामियां हैं, जिनके कारण ये घोटाले हो रहे हैं और इन्हें दूर करने की कोशिशें चल रही हैं। अदालत की ओर से नियुक्त न्याय मित्र और वरिष्ठ अधिवक्ता एन.एस. नप्पीनई ने बताया कि ब्रिटेन में ऐसे मामलों में 90 प्रतिशत से अधिक ठगी की रकम पीड़ितों को वापस मिल जाती है।

सुप्रीम कोर्ट ने संकेत दिया है कि डिजिटल अरेस्ट जैसे मामलों से निपटने के लिए सीबीआइ को और अधिकार दिए जा सकते हैं और विशेषज्ञ साइबर टीमों की मदद ली जा सकती है। अब बैंकों और दूरसंचार कंपनियों की जिम्मेदारी है कि वे सिस्टम की कमजोर कड़ियों को तुरंत मजबूत करें। मजबूत समन्वय, पुख्ता रोकथाम और समय पर कार्रवाई- यही वह सुरक्षा कवच है, जिसकी आज हर नागरिक को जरूरत है।

लाउंज लॉन: शंघाई का सीढ़ीनुमा सार्वजनिक जोन

शंघाई में एक सीढ़ीनुमा सार्वजनिक लॉन है, जिसे 'लाउंज लॉन' कहा जाता है। इसे खासतौर पर इस तरह डिजाइन किया गया है कि लोग काम के बीच मिलने वाले छोटे-छोटे ब्रेक के दौरान आराम से लेट सकें, विश्राम कर सकें या थोड़ी देर की झपकी ले सकें। यह उन्हें स्ट्रेस फ्री रखने में मदद करता है।

बुक इनसाइट

वन ऑफ अस: भावनात्मक उपन्यास

आज के दौर में रिश्तों की जटिलताओं और भीतर चल रही भावनाओं को समझना आसान नहीं है। वन ऑफ अस इसी उलझन को सादगी और गहराई से सामने रखता है। यह उपन्यास दोस्ती, भरोसे, ईर्ष्या और आत्म-पहचान जैसे विषयों को केंद्र में रखते हुए पाठक को धीरे-धीरे भावनात्मक यात्रा पर ले जाता है। कहानी दो पुराने दोस्तों के इर्द-गिर्द घूमती है, जिनकी जिंदगियां बाहर से परफेक्ट दिखती हैं लेकिन भीतर कई अनकही दरारें छिपी हैं। लेखिका एलिजाबेथ डे ने रिश्तों में पनपने वाली छोटी-छोटी असुरक्षाओं को बड़े संवेदनशील ढंग से उकेरा है। संवाद सहज हैं और घटनाक्रम इतना स्वाभाविक कि पाठक खुद को पात्रों के साथ चलता हुआ महसूस करता है। एलिजाबेथ डे की लेखन शैली इस किताब की सबसे बड़ी ताकत है। वह बिना भारी शब्दों के मन की गहराइयों तक पहुंच जाती हैं। उपन्यास यह भी दिखाता है कि सोशल इमेज और निजी सच्चाई के बीच कितना फासला हो सकता है और कैसे तुलना की आदत रिश्तों को धीरे-धीरे खोखला कर देती है। किताब का प्रवाह धीमा लेकिन असरदार है।

प्रसंगवश

पर्यावरण विनाश की कीमत पर विकास की मीनारें हो रहीं खड़ी

खेजड़ी की बेरोकटोक कटाई इसे राज्य वृक्ष का दर्जा होने के बावजूद हो रही है

पर्यावरण के विनाश की कीमत पर विकास की मीनारें खड़ी होने का दौर दिनोंदिन खतरनाक होता जा रहा है। राजस्थान में राज्य वृक्ष खेजड़ी के अस्तित्व पर संकट भी विकास की ऐसी मीनारें खड़ी करने की वजह से आया है। मरुस्थलीकरण को रोकने के लिए फौलाद-सी खड़ी अरावली पर्वत शृंखला में अंधाधुंध खनन का मुद्दा अभी सुलग ही रहा है कि अब राज्य वृक्ष के अस्तित्व पर आ रहे संकट ने लोगों को उद्वेलित कर दिया है। खेजड़ी को बचाने के लिए पश्चिमी राजस्थान से उठी आवाज अब विधानसभा और न्यायालय तक गूंज रही है। पर्यावरण पर मंडरा रहे संकट को लेकर चिंताएं उठना लाजिमी है। ये तथ्य चौंकाने वाले हैं कि पिछले 15 साल में जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर और बाड़मेर जिले में 26 लाख से अधिक खेजड़ी के पेड़ काटे जा चुके हैं और आने वाले समय में पश्चिमी राजस्थान में 50 लाख खेजड़ी के पेड़ और काटने की तैयारी है। आंकड़े चिंताजनक हैं, पर्यावरणविदों के अनुसार यदि खेजड़ी और अरावली दोनों नहीं रहे तो रेत के बवंडर कब समूचे राजस्थान को अपनी आगोश में लेकर मध्य भारत तक पहुंच जाएंगे इसका अंदाजा लगाना मुश्किल नहीं होगा।

यक्ष प्रश्न यह भी है कि खेजड़ी को राज्य वृक्ष का दर्जा प्राप्त होने के बावजूद यों ही बेरोकटोक कटाई हो रही है तो इस दर्जे का अर्थ ही क्या है? क्या सिर्फ दर्जा दे देने मात्र से प्रदेश की यह पहचान जीवित रह पाएगी, क्या इसे संरक्षित करने के लिए कठोर प्रावधानों की जरूरत नहीं है? बहरहाल खेजड़ी के वृक्ष को बचाने के लिए शुरू हुए जनआंदोलन ने 1730 ईस्वी में जोधपुर के खेजड़ली गांव में हुए अमृता देवी बिश्नोई के ऐतिहासिक आंदोलन को ताजा कर दिया है। जब 363 लोगों ने खेजड़ी की रक्षा के लिए अपना बलिदान दे दिया था। आवश्यकता इस बात की है कि सरकार ट्री प्रोटेक्शन बिल को सख्त प्रावधानों के साथ मंजूर करवाए, साथ ही राज्य वृक्ष के संदर्भ में कठोर नीति बनाई जाए ताकि खेजड़ी पर आया संकट टल सके। **- रुद्रेश शर्मा**

rudresh.sharma@in.patrika.com

बजट विश्लेषण कृषि नीति अब उत्पादन से आगे बढ़कर ब्रांडिंग, निर्यात और वैश्विक प्रतिस्पर्धा से जुड़ रही है

किसान उद्यमी की परिकल्पना व जमीनी यथार्थ में अंतर

गजेंद्र सिंह
लोक नीति विश्लेषक
@patrika.com

प्रश्न यह नहीं है कि भारत वैश्विक कृषि ब्रांड बनेगा या नहीं, बल्कि यह है कि क्या भारत का छोटा किसान उस ब्रांड का साझेदार बनेगा या केवल कच्चा माल उपलब्ध कराने वाला। जब तक कृषि नीति का संतुलन बाजार और संरक्षण, उद्यमिता और सुरक्षा और स्थानीय स्थायित्व के बीच स्थापित नहीं होता, तब तक किसान-केंद्रित विकास एक आकर्षक नारा ही बना रहेगा- जमीनी सच्चाई नहीं।

भारत में कृषि आज भी करीब 45-50 प्रतिशत कार्यबल को आजीविका प्रदान करती है और सकल घरेलू उत्पाद में इसका योगदान 18 प्रतिशत से अधिक है, किसान केवल सरकारी योजनाओं के लाभार्थी नहीं, बल्कि आर्थिक स्थिरता, खाद्य सुरक्षा, सामाजिक संतुलन और ग्रामीण विकास की केंद्रीय धुरी हैं। केंद्रीय बजट 2026 में पहली बार किसान को ऐसे उद्यमी के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास दिखता है, जो मूल्य-शृंखलाओं, बाजारों, निर्यात संभावनाओं व तकनीक-समर्थित प्रणालियों से सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ है।

ग्रामीण आय का एक महत्वपूर्ण, लेकिन कम चर्चित आधार पशुपालन है, जो कृषि आय का लगभग 16 प्रतिशत योगदान देता है और छोटे एवं सीमांत किसानों के लिए अपेक्षाकृत स्थिर आजीविका प्रदान करता है। बजट में पशु चिकित्सा कॉलेजों, अस्पतालों, डायग्नोस्टिक लैब और प्रजनन केंद्रों के लिए ऋण-संलग्न पूंजी सब्सिडी के माध्यम से पशु चिकित्सकों की कमी दूर करने, बीस हजार से अधिक पेशेवरों को जोड़ने और वैश्विक सहयोग की बात की गई है। इसी क्रम में मत्स्य पालन को आय विविधीकरण के रणनीतिक क्षेत्र के रूप में प्रस्तुत करते हुए 500 जलाशयों व अमृत सरोवरों के एकीकृत विकास तथा स्टार्टअप्स, महिला-नेतृत्व वाले समूहों और मछुआ एफपीओ की भागीदारी का प्रस्ताव रखा गया है। हालांकि, आसान व कम ब्याज ऋण, ऋण गारंटी और जोखिम-साझेदारी जैसे वित्तीय साधनों के अभाव में इन पहलों का जमीनी प्रभाव सीमित रह जाने की आशंका बनी रहती है। बजट में उच्च-मूल्य कृषि पर दिया गया विशेष जोर पारंपरिक अनाज-केंद्रित नीति से स्पष्ट विचलन को दर्शाता है। विभिन्न कृषि-जलवायु क्षेत्रों में नारियल, कोको, काजू, चंदन, अगरवुड तथा पर्वतीय क्षेत्रों में अखरोट, बादाम और पाइन नट्स को समर्थन देना इस स्वीकारोक्ति को दर्शाता है कि किसानों की आय में वास्तविक वृद्धि विविधीकरण और मूल्य-संवर्धन से ही संभव है।

दुनिया के सबसे बड़े नारियल उत्पादक के रूप में भारत में लगभग तीन करोड़ लोगों की आजीविका इससे जुड़ी है और पुराने व कम उत्पादक पेड़ों के प्रतिस्थापन तथा उन्नत किस्मों को बढ़ावा देने की योजना व्यावहारिक सुधार की समझ दिखाती है। 'इंडियन काजू' और 'इंडियन कोको' को 2030 तक वैश्विक ब्रांड बनाने का लक्ष्य बताता है कि कृषि नीति अब उत्पादन से आगे बढ़कर ब्रांडिंग, निर्यात और वैश्विक प्रतिस्पर्धा से जुड़ रही है। हालांकि, उच्च-मूल्य कृषि को अनाज सुरक्षा, न्यूनतम समर्थन मूल्य और जोखिम-प्रबंधन तंत्र का विकल्प नहीं बनाया जा सकता, संतुलन के अभाव में यह मॉडल कुछ क्षेत्रों और बड़े उत्पादकों तक सीमित रह जाने का जोखिम रखता है। भारत-विस्टार जैसे बहुभाषी कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्लेटफॉर्म के माध्यम से कृषि स्टैक और आइसीएआर की जानकारी को जोड़कर किसानों को वैयक्तिक सलाह देने का प्रयास स्वागतयोग्य है।

इसकी सफलता डिजिटल साक्षरता, इंटरनेट कनेक्टिविटी और संस्थागत विश्वास पर निर्भर करेगी, जो आज भी देश के बड़े ग्रामीण हिस्से में असमान रूप से उपलब्ध हैं। पिछले कुछ वर्षों से मोटे अनाज, जैविक खेती और देसी बीजों को लेकर पहले बनी नीति-दिशा इस बजट में लगभग गायब है- न इनके संरक्षण, न प्रसार और न ही विपणन के लिए ठोस प्रावधान हैं। इसी तरह कृषि को सशक्त बनाने में पानी और मिट्टी की भूमिका निर्णायक होती है, किंतु मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने तथा जैविक खाद के उत्पादन और उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए इस बजट में किसी प्रकार का अनुदान या प्रोत्साहन नहीं दिया गया है। पाकिस्तान के साथ इंडस वाटर ट्रीटी से जुड़े हालिया घटनाक्रमों के बाद यह अपेक्षा थी कि इस संधि से प्राप्त जल का उपयोग सिंचाई विस्तार के लिए किया जाएगा और नदियों के जल प्रवाह का लाभ पश्चिमी व मध्य भारत तक पहुंचेगा, नदियों को जोड़ने की बहुप्रतीक्षित योजना बजट में अनुपस्थित है। प्रसंस्करण और विनिर्माण के माध्यम से सीधे किसान को लाभ पहुंचाने वाली नीतियां भी अस्पष्ट हैं। खाद और बीज जैसे कृषि इनपुट्स को टैक्स फ्री करने, देसी बीजों के संरक्षण व भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप शोध व नवाचार पर भी विशेष जोर नहीं दिया गया है।

यह बजट एक गहरे द्वंद्व को उजागर करता है। एक ओर किसान को उद्यमी बनाने, उसे तकनीक, बाजार और वैश्विक ब्रांडिंग से जोड़ने की महत्वाकांक्षा है, दूसरी ओर वही किसान पानी, मिट्टी, बिजली, बीज, खाद, सस्ते ऋण और जोखिम-सुरक्षा जैसी बुनियादी आवश्यकताओं के स्तर पर लगभग अकेला छोड़ दिया गया है। प्रश्न यह नहीं है कि भारत वैश्विक कृषि ब्रांड बनेगा या नहीं, बल्कि यह है कि क्या भारत का छोटा किसान उस ब्रांड का साझेदार बनेगा या केवल कच्चा माल उपलब्ध कराने वाला। जब तक कृषि नीति का संतुलन बाजार और संरक्षण, उद्यमिता और सुरक्षा और स्थानीय स्थायित्व के बीच स्थापित नहीं होता, तब तक किसान-केंद्रित विकास एक आकर्षक नारा ही बना रहेगा- जमीनी सच्चाई नहीं।

आपकी बात

कम ब्याज पर ऋण मिले

दिव्यांगजन को स्वरोजगार के लिए कम ब्याज पर ऋण मिले। कार्यस्थल पर रैम्प, लिफ्ट, व्हीलचेयर, अनुकूल डेस्क होनी चाहिए। विशेष जॉब फेयर (रोजगार मेले) का आयोजन और सरकारी आरक्षण का कड़ाई से पालन होना चाहिए ताकि उनके लिए नौकरी के सुलभ अवसर हों। निजी क्षेत्र में समावेशी भर्ती नीतियां भी दिव्यांगजन को रोजगार देने में सक्षम हो सकेंगी। **- शिवजी लाल मीना,** जयपुर

patrika.com पर पढ़ें

पाठकों की अन्य प्रतिक्रियाएं

इसे स्कैन करें

पत्रिकायन का सवाल था, 'दिव्यांगजन को रोजगार देने के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं?' अन्य प्रतिक्रियाएं ऑनलाइन भी देखें।
https://shorturl.at/Vsx60

आज का सवाल

स्लिप लेन को सुरक्षित और सुगम बनाने के लिए क्या कदम उठाए जाने चाहिए?

ईमेल करें: edit@epatrika.com

नतीजे अलग चाहिए, तो तरीका भी अलग अपनाना होगा। पुराने और सुरक्षित रास्तों पर चलकर बेहतर परिणाम नहीं मिलते। चाहे निवेश हो या जीवन, सोच में बदलाव, नई रणनीति और जोखिम लेने की हिम्मत ही सफल बनाती हैं। **मैलोडी हॉब्सन,** सीईओ, एरियल इन्वेस्टमेंट्स

पत्रिका फाइनेंस
@बिजनेस & वेल्थ

ऑनरशिप मीटर किसके पास भारतीय शेयर बाजार की चाबी

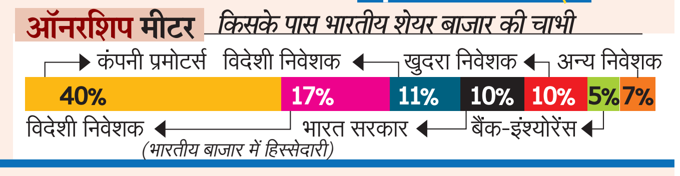

असर अप्रैल से भारत-अमरीका ट्रेड डील का बड़ा लाभ मिलने लगेगा, 2.60 अरब डॉलर का एशियाई देशों का निर्यात खतरे में

देश से कपड़ा-फुटवियर-ज्वैलरी निर्यात 20% बढ़ने की उम्मीद

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

नई दिल्ली. अमरीका के साथ व्यापार समझौते पर अमल के बाद टैरिफ घटकर 18% पर आने के बाद टेक्सटाइल, लेदर और जेम्स-ज्वैलरी जैसे रोजगारपरक उत्पादों के निर्यात में 20% का इजाफा हो सकता है। निर्यातकों का कहना है कि अप्रैल से उन्हें इस समझौते का बड़ा लाभ मिलने लगेगा, क्योंकि नई दर पर आर्डर मिलने में थोड़ा समय लगेगा। अमरीका में निर्यात बढ़ने की संभावना को देखते हुए कंपनियां भारत में निर्माण कराने के लिए निवेश भी करेंगी। अमरीकी कंपनियां जिन देशों में श्रम लागत कम होती है, वहां मैन्युफैक्चरिंग करना पसंद करते हैं।

भारत अपने प्रतिस्पर्धियों से बेहतर स्थिति में

देश	अमरीकी वेटेड टैरिफ
भारत	10.7%
बांग्लादेश	19.9%
श्रीलंका	19.1%
पाकिस्तान	18.2%
फिलीपींस	10.5%
इंडोनेशिया	16%
मलेशिया	9.4%
थाईलैंड	10.6%
वियतनाम	12.5%

(**ट्रेड डील होने से पहले** भारतीय उत्पादों पर 50% टैरिफ के कारण अमरीका में प्रभावी औसत वेटेड टैरिफ 29.7% था, ***जो ट्रेड डील के बाद 10.7% रह जाएगा***)

इतना कम हो जाएगा भारतीय उत्पादों पर शुल्क

	वर्तमान*	प्रस्तावित
झींगा	60%	28%
केमिकल्स	54%	22%
गारमेंट	64%	32%
फुटवियर	58.5%	26%
जेम्स-ज्वैलरी	52%	20%

इंडिया यूएस ट्रेड डील से किसे कितना नुकसान

देश	खतरे में इतना निर्यात
बांग्लादेश	16.20%
श्रीलंका	15.97%
पाकिस्तान	12.23%
फिलीपींस	8.75%
इंडोनेशिया	5.86%
मलेशिया	3.62%
थाईलैंड	2.26%
वियतनाम	1.52%

(इन देशों के कुल अमरीकी निर्यात में इतनी आ सकती है गिरावट भारत-अमरीका ट्रेड डील के कारण)

10% बढ़ेगा रत्न-आभूषण निर्यात

50% शुल्क लगने के बाद खिलौना, फुटवियर जैसे सेक्टर में निवेश की इच्छुक अमरीकी कंपनियों ने हाथ खींच थे। उद्योग संगठन सीआइआइ ने कहा, अब अमरीका को टेक्सटाइल निर्यात एक-दो साल में दोगुना हो सकता है। अपैरल एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल के चेयरमैन ए शक्तिवेल ने कहा, अप्रैल से निर्यात में 20% की बढ़ोतरी हो सकती है। वहीं जेम्स एंड ज्वैलरी के निर्यात में 10% से ज्यादा बढ़ोतरी होने की उम्मीद है, जो 50% टैरिफ के कारण 45% गई थी। सी-फूड, प्रोसेस्ड फूड और कृषि निर्यात भी 10-15% बढ़ने की उम्मीद है।

राहत फैक्ट्रियों में बढ़ेगा रोजगार

टेक्सटाइल हब में नई भर्तियों की शुरू हो सकती है लहर

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

नई दिल्ली. प्रमुख टेक्सटाइल हब तमिलनाडु, गुजरात, महाराष्ट्र और यूपी के साथ राजस्थान में आने वाले माह में बड़े पैमाने पर भर्तियां होने की उम्मीद है। अमरीका के साथ हुए व्यापार समझौते के बाद निर्यात ऑर्डर धीरे-धीरे बढ़ने लगे हैं, जिससे उद्योग में हायरिंग की गतिविधियां तेज हो रही हैं। विशेषज्ञों ने कहा, भारत में करीब 7-10 करोड़ लोग इस सेक्टर में काम करते हैं। 50% टैरिफ से तिरुपुर, सूरत जैसे मैन्युफैक्चरिंग हब में उत्पादन घटाना पड़ा। इससे बड़े पैमाने पर रोजगार घटा था।

इतनी बढ़ेंगी नौकरियां

इंडियन टेक्सटाइल फेडरेशन के मुताबिक, नए समझौते से हर अतिरिक्त एक अरब डॉलर के निर्यात से करीब 1.50 लाख प्रत्यक्ष नौकरियां पैदा हो सकती हैं। अर्थशास्त्री मिताली निकोर ने कहा, वैश्विक खरीदार लौट रहे हैं, ऑर्डर वॉल्यूम में तेजी की संभावना है। तिरुपुर अमरीका को टेक्सटाइल निर्यात करने वाला भारत का सबसे बड़ा केंद्र है, यहां 8 लाख लोग काम करते हैं। निर्यात बढ़ने से अधिक श्रमिकों की जरूरत पड़ेगी। इससे प्रमुख क्लस्टरों में भर्ती तेज होगी।

बैंकों की गुहार

लोन तेज, जमा सुस्त लिक्विडिटी नियमों में ढील देने की मांग

मुंबई@ पत्रिका. बैंकों ने लोन के लिए ज्यादा फंड उपलब्ध कराने के मकसद से रिजर्व बैंक से लिक्विडिटी नियमों में ढील देने का अनुरोध किया है। सूत्रों ने बताया कि बैंकों में जमा की तुलना में कर्ज की मांग तेजी से बढ़ रही है, जिससे फंडिंग पर दबाव बना हुआ है। रिपोर्ट के मुताबिक, बैंकों ने आरबीआइ से उस नकदी का कुछ हिस्सा उपयोग करने की अनुमति मांगी है, जिसे उन्हें अल्पकालिक वित्तीय दबाव की स्थिति के लिए केंद्रीय बैंक के पास रखना होता है। इस मामले पर पिछले दो हफ्तों के दौरान आरबीआइ और कई बैंकों के बीच बैठकें हुई हैं।

ईसीएमएस

इलेक्ट्रॉनिक कंपोनेंट में ₹11,150 करोड़ निवेश की संभावना

नई दिल्ली@ पत्रिका. आइटी मंत्रालय जल्द ही इलेक्ट्रॉनिक्स कंपोनेंट मैन्युफैक्चरिंग स्कीम (ईसीएमएस: के तहत 5 से 7 नए आवेदनों को मंजूरी दे सकता है। इन परियोजनाओं में 11,150 करोड़ रुपए का निवेश होने की संभावना है।

इन इकाइयों से लगभग 29,000 करोड़ रुपए का उत्पादन हो सकता है। साथ ही, इससे करीब 19,000 लोगों को सीधे रोजगार मिलने की उम्मीद है। एक अधिकारी ने बताया कि ये सभी परियोजनाएं 2026 में शुरू हो सकती हैं। नई इकाइयां प्रिंटेड सर्किट बोर्ड, लिथियम-आयन सेल, ऑप्टिकल ट्रांसीवर, एनोड मटीरियल व कॉपर-क्लैड लैमिनेट के साथ एल्युमिनियम एक्सट्रूजन जैसे क्षेत्रों में स्थापित की जा सकती हैं।

बाजार अमरीकी आइटी-टेक कंपनियों के साथ इंफोसिस से लेकर टीसीएस तक के शेयर धड़ाम

एंथ्रॉपिक के नए एआइ टूल से आइटी सेक्टर में खलबली! टेक शेयर क्रैश

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

मुंबई. एआइ कंपनी एंथ्रॉपिक के नए एआइ टूल्स ने भारत सहित दुनियाभर की आइटी-सॉफ्टवेयर कंपनियों के लिए खतरे की घंटी बजा दी है। कंपनी ने अपने एजेंटिक एआइ प्लेटफॉर्म क्लॉड को-वर्क पर 11 नए ऑटोमेशन एआइ टूल्स लॉन्च किए हैं, जो लीगल, सेल्स-मार्केटिंग, डॉक्यूमेंट, कॉन्ट्रैक्ट रिव्यू, कंप्लायंस और डेटा एनालिसिस जैसे दर्जनों प्रोफेशनल्स का कम ऑटोमेट यानी खुद कर सकता है। अब तक इन कामों के लिए महंगे-लाइसेंस वाले सॉफ्टवेयर इस्तेमाल होते थे। पर अब एंथ्रॉपिक के नए टूल के चलते आइटी कंपनियों के कारोबार में बड़े बदलाव की आशंका बढ़ गई है। ये टूल्स आइटी सर्विसेज की मांग को कम कर सकते हैं। इससे दुनियाभर के आइटी-सॉफ्टवेयर शेयर क्रैश हो गए।

एंथ्रॉपिक के नए टूल से बिजनेस प्राभावित होने की आशंका से बुधवार को निफ्टी आइटी इंडेक्स में करीब 6 साल की और इतिहास की चौथी सबसे बड़ी गिरावट आई। निफ्टी आइटी इंडेक्स 5.87% टूटकर बंद हुआ जो इंट्राडे में 8% तक लुढ़क गया था। इंफोसिस-टीसीएस सहित तमाम आइटी शेयर धराशायी हो गए, जिससे आइटी कंपनियों की बाजार पूंजी 1.90 लाख करोड़ रुपए से अधिक घट गई। यह गिरावट केवल भारत तक सीमित नहीं है। एएमडी, कॉग्निजेंट, एसेंचर जैसी दिग्गज अमरीकी टेक कंपनियों के शेयर 13% तक लुढ़क गए। इससे एक दिन में ग्लोबल आइटी कंपनियों की बाजार पूंजी में 300 अरब डॉलर यानी 27 लाख करोड़ रुपए की गिरावट आई। हालांकि बुधवार को सेंसेक्स 78 अंक की तेजी के साथ 83,818 के स्तर पर बंद हुआ। निफ्टी भी 48 अंक चढ़कर 25,776 पर रहा।

ग्लोबल स्टॉक्स भी गिरे

एलएससी ग्रुप पीएलसी	-13%
थॉमसन रॉयटर्स कॉर्पो.	-16%
सीएस डिस्को इंक	-12%
लीगलजूम डॉट कॉम	-20%

300 अरब डॉलर की बाजार पूंजी साफ हो गई दुनियाभर के आइटी शेयरों की, एंथ्रॉपिक के नए एआइ टूल के कारण आई गिरावट से

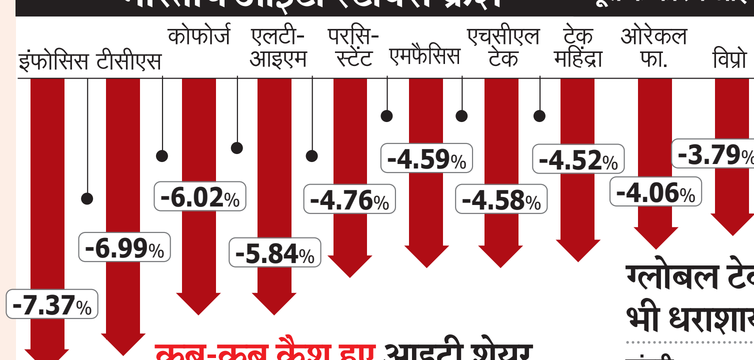

5.87% लुढ़का निफ्टी आइटी इंडेक्स, ***यह मार्च 2020 के बाद दूसरी सबसे बड़ी गिरावट*** जब यह 9.6% लुढ़का था

कब-कब क्रैश हुए आइटी शेयर

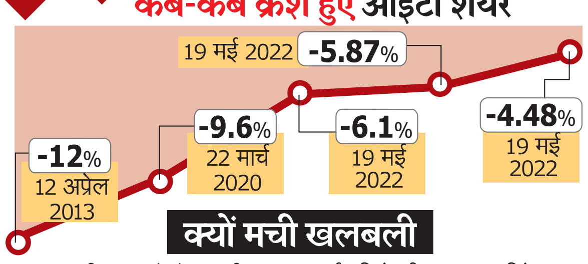

क्यों मची खलबली

नए एआई टूल आने से कानूनी रिसर्च प्लेटफॉर्म, डेटा विश्लेषण सेवाएं और पेशेवर सॉफ्टवेयर देने वाली कंपनियों को सीधी चुनौती मिल सकती है। इसी वजह से यह डर बढ़ गया है कि एआइ के कारण लंबे समय तक चलने वाले और ज्यादा मुनाफा देने वाले सब्सक्रिप्शन कारोबार पर असर पड़ सकता है।

कर्मचारियों की संख्या पर टिके ट्रेडिशनल सर्विस मॉडल अब गंभीर दबाव में हैं। इसकी वजह यह है कि एजेंटिक एआइ अब बड़े पैमाने पर होने वाले काम खुद करने लगा है। पहले माना जाता था कि एआइ सॉफ्टवेयर कंपनियों की मदद करेगा। अब लग रहा है एआइ खुद सॉफ्टवेयर की जगह ले सकता है।

ग्लोबल टेक स्टॉक्स भी धराशायी

कंपनी	गिरावट
एएमडी	-29.53%
एसेंचर	-10.74%
कॉग्निजेंट	-12.60%
आइबीएम	-8.98%
माइक्रोन	-18.20%
सैप एसई	-7.20%
सेल्सफोर्स	-7.21%
एडोबी	-7.85%
ब्रोडकॉम	-10.65%
एनवीडिया	-6.90%

(**अमेजन,** टीएसएमसी, माइक्रोसॉफ्ट, अल्फाबेट, मेटा और क्वालकॉम जैसे अमरीकी टेक स्टॉक्स के साथ तमाम जापानी और कोरियाई आइटी स्टॉक्स दो दिन में 10% से ज्यादाह्य लुढ़के)

WEALTH **नेक्स्टजेन बिजनेस** CREATION

बिजनेस जर्नी नौकरी छोड़ शुरू करना चाहते हैं बिजनेस...

स्टार्टअप की नींव रखने से पहले मजबूत करें अपने फाइनेंस की जमीन

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

नई दिल्ली. नौकरी छोड़कर अपना स्टार्टअप शुरू करने का फैसला जितना रोमांचक लगता है, वास्तव में उससे कहीं अधिक जोखिम भरा भी होता है। नियमित वेतन की सुरक्षा से बाहर निकल व्यक्ति सीधे अनिश्चित आय, बढ़ते खर्च और मानसिक दबाव की दुनिया में कदम रखता है। कई बार बेहतरीन बिजनेस आइडिया भी केवल इसलिए दम तोड़ देते हैं क्योंकि आर्थिक तैयारी पूरी नहीं होती है। इसलिए स्टार्टअप की शुरुआत से पहले अपने पर्सनल फाइनेंस को संतुलित करना बहुत जरूरी है। स्टार्टअप की दुनिया में पहले कुछ साल बेहद चुनौतीपूर्ण होते हैं। इस दौरान नियमित आय का अभाव, अप्रत्याशित खर्च और बाजार की अनिश्चितताएं किसी भी उद्यमी को परेशान कर सकती हैं। ऐसे में यदि व्यक्ति वित्तीय रूप से व्यवस्थित न हो तो स्थिति और भी जटिल हो जाती है।

अपने पर्सनल फाइनेंस को कैसे संभालें?

1 सेफ्टी कॉर्पस: घर के मासिक खर्चों को पूरा करने के लिए फंड बनाएं जो कम से कम पहले 6 महीने से 1 साल तक चल सके। ***जब तक स्टार्टअप से कमाई शुरू न हो जाए, यह फंड सहारा बनेगा।***

2 मानसिक तैयारी: जितना खर्च आप सोच रहे हैं, असल में उससे ज्यादा खर्च आ सकता है। ***इसलिए मानसिक रूप से खर्च को दोगुना मानकर तैयारी करें।***

3 हेल्थ इंश्योरेंस: खुद और परिवार के लिए हेल्थ इंश्योरेंस लें, क्योंकि नौकरी छोड़ते ही ***कंपनी का मेडिकल कवर खत्म हो जाता है। ऐसे में मेडिकल इमरजेंसी पूरी बचत खत्म कर सकती है।***

4 फिजूलखर्ची: शुरुआती वर्षों में फिजूलखर्ची से बचना बेहद जरूरी होता है। ***हर खर्च का स्पष्ट उद्देश्य हो और यह देखें कि खर्च सीधे बिजनेस की जरूरत से जुड़ा है या नहीं।***

5 शुरुआती कर्ज: स्टार्टअप शुरू करते समय पर्सनल लोन या क्रेडिट कार्ड से बचें। ***कर्ज मानसिक दबाव और जोखिम बढ़ाता है।***

6 साइड इनकम: किसी संबंधित काम करके साइड काम से अतिरिक्त आमदनी ला सकते हैं। ***इससे कैश फ्लो बना रहता है और स्टार्टअप पर दबाव कम होगा।***

7 प्लान-बी: अगर बिजनेस नहीं चला तो अगला कदम क्या होगा? ***कर्ज चुकाने की क्षमता पहले से जांचें इससे घर, परिवार और भविष्य जोखिम में नहीं रहेगा।***

पेज एक का शेष

वाट्सऐप कमीशन...

राज्य में अलग-अलग स्थान पर अलग-अलग तरीके से नामों का उच्चारण किया जाता है। महिलाओं को जानबूझकर निशाना बनाया जा रहा है। यह रवैया पूरी तरह महिला विरोधी है। इस दौरान सीजेआइ सूर्यकांत ने कहा कि असली लोगों तो मतदाता सूची में बने रहने चाहिए। इसके बाद सीजेआइ ने कहा, सभी नोटिस वापस लेना अव्यावहारिक है। लेकिन नाम की स्पेलिंग में गड़बड़ी होने पर चुनाव आयोग नोटिस जारी न करे। आयोग अपने अधिकारियों को भी निर्देश दे कि वे संवेदनशील रहें। राज्य सरकार ऐसे लोगों की टीम देती है, जो बांग्ला और स्थानीय बोलियां जानते हों, और वे जांच करके चुनाव आयोग को बताएं कि स्थानीय बोली के कारण गलती है, तो इससे मदद मिलेगी।

खेल खत्म...

मौके पर पहुंची पुलिस ने पाया कि स्थानीय निवासी चेतन कुमार की तीन लड़कियां निशिका (16), प्राची (14) और पाखी (12) नीचे जमीन पर गिरी थीं और बुरी तरह से घायल थीं। उन्हें एम्बुलेंस से अस्पताल ले जाया गया, जहां उन्हें मृत घोषित कर दिया। उन्होंने बताया कि लड़कियों ने करीब 80 फीट ऊंचाई से छंलाग लगाई थी। पुलिस के अनुसार, तीनों बहनें 3 साल से रेगुलर स्कूल भी नहीं जा रही थी। बताया जाता है कि उनके पिता ने उन्हें अत्यधिक गेमिंग के कारण फटकार लगाई थी और हाल ही में उन्हें ऐप का उपयोग करने से रोक दिया था। घटना के समय किशोरियों के माता-पिता ने दूसरे कमरे में सो रहे थे।

प्राची थी बॉस: तीनों बहनें पिछले 3 साल से ऑनलाइन गेम खेल रही थी। ये टास्क बेस्ड गेम था। इस गेम में बीच वाली बहन प्राची बॉस थी, जो अपनी दोनों बहनों को भी टास्क देती थी। दोनों बहनें उसकी हर बात मानती थी। हालत यह थी तीनों बहन हर काम साथ करती थीं, यहां तक के खाना, सोना और घर को छोटे-मोटे काम भी साथ करती थी।

पिता की हुई थी दो शादियां: इन किशोरियों के पिता चेतन ऑनलाइन ट्रेडिंग का काम करते हैं। उन्होंने दो शादी की है। दोनों पत्नियां सगी बहन हैं। पहली पत्नी से कोई बच्चा नहीं हो रहा था तो चेतन ने पत्नी की ही छोटी बहन यानी साली के साथ दूसरी शादी कर ली। दूसरी पत्नी से उसके तीन बच्चे हुए। इसी दौरान पहली पत्नी से भी दो बच्चे हो गए। जिन तीन बहनों ने खुदकुशी की है उनमें दो बहनें दूसरी पत्नी की जबकि एक पहली की बेटी है। सभी लोग साथ रहते थे।

सुसाइड नोट में लिखा...आइ एम सॉरी, पापा: कमरे से मिले सुसाइड नोट में किशोरियों ने पापा से माफी मांगी है। साथ ही एक डायरी का जिक्र भी किया है। नोट में लिखा 'इस डायरी में जो कुछ भी लिखा है, वो सब पढ़ लो क्योंकि ये सब सच है। आइ एम सॉरी, पापा।' सुसाइड नोट में एक इमोजी भी बना है, जिसमें एक लड़की रोते हुए दिखाई गई है।' बताया जाता है सुसाइड नोट में भी 'कोरिया' का जिक्र किया गया है। नोट में लिखा है, 'हम कोरिया नहीं छोड़ सकते, कोरिया ही हमारी जिंदगी है। आप हमें आजाद नहीं कर सकते। हम अपनी जान दे रही हैं।'

खुद को कोरियन मानने लगी थीं: पुलिस सूत्रों के मुताबिक तीनों लड़कियां कोरियन गेम की इतनी आदी हो गई थी कि एक-दूसरे को कोरियाई नामों से पुकारने लगी थीं। यह भी कहा जा रहा है कि तीनों बहनें कोरियन संस्कृति से इतनी प्रभावित हो गई थीं कि वे खुद को भारतीय जगह कोरियन मानने लगी थीं। कोरियन भाषा सीखकर उसी में बात करने लगी थी। इंटरनेट पर सिर्फ कोरियन कंटेंट ही देखती थीं।

मोबाइल पर...

होमवर्क नहीं होता और कॉन्सन्ट्रेशन में कमी आती है। स्कूल या घरेलू कामों को नजरअंदाज करते हैं।

4 सामाजिक अलगाव और रिश्तों में कमी : बच्चा दोस्तों और परिवार से दूर रहने लगता है। वे ऑनलाइन दोस्तों या गेम के कैरेक्टर्स से जुड़े रहते हैं।

5 शारीरिक और भावनात्मक प्रभाव : नींद की कमी, आंखों में दर्द, सिरदर्द, थकान, कम शारीरिक गतिविधि और वजन बढ़ना। वे झूठ बोलने या बातों को छुपाने लगता है।

लोकसभा में...

राहुल गांधी बोले 'गद्दार दोस्त', बिट्टू ने कहा, देश के दुश्मन: संसद के मकर द्वार पर कांग्रेस सांसदों के प्रदर्शन के दौरान लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और केंद्रीय राज्य मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू आमने-सामने आ गए। बिट्टू तंज करते हुए आगे बढ़े कि इन्होंने करगिल की जंग जीत ली है। इसी बीच सीढियों पर चढ़ते समय राहुल गांधी ने उन्हें देखकर हाथ मिलाने की कोशिश करते हुए कहा, देखो यह जा रहा मेरा गद्दार दोस्त, इसका चेहरा देखिए। चिंता मत करो, तुम वापस आ जाओगे (कांग्रेस में)। इसके बाद हाथ मिलाने की बजाय बिट्टू 'देश के दुश्मन' कहते हुए संसद भवन के अंदर प्रवेश कर गए। गौरतलब है कि बिट्टू तीन बार कांग्रेस के सांसद रह चुके हैं। 2024 के लोकसभा चुनाव से पहले बिट्टू ने कांग्रेस छोडकर भारतीय जनता पार्टी का दामन थाम लिया।

आसन पर सांसदों का खड़ा होना मर्यादा तोड़ने जैसा: बिरला: अध्यक्ष ओम बिरला ने विपक्षी सांसदों के सत्ता पक्ष की ओर जाने पर कहा कि आप उस इलाके में जाकर बोलोगे, तो ये ठीक नहीं है। विरोध का एक तरीका होता है। पहले भी विरोध हुआ है, लेकिन मर्यादा कभी किसी ने नहीं तोड़ी। आसन पर आकर विपक्षी सांसदों का खड़ा होना और सत्ता पक्ष की ओर जाना मर्यादा तोड़ने जैसा है। सूत्रों ने बताया कि सदन में गतिरोध समाप्त करने के लिए लोकसभा स्पीकर ओम बिरला के कक्ष में सत्ता पक्ष और विपक्ष को साथ बिठाया गया।

सदन को डिस्टर्ब करने के लिए दुबे को ले आते हैं : प्रियंका कांग्रेस महासचिव व सांसद प्रियंका गांधी ने पत्रकारों से कहा कि जब मोदी सरकार चाहती है कि सदन को डिस्टर्ब करना है, तो वह निशिकांत दुबे को बोलने के लिए खड़ा कर देती है। राहुल गांधी को सदन में किताब के अंश नहीं बोलने दिए गए, वहीं दुबे छह किताबें लेकर बोल रहे हैं। उनका माइक बंद नहीं किया जा रहा है। यह स्पीकर के पद, संसद, लोकतंत्र और देश की जनता का निरादर है।

कृषि-डेयरी में ...

मेक इन इंडिया फॉर वर्ल्ड, 'डिजाइन इन इंडिया फॉर वर्ल्ड और 'इनोवेट इन इंडिया फॉर वर्ल्ड' जैसे अभियानों को मजबूती मिलेगी। यह समझौता विकसित भारत 2047 और आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में एक अहम कदम साबित होगा। गोयल ने स्पष्ट किया कि समझौते से जुड़ी चर्चाओं के दौरान भारत की ऊर्जा सुरक्षा से कोई समझौता नहीं किया गया है। मंत्री ने बताया कि दोनों देश अब समझौते से जुड़ी तकनीकी और कागजी प्रक्रियाओं को अंतिम रूप देने में जुटे हैं। इनके पूरा होते ही व्यापार समझौते की विस्तृत रूपरेखा सार्वजनिक की जाएगी।

परिवार की...

ऑस्टिन चार घंटे तक बर्फीले पानी और विशाल लहरों से अकेले लड़ता रहा। ऑस्टिन ने शुरू के दो घंटे लाइफ जैकेट पहनकर तैराकी की, लेकिन बाद में उसने इसे उतार दिया, क्योंकि इससे गति धीमी हो रही थी। किनारे पहुंचने के बाद ऑस्टिन थककर गिर पड़ा, लेकिन किसी तरह दो किमी और दौडकर फोन ढूंढने में कामयाब हो गया और शाम छह बजे अलार्म बजाया।

पीएम आवास योजना 2.0 29 लाख से ज्यादा परिवारों को लाभ

आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए 2026-27 में बनेंगे 5 लाख मकान

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

नई दिल्ली. केंद्र सरकार ने शहरी गरीबों को पक्का मकान देने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। केंद्र ने प्रधानमंत्री आवास योजना-शहरी 2.0 के तहत लाभार्थी-नेतृत्व वाले निर्माण (बीएलसी) घटक में मकानों के निर्माण का वार्षिक लक्ष्य 2026-27 के लिए 350% बढ़ाकर 5 लाख मकान कर दिया है। बजट दस्तावेजों के मुताबिक, वित्त वर्ष 2025-26 में 1.10 लाख घर बनाने का लक्ष्य था। सरकार का मानना है कि इस फैसले से करीब 29.3 लाख परिवारजनों को सम्मानजनक आवास मिलेगा, जिसमें पानी, बिजली और अन्य बुनियादी सुविधाएं शामिल होंगी। इसके लिए बजट आवंटन 18,625 करोड़ रुपए कर दिया गया है।

350% बढ़ाकर 5 लाख किया सरकार ने पक्का मकान बनाने का लक्ष्य 2026-27 में

148% बढ़ाया सरकार ने पीएम आवास योजना 2.0 (अर्बन) का बजट आवंटन 2026-27 के लिए, ***इसे 2025-26 के 7500 करोड़ रुपए से बढ़ाकर 18,625 करोड़ किया***

सरकार देगी इतनी आर्थिक सहायता

इस योजना के तहत अपनी जमीन पर नया पक्का मकान बनाने के लिए लोगों को 2.50 लाख रुपए तक की वित्तीय सहायता दी जाती है। इस योजना के अंतर्गत बनने वाले मकान सभी मौसमों के अनुकूल होंगे। इनका न्यूनतम कारपेट एरिया 30 वर्ग मीटर और अधिकतम 45 वर्ग मीटर तय किया गया है। साथ ही, निर्माण राष्ट्रीय भवन संहिता के सुरक्षा और डिजाइन मानकों के अनुरूप होगा। आवास मंत्रालय ने किफायती आवास योजना के तहत ईडब्ल्यूएस घरों का लक्ष्य 1.5 लाख इकाइयों पर ही बरकरार रखा है।

कमोडिटीज गहनों पर नहीं मिलेगी छूट

सोना-चांदी आयात करना होगा सस्ता, बेस इंपोर्ट ड्यूटी घटी

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

नई दिल्ली. सोने और चांदी के आयात पर सरकार ने बड़ी राहत दी है। सरकार ने इन कीमती धातुओं के आयात पर लगने वाले कस्टम ड्यूटी की गणना के लिए इस्तेमाल होने वाले बेस इंपोर्ट प्राइस (आधार आयात मूल्य) को कम कर दिया है। सीबीआइसी ने नोटिफिकेश जारी कर कहा कि सोने के बेस इंपोर्ट प्राइस को 49 डॉलर प्रति 10 ग्राम घटाकर 1,518 डॉलर कर दिया गया है। वहीं, चांदी के बेस इंपोर्ट प्राइस में 870 डॉलर प्रति किलोग्राम की कटौती की गई है, जिससे यह 2,675 डॉलर प्रति किलोग्राम हो गया है। यह नई दरें उन सोने और चांदी पर लागू होंगी जिनका आयात तय टैरिफ हेडिंग्स के तहत किसी भी रूप में किया जाएगा। इससे आयातकों को कम शुल्क देना होगा।

किसे मिलेगा फायदा

इस ड्यूटी कटौती का फायदा हाई-प्योरिटी गोल्ड बार और कॉइन, साथ ही सिल्वर बुलियन और मेडेलियन पर भी मिलेगा। हालांकि, गहनों, कीमती धातुओं से बनी अन्य वस्तुओं और पोस्ट, कूरियर या बैगेज के जरिए होने वाले आयात पर यह छूट लागू नहीं होगी। भारत दुनिया में सोने का दूसरा सबसे बड़ा ग्राहक है। देश में सोने की लगभग समूची मांग आयात से पूरी करनी होती है। वहीं, चांदी की 80% से अधिक जरूरतें भी विदेशी आपूर्ति पर निर्भर करती हैं। ऐसे में बेस इंपोर्ट प्राइस घटाने से सोना और चांदी के आयातकों पर पड़ने वाला बोझ हल्का होगा।

राहत वैल्यू कैप समाप्त, जानिए कितना सोना-चांदी बिना कोई शुल्क दिए विदेश से भारत ला सकेंगे

विदेश से ड्यूटी-फ्री सामान लाने की लिमिट बढ़कर ₹75,000

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

नई दिल्ली. केंद्र सरकार ने भारत आने वाले यात्रियों के लिए बैगेज नियमों में बड़ी राहत दी है। सरकार ने बैगेज रूल्स में बदलाव कर यूएई सहित विदेश से सोने के गहनों समेत कई सामानों पर ड्यूटी-फ्री छूट बढ़ा दी है। अब विदेश से यात्री 75,000 रुपए तक का सामान ड्यूटी-फ्री ला सकेंगे, यानी कोई शुल्क नहीं देना होगा। पहले लिमिट 50,000 रुपए थी। नया नियम 2 फरवरी से लागू है। नियम भारतीय नागरिकों, विदेशी पर्यटकों के लिए अलग-अलग लिमिट के साथ लागू किया गया है।

1 हवाई या समुद्री मार्ग से आने वाले यात्रियों के लिए सीमा 75,000 कर दी गई है। सड़क मार्ग से सामान लाने पर ये नियम लागू नहीं होंगे। एयरलाइन क्रू सदस्यों के लिए सीमा 2,500 रुपए तय की गई है।

2 यह बढ़ी हुई सीमा भारतीय निवासियों, एनआरआइ, भारतीय मूल के लोगों और वैध वीजा रखने वाले विदेशी नागरिकों पर लागू होगी।

3 विदेशी पर्यटकों के लिए 75,000 के अलावा अलग से 25,000 रुपए की छूट दी गई है। शर्त यह है कि ये सामान अपने बैगेज में लाए गए हों, निजी इस्तेमाल के हों।

सोने के गहनों के नियम सरल किए

अब सोने के गहनों पर ड्यूटी-फ्री सीमा से मूल्य आधारित कैप हटा दी गई है, अब केवल वजन आधारित सीमा ही लागू होगी। महिला यात्रियों के लिए 40 ग्राम तक गहने ड्यूटी-फ्री लाने की इजाजत है। वहीं पुरुष और अन्य के लिए 20 ग्राम तक गहने आयात शुल्क से मुक्त रहेंगे। नियम सोने के बाजार मूल्य की परवाह किए बिना लागू होगा। पहले वजन व मूल्य दोनों का सामना करना पड़ता था। महिलाओं के लिए ₹1,00,000 तो पुरुषों के लिए ₹50,000 लिमिट थी।

ये सुविधाएं भी दी

- **लैपटॉप छूट:** 18 वर्ष से अधिक उम्र के प्रत्येक यात्री को एक लैपटॉप पर कोई शुल्क नहीं देना होगा, जो 75,000 रुपए की सीमा से अलग होगा। इससे व्यापारिक और तकनीकी यात्रियों को सुविधा मिलेगी।
- **पालतू जानवर:** पालतू जानवरों के साथ यात्रा करने वालों के लिए स्पष्ट ड्यूटी-फ्री प्रावधान किए गए हैं (पशु आयात नियमों के अधीन)।
- **अग्रिम बैगेज डिक्लेरेशन:** यात्रियों को ऐप या ई-सेवाओं के माध्यम से लैंडिंग से पहले डिजिटल घोषणा करने की अनुमति है, इससे कस्टम्स क्लीयरेंस तेज होगा।

कल्पमेधा

कर्म करना बहुत अच्छा है पर वह विचारों से आता है, इसलिए अपने मस्तिष्क को उच्च विचारों और आदर्शों से भर लो, उन्हीं से महान कार्यों का जन्म होगा।

- स्वामी विवेकानंद

पुनरीक्षण की परतें

निर्वाचन आयोग की ओर से मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण को लेकर उठ रहे सवालों का सिलसिला थम नहीं रहा है। बिहार से शुरू हुआ विवाद उत्तर प्रदेश से होकर अब पश्चिम बंगाल में केंद्रित हो गया है। पुनरीक्षण प्रक्रिया का मकसद मतदाता सूची से अपात्र लोगों को बाहर करना है, जिनमें स्थान बदलने वाले नागरिक या जिनकी मौत हो चुकी है या फिर गलत तरीके से नाम दर्ज करने वाले लोग शामिल हो सकते हैं। चुनाव में शुचिता सुनिश्चित करने के लिए इस कवायद को जरूरी माना गया है और इस पर किसी को आपत्ति नहीं होगी, मगर इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू है पारदर्शिता और निष्पक्षता का। विभिन्न राज्यों में इस प्रक्रिया के तहत मसविदा मतदाता सूची से जितनी बड़ी संख्या में लोगों के नाम बाहर होने के दावे किए जा रहे हैं, उससे आम नागरिकों के मन में कई तरह की आशंकाएं पैदा हो गई हैं। इससे संबंधित मामले में पश्चिम बंगाल सरकार ने बुधवार को सर्वोच्च न्यायालय में अपना पक्ष रखते हुए आरोप लगाया कि राज्य के लोगों के अधिकारों का हनन हो रहा है। इस पर शीर्ष अदालत ने कहा कि हर समस्या का समाधान होता है और हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि कोई भी पात्र व्यक्ति मताधिकार से वंचित न रहे।

गौरतलब है कि पुनरीक्षण की प्रक्रिया के दौरान बड़ी संख्या में ऐसी शिकायतें सामने आई हैं कि नागरिकों के नाम मनमाने तरीके से मतदाता सूची से बाहर कर दिए गए और उन्हें इस संबंध में कारणों की जानकारी भी नहीं दी गई। ऐसे में निर्वाचन आयोग की इस प्रक्रिया में मतदाता सूची से बाहर होने वाले लोगों को समय पर सूचित करने और उन्हें अपनी पात्रता साबित करने के पर्याप्त अवसर देने को लेकर सवाल उठना स्वाभाविक है। जाहिर है, अगर पुनरीक्षण को निष्पक्ष और पारदर्शी बनाने को प्राथमिकता दी जाती, तो संभवतः अनावश्यक विवाद खड़े नहीं होते। इससे पहले भी सुप्रीम कोर्ट ने पश्चिम बंगाल में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण के संदर्भ में स्पष्ट निर्देश दिया था कि इस पूरी प्रक्रिया में तार्किक विसंगतियों की श्रेणी में रखे गए मतदाताओं का सत्यापन पारदर्शी ढंग से होना चाहिए, ताकि इससे नागरिकों को किसी भी तरह की असुविधा या तनाव न हो।

पश्चिम बंगाल सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय में दलील दी कि निर्वाचन आयोग को तार्किक विसंगति सूची से नामों का उल्लेख करने के कारणों को तत्काल सार्वजनिक करना चाहिए, ताकि संबंधित व्यक्ति यह जान सकें कि गड़बड़ कहां हुआ है और उसमें अपेक्षित सुधार किया जा सके। दावा किया जा रहा है कि राज्य में नाम, उपनाम या आयु में गड़बड़ी को लेकर अब तक 1.36 करोड़ लोगों को तार्किक विसंगतियों के उल्लंघन के लिए नोटिस जारी किए जा चुके हैं। इस पर शीर्ष अदालत ने बांग्ला भाषा में बोलचाल का जिक्र करते हुए कहा कि कभी-कभी इसकी वजह से भी नामों की वर्तनी गलत हो जाती है, लेकिन पात्र व्यक्तियों का मतदाता सूची में बने रहना जरूरी है। सवाल है कि विशेष गहन पुनरीक्षण की प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने का जो काम निर्वाचन आयोग को खुद अपने स्तर पर शामिल करना चाहिए था, उस संबंध में न्यायालय को निर्देश देने की जरूरत क्यों पड़ रही है? ऐसे में यह सुनिश्चित करने की नितांत आवश्यकता है कि कोई भी पात्र व्यक्ति मतदाता सूची से बाहर न हो, ताकि निर्वाचन आयोग पर आम लोगों का भरोसा पूरी तरह कायम रहे।

आभासी खतरे

ऑनलाइन खेल मनोरंजन का साधन हो सकता है, लेकिन इसके लिए सीमित समय तय करना और आत्मनियंत्रण बेहद जरूरी है। अगर किसी बच्चे या किशोर को इसकी लत लग जाए, तो इसके परिणाम भयावह हो सकते हैं। आज की आभासी दुनिया में ऐसे खेल भी आ गए हैं, जिनमें उपयोगकर्ताओं को जोखिम भरे कार्य दिए जाते हैं। बच्चे इन खेलों की ओर ज्यादा आकर्षित होते हैं, जिससे वे न केवल शारीरिक एवं मानसिक विसंगतियों का शिकार हो जाते हैं, बल्कि कई बार आत्मघाती कदम तक उठा लेते हैं। उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद में ऐसी ही एक हृदय विदारक घटना सामने आई है। यहां तीन नाबालिग बहनें मंगलवार देर रात इमारत की नौवीं मंजिल से कूद गईं, जिससे उनकी मौत हो गई। पुलिस की प्रारंभिक जांच-पड़ताल में पता चला कि ये तीनों बहनें एक ऐसे आनलाइन खेल की आदी थीं, जिसमें खेल के दौरान कुछ इस तरह के कार्य दिए जाते हैं, जो खतरे से खाली नहीं होते।

इसमें दोराय नहीं कि इंटरनेट और स्मार्ट फोन ने हमारे जीवन को सुविधाजनक बना दिया है, लेकिन तकनीक के इस साधन में कई तरह के खतरे भी छिपे हुए हैं। मोबाइल फोन के अत्यधिक इस्तेमाल से न केवल बच्चों और किशोरों की पढ़ाई प्रभावित होती है, बल्कि उनके व्यवहार पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। गाजियाबाद में इमारत से कूदकर जान देने वाली लड़कियों के परिवारवाले भी इस बात से चिंतित थे और उनके आनलाइन गेम खेलने पर आपत्ति जताते थे। कहा जा रहा है कि परिवार वालों ने इन तीनों बहनों के मोबाइल फोन के इस्तेमाल पर रोक लगा दी थी, जिससे वे बेहद निराश थीं। सवाल है कि ऐसे आनलाइन खेलों की अनुमति कैसे दे दी जाती है, जो किसी बच्चे के जीवन को खतरे में डाल दे या फिर उसकी मौत का कारण बन जाए? जाहिर है, इसके पीछे कानून में स्पष्ट दिशा-निर्देशों का अभाव हो सकता है। मगर अभिभावकों की भी यह जिम्मेदारी है कि वे इस तरह के जोखिम को हल्के में न लें और बच्चों के मोबाइल फोन के इस्तेमाल के दौरान उन पर नियमित नजर रखें।

तकनीक से संचालित ज्ञान के जोखिम

आज के तकनीकी दौर में मशीनी तंत्र हमारी पसंद, जिज्ञासा और यहां तक कि हमारे ज्ञान को भी आकार देने लगा है। बच्चों और युवाओं को लगता है कि वे स्वतंत्र रूप से ज्ञान एवं सूचना खोज रहे हैं, जबकि वास्तविकता इससे कहीं अलग होती है।

मनीष जैसल

आज का समय तकनीक का है और इसका मौन एवं सबसे प्रभावशाली चेहरा है 'एल्गोरिदम'। यह मशीनी तंत्र हमारी पसंद, जिज्ञासा और यहां तक कि हमारे 'ज्ञान' को भी आकार देने लगा है। इंटरनेट की दुनिया में हम जो कुछ देखते हैं, पढ़ते हैं और साझा करते हैं, वह बहुत हद तक उन्हीं गणनात्मक सूत्रों से छनकर आता है, जिन्हें हम न तो देखते हैं, न ही समझ पाते हैं। बीते कुछ वर्षों में स्मार्टफोन और सस्ते इंटरनेट के रूप में लोगों के हाथ में एक अभूतपूर्व शक्ति के साथ अदृश्य खतरा भी आया है, जिसने हमारे ज्ञान की धारा को ही बदलना शुरू कर दिया है। युवा और बच्चे आज सूचना के महासागर में डूबे हैं, लेकिन समस्या यह है कि वे अपने हिस्से की जानकारी उसी छोटे-सी जगह में पाते हैं, जिसे तकनीक उनके लिए चुन लेती है। उन्हें लगता है कि वे स्वतंत्र रूप से ज्ञान एवं सूचना खोज रहे हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि वे एक ऐसे डिजिटल गलियारे में चल रहे होते हैं, जिसमें रास्ता किसी और ने तय किया होता है।

सबसे बड़ी चिंता यह है कि नई पीढ़ी इंटरनेट पर दिखाई देने वाली जानकारी को सत्य या वस्तुनिष्ठ मानने लगी है। पहले का समय ऐसा था, जब किसी बात को सही साबित करने के लिए पुस्तकें खंगालनी पड़ती थीं, विशेषज्ञों से संवाद करना पड़ता था या शोधपत्र ढूंढने पड़ते थे। अब गूगल सर्च, यू-ट्यूब वीडियो या रील किसी भी 'तथ्य' की खोज के कारगर विकल्प माने जाने लगे हैं। बच्चे यह मानकर चलते हैं कि जो स्क्रीन पर दिख रहा है, वही अंतिम सच है। जबकि स्क्रीन किसी विशेष झुकाव या विपणन के उद्देश्य से वही चीजें दिखा रही होती है, जो उन्हें दिखानी हैं। ईरान में एक ऐसी ही घटना खासी चर्चा में रही है। वहां महामारी के शुरुआती चरण में यह अफवाह फैली थी कि शराब का सेवन शरीर में संक्रमित विषाणु को मार देगा। मीडिया रपटों के अनुसार, इस अफवाह की वजह से कई लोगों की विषाक्त मिथाइल-अल्कोहल पीने से मौत हो गई और कई लोगों की आंखों की रोशनी चली गई। यह घटना दर्शाती है कि जब गलत जानकारी या सुझाव समाज में व्यापक स्तर पर फैलता है, तो उसका मानव जीवन पर कितना गहरा असर हो सकता है।

दरअसल, सोशल मीडिया के 'एल्गोरिदम' इस तरह डिजाइन किए जाते हैं कि वे हमें वही दिखाएं, जो हम पहले से पसंद करते हैं या जिसके समर्थन में हमने पहले कोई संकेत दिया हो। यह प्रक्रिया इतनी बार और इतनी सहजता से होती है कि फर्क धीरे-धीरे खत्म हो जाता है। अगर कोई व्यक्ति किसी मुद्दे पर पहली बार कुछ एकतरफा सामग्री देखता है, तो वह मंच भविष्य में उसे उसी तरह की और अधिक सामग्री दिखाने लगता है। देखने वाले को यह भ्रम होने लगता है कि ज्यादातर लोग उसी तरह सोचते होंगे, जैसे उसके मोबाइल की स्क्रीन पर दिखता है। बच्चों में यह समस्या और गहरी है, क्योंकि उनकी दुनिया नई, संवेदनशील और आसानी से प्रभावित होने वाली होती है। वे तथ्य और राय के फर्क को समझना अभी सीख ही रहे होते हैं। यह समय उनके लिए तर्क, विवेक और विश्लेषण की क्षमता विकसित करने का होता है। मगर वास्तविकता यह है कि आज के डिजिटल मंच बच्चों को विश्लेषण नहीं, बस उपभोग सिखाते हैं। वे

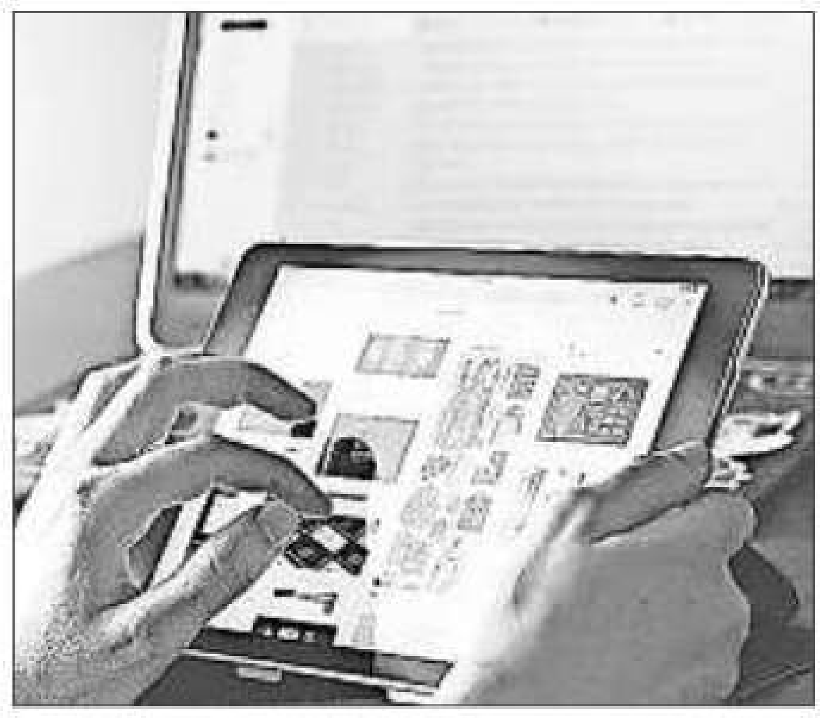

लंबे लेख पढ़ने की बजाय रील्स और छोटे वीडियो पर अधिक निर्भर हो जाते हैं। उनकी धैर्यशीलता कम होती जाती है और वे 'तेज जवाब' तथा 'तुरंत ज्ञान' के आदी हो जाते हैं। यह ज्ञान अर्जित करना नहीं, बल्कि सूचना की लत है और दोनों में फर्क को समझना बेहद जरूरी है।

> सोशल मीडिया अब वैचारिक मंच नहीं, बल्कि हमारी सोच, पसंद और राय को आकार देने वाली शक्ति बन चुका है। सूचना के इस प्रवाह में सच और भ्रम तथा तथ्य और अफवाह के बीच की रेखा धुंधली होती जा रही है। यह परिदृश्य हमें केवल आंकड़ों से नहीं, बल्कि इस चेतावनी से भी अवगत कराता है कि मीडिया साक्षरता, आलोचनात्मक विवेक और तथ्य-जांच के बिना यह डिजिटल शक्ति समाज को सशक्त करने के बजाय दिशाहीन भी कर सकती है। ऐसे में जरूरी है कि हम 'डिजिटल साक्षरता' को सिर्फ कंप्यूटर चलाने की क्षमता न मानें, बल्कि इसे तथ्य की सत्यता को परखने की क्षमता से जोड़ें।

'एल्गोरिदम' में ज्ञान के रास्ते को प्रभावित करने का एक और तरीका यह है कि वह हमें ऐसी सामग्री से दूर ले जाता है, जो हमारी सोच को चुनौती दे सकता है। किसी भी स्वस्थ लोकतंत्र में असहमति, मतभेद और विविध विचार बेहद महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मगर सोशल मीडिया ने इस बहस को सुविधा की बहस में बदल दिया है। हम केवल वही पढ़ते हैं, जो हमें 'सुखद' लगता है। संघर्षपूर्ण विचार, चुनौती देने वाली सूचना या असुविधाजनक सच हमसे दूर ले जाया जाता है। भारतीय ज्ञान परंपरा में गुरु की भूमिका केवल सूचना देने की नहीं, बल्कि शिष्य की चेतना को जाग्रत करने की होती थी। मगर आज 'एल्गोरिदम' एक मौन गुरु की तरह काम कर रहा है, जो प्रश्न नहीं, केवल उत्तर देता है; वह भी वही, जो सुविधाजनक हो। यही सबसे गहरी चिंता है। बच्चे परीक्षा की तैयारी के लिए यू-ट्यूब पर पहले से तैयार सारांश खोजते हैं। एक डाक्टर या इंजीनियरिंग का सपना देखने वाला छात्र भी किसी वीडियो को देखकर मान बैठता है कि यही रास्ता सही है। यहां तक कि स्वास्थ्य, इतिहास और विज्ञान जैसे गंभीर विषय भी 'दो मिनट के ज्ञान' में समेट दिए गए हैं।

हमें यह भी समझना होगा कि 'एल्गोरिदम' सिर्फ उपभोक्ता व्यवहार से संचालित नहीं होता; वह निगमित हितों, विज्ञापनों और बाजार विश्लेषण के आधार पर भी काम करता है। किसी उत्पाद, विचार या राजनीतिक एजंडे को बढ़ावा देने के लिए इस मशीनी तंत्र का इस्तेमाल लगातार बढ़ रहा है। इससे जानकारी की निष्पक्षता खत्म होती है और युवा अनजाने में प्रचारित विचारों के वाहक बन जाते हैं। कभी-कभी उन्हें लगता है कि वे नई खोज कर रहे हैं, जबकि वे केवल बाजार या किसी विचारधारा की ओर से परोसे गए तथ्य को दोहरा रहे होते हैं।

सोशल मीडिया अब केवल वैचारिक मंच नहीं, बल्कि हमारी सोच, पसंद और राय को आकार देने वाली शक्ति बन चुका है। इस अत्यधिक सूचना प्रवाह में सच और भ्रम तथा तथ्य और अफवाह के बीच की रेखा धुंधली होती जा रही है। यह परिदृश्य हमें केवल आंकड़ों से नहीं, बल्कि इस चेतावनी से भी अवगत कराता है कि मीडिया साक्षरता, आलोचनात्मक विवेक और तथ्य-जांच के बिना यह डिजिटल शक्ति समाज को सशक्त करने के बजाय दिशाहीन भी कर सकती है। ऐसे दौर में आवश्यक है कि हम 'डिजिटल साक्षरता' को सिर्फ कंप्यूटर चलाने की क्षमता न मानें, बल्कि इसे आलोचनात्मक सोच, स्रोतों की जांच और तथ्य की सत्यता को परखने की क्षमता से जोड़ें। स्कूलों में बच्चों को यह सिखाया जाना चाहिए कि इंटरनेट पर दिखने वाला हर वीडियो ज्ञान नहीं होता और हर खोज का नतीजा सही नहीं होता। उन्हें यह भी समझना होगा कि किसी विषय पर अलग-अलग दृष्टिकोण रखना क्यों जरूरी है।

युवा पीढ़ी में भी यह जागरूकता पैदा करने की जरूरत है कि उनकी सूचना का रास्ता उनके हाथ में नहीं होता, बल्कि किसी मशीन द्वारा नियंत्रित होता है। यह स्वीकार करना ही पहला कदम है। दूसरा कदम है उस नियंत्रण से बाहर निकलने की कोशिश करना। इसका अर्थ यह है कि हम विविध स्रोतों को पढ़ें, अलग-अलग विचार सुनें, किताबों और पत्रिकाओं की ओर लौटें, विशेषज्ञों से संवाद करें और सबसे बढ़कर यह समझें कि 'ज्ञान' और 'सूचना' दो अलग-अलग चीजें हैं। स्क्रीन के उस पार मौजूद दुनिया जितनी आकर्षक है, उतनी ही भ्रामक भी है। ज्ञान की खोज एक यात्रा है, जो धीमी, गहरी और निरंतर चलती है। यदि हमने यह संतुलन नहीं सीखा, तो तकनीक हमारे लिए एक साधन नहीं, बल्कि हमारी सोच को नियंत्रित करने वाली ताकत बनकर रह जाएगी।

चेतना की पाठशाला

रामानुज पाठक

शिक्षा शब्दों का संचय नहीं, बल्कि चेतना का संस्कार है। जो पढ़ा जाए और जीवन में न उतरे, वह ज्ञान नहीं, केवल सूचना बनकर रह जाता है। मनुष्य का विकास पुस्तकों से कम और अनुभवों से अधिक होता है। इसी गहरे सत्य की अभिव्यक्ति है- 'पहले अपनाओ, बाद में पढ़ाओ।' यह कोई भावनात्मक नारा नहीं, बल्कि सीखने की स्वाभाविक, वैज्ञानिक और दार्शनिक प्रक्रिया का संक्षिप्त सूत्र है। जब शिक्षा इस सूत्र से जुड़ती है, तब वह परीक्षा-केंद्रित व्यवस्था से निकलकर जीवन-केंद्रित दृष्टि बन जाती है। मानव मस्तिष्क जन्म से ही सीखने के लिए तत्पर रहता है। वह पहले देखता है, छूता है, सुनता है, गिरता है, संभलता है और फिर शब्दों को अर्थ देता है। शिशु पुस्तक पढ़कर चलना नहीं सीखता, बल्कि बार-बार गिरकर सीखता है। आधुनिक तंत्रिका-विज्ञान भी यही सिद्ध करता है कि जब सीखना प्रत्यक्ष अनुभव से जुड़ा होता है, तब मस्तिष्क में बनने वाले तंत्रिका-संबंध अधिक गहरे और स्थायी होते हैं। केवल सुनी या रटी गई जानकारी स्मृति में अल्पकालिक होती है, जबकि किया गया कार्य चेतना में स्थायी छाप छोड़ता है।

गहरी दृष्टि से शिक्षा आत्मबोध की प्रक्रिया है। ज्ञान का उद्देश्य केवल बाहरी संसार को समझना नहीं, बल्कि स्वयं को पहचानना भी है। जो शिक्षा मनुष्य को प्रश्न पूछने की क्षमता नहीं देती, वह उसे उत्तरों का बोझ ही सौंपती है। जब विद्यार्थी किसी समस्या से स्वयं जूझता है, किसी प्रयोग में असफल होता है और पुनः प्रयास करता है, तब वह केवल विषय नहीं सीखता, बल्कि धैर्य, विवेक और आत्मसंयम भी अर्जित करता है। यही शिक्षा का वास्तविक प्रयोजन है- मनुष्य को भीतर से परिपक्व बनाना।

अध्ययन अनुभव के बाद आता है, ताकि वह जीवन से जुड़ सके। जब विद्यार्थी किसी घटना, प्रयोग या परिस्थिति से होकर गुजर चुका होता है, तब पुस्तक का एक-एक वाक्य अर्थवान हो उठता है। शब्द तब अनुभव की व्याख्या बन जाते हैं। यही कारण है कि पहले अपनाया गया ज्ञान बाद में पढ़े गए सिद्धांतों को गहराई देता है। समकालीन शिक्षा-दृष्टि इस तथ्य को स्वीकार करती है कि प्रत्येक विद्यार्थी समान नहीं होता। किसी की रुचि विज्ञान में होती है, किसी की कला में, किसी की प्रकृति में, तो किसी की समाज में। जब शिक्षा इन भिन्नताओं को नकारती है, तब वह व्यक्ति की प्रतिभा को भी नकार देती है। अनुभव-प्रधान शिक्षा, शिक्षा को एक सांचे में ढालने के बजाय, मनुष्य के भीतर छिपी संभावनाओं को उद्घाटित करती है।

भावनात्मक स्तर पर यह दृष्टि शिक्षा को भय से मुक्त करती है। जब सीखना केवल अंक और परीक्षा का साधन बन जाता है, तब वह तनाव और हीनता को जन्म देता है। इसके विपरीत जब सीखना खोज, प्रयोग और संवाद की प्रक्रिया बनता है, तब आत्मविश्वास स्वतः विकसित होता है। विद्यार्थी गलतियां करने से नहीं डरता, क्योंकि वह जानता है कि भूल भी सीखने का एक चरण है। ऐसी शिक्षा मनुष्य को भीतर से सशक्त बनाती है, न कि केवल प्रतिस्पर्धी। इसमें शिक्षक की भूमिका भी मूलतः बदल जाती है। शिक्षक अब केवल ज्ञान देने वाला नहीं रहता, बल्कि सीखने की यात्रा का सहचर बन जाता है। वह उत्तर थोपने के बजाय प्रश्न जगाता है, निर्देश देने के बजाय दिशा दिखाता है। जब शिक्षक स्वयं सीखने की प्रक्रिया में सहभागी होता है, तब कक्षा एक जीवंत स्थान बनती है। वहां मौन नहीं, संवाद होता है। भय नहीं, जिज्ञासा होती है। शिक्षा तब संबंध बन जाती है, आदेश नहीं।

विज्ञान, दर्शन और अनुभव- इन तीनों का संतुलन ही शिक्षा को पूर्णता देता है। केवल विज्ञान शिक्षा को यांत्रिक बना सकता है, जहां मनुष्य एक उपयोगी साधन भर रह जाता है। केवल दर्शन शिक्षा को अमूर्त बना सकता है, जो व्यवहार से कट जाए। केवल भावना शिक्षा को अस्थिर कर सकती है, जहां गहराई का अभाव हो। जब अनुभव इन तीनों को जोड़ता है, तब शिक्षा मनुष्य को संपूर्ण बनाती है- सोचने में सक्षम, समझने में संवेदनशील और कार्य करने में जिम्मेदार। अनुभव-प्रधान शिक्षा व्यक्ति को केवल ज्ञानी नहीं, उत्तरदायी बनाती है। जब सीखना जीवन की वास्तविक स्थितियों से जुड़ता है, तब ज्ञान नैतिकता से अलग नहीं रह जाता। केवल सूचनाओं से लैस व्यक्ति चतुर हो सकता है, विवेकशील नहीं। विवेक तब विकसित होता है, जब मनुष्य अपने ज्ञान को व्यवहार में परखता है। अनुभव उसे सीमाएं सिखाता है, असफलता विनम्रता देती है और सफलता संयम। ऐसी शिक्षा व्यक्ति के भीतर संतुलन पैदा करती है। वह न तो अति-आत्मकेंद्रित होता है, न ही भीड़ में विलीन। वह सोचता भी है और महसूस भी करता है। यही संतुलन शिक्षा को उपयोगी से आगे बढ़ाकर अर्थपूर्ण बनाता है। जो व्यक्ति अनुभव से सीखता है, वह केवल अपने अधिकार नहीं जानता, अपने दायित्व भी समझता है। वह प्रकृति के साथ संघर्ष नहीं करता, सहअस्तित्व सीखता है। वह समाज को केवल उपयोग की वस्तु नहीं मानता, बल्कि सहभागिता का क्षेत्र समझता है। इस प्रकार शिक्षा केवल व्यक्तिगत उन्नति का नहीं, सामाजिक संतुलन का भी आधार बनती है।

दरअसल, शिक्षा का उद्देश्य आजीविका तक सीमित नहीं हो सकता। रोजगार आवश्यक है, पर वह शिक्षा का अंतिम लक्ष्य नहीं। शिक्षा का लक्ष्य है- दृष्टि का विकास। वह दृष्टि जो सही और गलत में भेद कर सके, जो तात्कालिक लाभ से ऊपर उठकर दीर्घकालिक परिणाम देख सके, जो ज्ञान को शक्ति नहीं, सेवा का माध्यम समझे। पहले अपनाओ, बाद में पढ़ाओ इसी दृष्टि का सार है। जब अनुभव बीज बनता है और अध्ययन उसका विस्तार, तब शिक्षा मनुष्य को केवल कुशल नहीं, विवेकशील भी बनाती है। यही शिक्षा का मौलिक स्वरूप है- जो जीवन से निकलती है, जीवन में उतरती है और जीवन को अर्थ देती है।

दुनिया मेरे आगे

> विज्ञान, दर्शन और अनुभव- इन तीनों का संतुलन ही शिक्षा को पूर्णता देता है। विज्ञान शिक्षा को केवल यांत्रिक बना सकता है, जहां मनुष्य एक उपयोगी साधन भर रह जाता है। सिर्फ दर्शन शिक्षा को अमूर्त बना सकता है, जो व्यवहार से कट जाए। अकेली भावना शिक्षा को ऐसा अस्थिर कर सकती है, जहां गहराई का अभाव हो।

संतुलन की दिशा

उच्च शिक्षण संस्थानों में जातिगत भेदभाव रोकने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के नए नियमों पर रोक लगाना केवल एक कानूनी हस्तक्षेप नहीं, बल्कि सामाजिक संतुलन और शैक्षणिक वातावरण की रक्षा की दिशा में एक अहम कदम है। न्यायालय ने प्रथमदृष्टया यह माना कि नियमों की भाषा अस्पष्ट है और उनकी व्याख्या अलग-अलग ढंग से की जा सकती है, जिससे न केवल उनका दुरुपयोग संभव है, बल्कि शिक्षा संस्थानों में अविश्वास, भय और टकराव का माहौल भी बन सकता है। उच्च शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान, शोध, नवाचार और समान अवसर उपलब्ध कराना है, लेकिन नियम ऐसे हों जो असहमति या प्रशासनिक निर्णय को सीधे जातीय भेदभाव के दायरे में ले आएं, तो इससे शिक्षकों और छात्रों के बीच संवाद के बजाय संदेह की दीवार खड़ी हो जाती है। सुप्रीम कोर्ट की यह टिप्पणी भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि भेदभाव को केवल जाति के चश्मे से देखना समस्या के समाधान के बजाय उसे और जटिल बना सकता है, क्योंकि शिक्षा संस्थानों में भेदभाव के कई रूप हो सकते हैं।

- विभूति बुपक्या, दिल्ली

समावेशी बजट

वर्तमान समय में पूरी दुनिया में उथल-पुथल मची हुई है। दूसरी ओर केंद्र सरकार ने अर्थव्यवस्था को स्थायित्व प्रदान करने के लिए समावेशी बजट पेश किया है। यह वित्तीय विश्वसनीयता बनाए रखने और सुधारों की रफ्तार को जारी रखने की कोशिश है। इस बार बजट में न तो कोई चौंकाने वाली एलान थे, न आयकर दरों में कोई छूट। सरकार ने रोजगार का सृजन करने तथा उत्पादकता और विकास की गति तेज करने की दिशा में कई आर्थिक सुधार किए हैं। इस बजट के जरिए कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों से जूझ रहे मरीजों और उनके परिवारों पर इलाज के खर्च के बोझ को कुछ कम करने की कोशिश की गई है। कैंसर के इलाज में इस्तेमाल होने वाली 17 जीवनरक्षक दवाओं पर सीमा शुल्क पूरी तरह खत्म कर दिया गया है। इसके अलावा प्रत्येक जिले में लड़कियों के लिए छात्रावास के निर्माण की घोषणा भी महत्त्वपूर्ण है।

- युगल किशोर राही, छपरा

स्वास्थ्य की गरिमा

सुप्रीम कोर्ट की ओर से स्कूलों में छात्राओं को निशुल्क सैनिटरी पैड उपलब्ध कराने और मासिक धर्म स्वच्छता को अनिवार्य करने संबंधी निर्देश छात्राओं के लिए एक नई सुबह की तरह है। यह दुखद ही है कि आज भी मासिक धर्म को संकोच, चुप्पी और उपेक्षा के साथ देखा जाता है। अब अदालत ने साफ कह दिया है कि मासिक धर्म कोई बोझ नहीं, बल्कि स्वास्थ्य का मौलिक अधिकार है। यह भी कहा है कि सभी राज्य और केंद्रशासित प्रदेश सुनिश्चित करेंगे कि हर विद्यालय-चाहे वह सरकारी हो या निजी, शहरी हो या ग्रामीण इलाकों में, वहां उपयोग योग्य पानी के साथ अलग-अलग शौचालय उपलब्ध हों। इस फैसले ने न सिर्फ स्कूलों को उनकी जिम्मेदारी का अहसास दिलाया है, बल्कि समाज को भी संदेश दिया है, ताकि लड़कियों और महिलाओं के स्वास्थ्य को लेकर फैली भ्रांतियों को दूर किया जा सके।

- आशुतोष पांडेय, जम्मू

सेहत और सतर्कता

विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रपट के अनुसार, देश में कैंसर के मरीज तेजी से बढ़ रहे हैं। कुछ समय पहले भारत में कैंसर के ग्यारह लाख से ज्यादा नए मामले सामने आए। यह स्थिति चिंताजनक है। अगर इसको लेकर जल्द गंभीरता नहीं दिखाई गई, तो यह देश के लिए बड़ी मुसीबत बन सकता है। यह ऐसी बीमारी है, जिसके बारे में कई बार लोगों को तब पता चलता है, जब यह व्यक्ति को मौत के करीब ले आती है। जो लोग समय-समय पर अपने स्वास्थ्य की जांच कराते रहते हैं, उन्हें शुरुआती दौर में कैंसर के संबंध में जानकारी मिल जाती है और वे समय पर इलाज शुरू करा देते हैं। वैसे तो कैंसर की चपेट में आने के कई कारण हो सकते हैं, लेकिन हम अपना खानपान और जीवनशैली सुधार लें, तो जोखिम को निश्चित रूप से कम किया जा सकता है।

- राजेश कुमार चौहान, जलंधर

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

उधमपुर में दो, किश्तवाड़ में एक आतंकी ढेर

मारे गए आतंकियों में एक की पहचान रुबानी उर्फ अबू मविया के रूप में हुई, जो पिछले कई वर्षों से क्षेत्र में सक्रिय था

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 4 फरवरी।

जम्मू-कश्मीर के उधमपुर जिले में एक गुफा में छिपे जैश-ए-मोहम्मद के एक स्वघोषित शीर्ष कमांडर समेत दो पाकिस्तानी आतंकी बुधवार को सुरक्षा बलों की कार्रवाई में मारे गए। उधर, किश्तवाड़ के ही चतरू इलाके में बुधवार शाम को आतंकियों और सुरक्षा बलों के बीच मुठभेड़ हुई। इसमें भी एक आतंकी को सेना ने मार गिराया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

अधिकारियों ने बताया कि दोपहर के आसपास जब सुरक्षा बलों ने गुफा पर धावा बोला, तो कई जोरदार धमाकों की आवाजें सुनाई दीं। मारे गए आतंकियों में से एक की पहचान रुबानी उर्फ अबू मविया के रूप में हुई, जो पिछले कई वर्षों से क्षेत्र में सक्रिय था। एक आतंकी का शव एक गुफा के पास से बरामद किया गया, जबकि दूसरे का शव गुफा के अंदर मिला। अधिकारियों के अनुसार, मंगलवार शाम लगभग चार बजे रामनगर के जाफड़ वन क्षेत्र में सेना, पुलिस और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के संयुक्त दस्ते ने गुफा के भीतर आतंकियों का पता लगाया, जिसके बाद मुठभेड़ हुई। सेना ने 20 घंटे से अधिक समय तक चले इस अभियान को 'किया' नाम दिया और कहा कि यह अभियान समाप्त हो चुका है, लेकिन इलाका अब भी निगरानी में है। सेना की वाइट नाइट कोर ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा कि पुलिस से मिली पुख्ता खुफिया जानकारी के आधार पर 'काउंटर इंटेलिजेंस फोर्स डेल्टा' और 'वाइट नाइट कोर' के जवानों ने पुलिस तथा सीआरपीएफ के साथ मिलकर बसंतगढ़ के जाफर जंगल में एक संयुक्त आतंकवाद-रोधी अभियान चलाया। इस दौरान घेराबंदी को मजबूत किया गया ताकि आतंकी भाग न सकें।

अधिकारियों के मुताबिक, मारे गए आतंकियों के पास से एक एम4 कार्बाइन और एक एके असाल्ट राइफल सहित भारी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद बरामद किए गए हैं।

पोस्ट में कहा गया कि कल आतंकियों से सामना होने के बाद उन पर कड़ी नजर रखी गई। सुनियोजित और समन्वित कार्रवाई के बाद दो आतंकियों को ढेर कर दिया गया। अधिकारियों ने बताया कि मारे गए आतंकियों के पास से एक एम4 कार्बाइन और एक एके असाल्ट राइफल समेत भारी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद बरामद किए गए हैं। जाफड़, गुजराड़ा और चिगला बलोता के जंगलों में एक घंटे से अधिक समय तक भीषण गोलीबारी और विस्फोट हुए, जिसमें एक आतंकी घायल हो गया, हालांकि वह अपने साथी के साथ गुफा के अंदर चला गया।अधिकारियों के मुताबिक, शाम लगभग साढ़े सात बजे आतंकियों ने अंधेरे का फायदा उठाकर भागने की कोशिश की और इस दौरान इलाके में फिर से गोलीबारी और जोरदार धमाके हुए। इसके बाद घेराबंदी को और मजबूत करने के लिए पैराट्रूपर्स और श्वान दस्ते समेत सेना की अतिरिक्त टुकड़ियों को मौके पर भेजा गया।

उधर, किश्तवाड़ के ही चतरू इलाके में मुठभेड़ में एक आतंकी मारा गया। मुठभेड़ तब शुरू हुई जब सेना और पुलिस की एक संयुक्त टीम चिंगम के जंगल में संजिनाला-दिछर में तलाशी अभियान संचालित कर रही थी। पिछले 18 दिनों में चतरू क्षेत्र में यह पांचवीं मुठभेड़ है, क्योंकि सेना और पुलिस, जैश-ए-मोहम्मद संगठन से जुड़े पाक आतंकियों के एक समूह की तलाश कर रही है।

विपक्ष के लिए कौशल विकास कार्यक्रम चलाया जाए : नड्डा

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 4 फरवरी।

राज्यसभा में बुधवार को सदन के नेता जगत प्रकाश नड्डा ने दावा किया कि विपक्ष 11 वर्ष से अपनी कोई साख नहीं बना पाया है। उन्होंने यह सलाह भी दी कि कौशल विकास मंत्रालय में विपक्ष के लिए एक कौशल विकास कार्यक्रम निशुल्क चलाया जाना चाहिए।

उच्च सदन में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर पेश किए गए धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा में भाग लेते हुए सदन के नेता जेपी नड्डा ने कहा कि यह अभिभाषण अमृतकाल को प्रतिबिंबित करता है और देश की 150 करोड़ लोगों की आशाओं का घोषणापत्र है। उन्होंने कौशल विकास मंत्री जयंत चौधरी को सुझाव दिया कि वेअपने मंत्रालय में विपक्ष के लिए कौशल सिखाने का कार्यक्रम शुरू करें तथा विपक्ष को भाजपा से सीखना चाहिए कि विपक्ष में रहकर कैसे विरोध करते हैं। नड्डा ने कहा कि मैंने (कांग्रेस सांसद) जयराम रमेश को बताया था कि हम 40 वर्ष तक विपक्ष में रहे। विपक्ष का सबसे पहला काम होता है कि वह अपनी साख बनाए। आप (कांग्रेस) 11 वर्ष में साख ही नहीं बना पाए। उन्होंने हंसते हुए मंत्री जयंत चौधरी से कहा कि वह इस कार्यक्रम के लिए कोई फीस नहीं रखें। उन्होंने कांग्रेस की ओर संकेत करते हुए कहा कि यदि आपकी पार्टी कुछ अबोध लोगों की बंधक बन गई है तो हम क्या कर सकते हैं?

नड्डा ने कहा कि पिछली सरकारों ने आतंकवाद के मामले में कुछ नरमी बरती किंतु प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार के तहत भारत ने यह दिखा दिया कि वह घर के भीतर घुसकर मारने से पीछे नहीं रहेगा। आज का भारत 'नए सामान्य' के साथ खड़ा है। उन्होंने उरी एवं पहलगाम हमले के बाद भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा पाकिस्तान के भीतर घुसकर चलाए गए विभिन्न आपरेशन का हवाला दिया। नड्डा कहा कि देश आज अमृतकाल के दूसरे चरण में पहुंच गया है। देश को अगले 25 वर्ष में विकसित भारत के लक्ष्य को पूरा करना है और इस लक्ष्य के लिए तेजी से बदलाव करने के संकेत राष्ट्रपति के अभिभाषण में मिलते हैं। देश ने इस बात को देखा कि कितने विरोध के बावजूद देश में जीएसटी लागू किया गया तथा इसमें लगातार सुधार किए जा रहे हैं।

स्वास्थ्य स्थिति को देखते हुए सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र को दिया निर्देश

सोनम वांगचुक की हिरासत पर पुनर्विचार करें

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 4 फरवरी।

सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को केंद्र सरकार से पूछा कि क्या इस बात की संभावना है कि वह जलवायु कार्यकर्ता सोनम वांगचुक की स्वास्थ्य स्थिति को देखते हुए उनकी हिरासत पर विचार कर सकती है। न्यायमूर्ति अरविंद कुमार और न्यायमूर्ति पीबी वराले की पीठ ने कहा कि वांगचुक की स्वास्थ्य रपट ठीक नहीं है और केंद्र की ओर से पेश अतिरिक्त महाधिवक्ता केएम नटराज को इस मामले में निर्देश लेने चाहिए।

अदालत ने कहा कि दलीलों, जवाबी दलीलों और कानूनी पहलुओं के अलावा अदालत का एक अधिकारी होने के अलावा इस बात पर भी विचार करें। लगभग पांच महीने पहले 26 सितंबर 2025 को हिरासत संबंधी आदेश जारी किया गया था। पीठ ने कहा कि हिरासत में लिए गए व्यक्ति की स्वास्थ्य स्थिति पर विचार करते समय हमने जो रिपोर्ट देखी है, उससे पता चलता है कि उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं है। कुछ आयु संबंधी और कुछ दूसरी समस्याएं हैं। क्या सरकार की ओर से पुनर्विचार किए जाने की कोई संभावना है? नटराज ने कहा कि संबंधित प्राधिकारियों से सुझाव लेंगे।

सुनवाई के दौरान अतिरिक्त महाधिवक्ता ने कहा कि वांगचुक पिछले साल लेह में हुई हिंसा के लिए जिम्मेदार हैं, जिसमें चार लोगों की मौत हुई और 161 लोग घायल हुए। अंततः उनके भड़काऊ भाषण, उकसावे के कारण यह सब हुआ। व्यक्ति का सक्रिय रूप से भाग लेना आवश्यक नहीं होता, व्यक्तियों के समूह को प्रभावित करना ही पर्याप्त होता है। वांगचुक के हिरासत आदेश को तीन अक्टूबर 2025 को मंजूरी दी गई और मंजूरी के आदेश को कोई चुनौती नहीं दी गई। अदालत में दलीलें पेश की जानी गुरुवार को भी जारी रहेंगी।

शीर्ष अदालत रासुका जैसे कठोर कानून के तहत वांगचुक की हिरासत के खिलाफ दायर उनकी पत्नी गीतांजलि जे आंगमों की याचिका पर सुनवाई कर रही है। लद्दाख को राज्य का दर्जा देने और छठी अनुसूची में शामिल करने की मांग को लेकर हुए हिंसक विरोध प्रदर्शनों में चार लोगों की मौत होने के दो दिन बाद 26 सितंबर को वांगचुक को हिरासत में लिया गया था।

समारोह
मणिपुर के राज्यपाल अजय भल्ला ने इंफल के लोकभवन में बुधवार को खेमचंद सिंह को शपथ लेने के बाद बधाई दी।

तुर्की एअरलाइंस का विमान आपात स्थिति में उतरा

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 4 फरवरी।

तुर्की एअरलाइंस के एक विमान के इंजन में खराबी आने के बाद विमान ने कोलकाता हवाई अड्डे पर आपात परिस्थितियों में उतरा। केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने एक बयान में यह जानकारी दी। मंत्रालय की ओर से जारी बयान के मुताबिक, पायलट ने विमान के दाहिने इंजन में आग लगने की सूचना दी थी। यह उड़ान काठमांडू से तुर्किये के इस्तांबुल जा रही थी।

बयान के मुताबिक, उड़ान संख्या टीएचवाई-727 वाला एयरबस ए330-300 विमान अपराह्न करीब 1:15 बजे काठमांडू के त्रिभुवन अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से चालक दल के 11 सदस्यों सहित 236 यात्रियों को लेकर रवाना हुआ। एक अधिकारी ने बताया कि पायलट ने उड़ान भरने के दौरान विमान के दो इंजनों में से एक में खराबी की सूचना दी थी। नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि विमान ने दाहिने इंजन में आग लगने के कारण अंतरराष्ट्रीय रेडियो संकट संकेत (पैन पैन) जारी किया और अपराह्न 1:38 बजे एक इंजन की खराबी के कारण कोलकाता की ओर जाने देने का अनुरोध किया। मंत्रालय के बयान में कहा गया है कि विमान ने पूरी आपातकालीन स्थिति में यहां नेताजी सुभाष चंद्र बोस अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरा और इंजन में लगी आग पर अपराह्न 1:51 बजे तक काबू पा लिया गया। इसमें कहा गया है कि उड़ान के दौरान ही विमान में लगी आग पर काबू पा लिया गया था। हवाई अड्डे के अधिकारियों ने बताया कि यात्रियों के घायल होने की सूचना नहीं है। हवाई अड्डे के एक अधिकारी ने बताया कि आधुनिक मल्टी-इंजन जेट विमानों को केवल एक इंजन के संचालन के साथ सुरक्षित रूप से उड़ान भरने और उतरने के लिए तैयार किया गया है।

प्रधानमंत्री मोदी दो दिवसीय यात्रा पर सात फरवरी को मलेशिया जाएंगे

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 4 फरवरी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार से मलेशिया की दो-दिवसीय यात्रा पर जाएंगे, जिसका मकसद व्यापार, निवेश, ऊर्जा और समुद्री सुरक्षा के क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करना है। विदेश मंत्रालय ने बुधवार को यह जानकारी दी।

यह प्रधानमंत्री मोदी की मलेशिया की तीसरी यात्रा होगी और अगस्त 2024 में भारत-मलेशिया द्विपक्षीय संबंधों को व्यापक रणनीतिक साझेदारी में बदले जाने के बाद यह उनकी पहली यात्रा होगी। विदेश मंत्रालय ने कहा कि इस यात्रा के दौरान मोदी मलेशिया के प्रधानमंत्री अनवर इब्राहिम के साथ द्विपक्षीय वार्ता करेंगे। उसने कहा कि मोदी भारतीय समुदाय के सदस्यों के साथ-साथ उद्योग जगत के प्रतिनिधियों से भी संवाद करेंगे। प्रधानमंत्री की यात्रा के दौरान 10वां भारत-मलेशिया सीईओ मंच भी आयोजित होगा।

विदेश मंत्रालय ने कहा कि भारत और मलेशिया के बीच ऐतिहासिक, सभ्यतागत और सांस्कृतिक संबंधों पर आधारित पुराने संबंध हैं। मंत्रालय ने कहा कि मलेशिया में 29 लाख भारतीय समुदाय की मौजूदगी से यह रिश्ता और मजबूत होता है, जो दुनिया में भारतीय समुदाय की तीसरी सबसे बड़ी मौजदूगी है।

खेमचंद ने मणिपुर के मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ली

शपथ ग्रहण से थोड़ी देर पहले राष्ट्रपति शासन हटाने की अधिसूचना जारी की गई

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 4 फरवरी।

भाजपा नेता युमनाम खेमचंद सिंह ने बुधवार को मणिपुर के मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ली। राज्यपाल अजय कुमार भल्ला ने 62 वर्षीय सिंह को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई।

कुकी समुदाय से ताल्लुक रखने वालीं भाजपा विधायक नेमचा किपगेन और नगा पीपुल्स फ्रंट के विधायक एल डिखो ने उपमुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ली, जो इस राज्य में संतुलन बनाने और लोगों तक पहुंचने की एक कोशिश लगती है। किपगेन ने नई दिल्ली स्थित मणिपुर भवन से आनलाइन माध्यम से शपथ ली। भाजपा के गोविंदास कोंथौजम व एनपीपी नेता के लोकेन सिंह ने भी मंत्री पद की शपथ ली। अशांत मणिपुर पिछले साल फरवरी से

कुकी समुदाय से ताल्लुक रखने वालीं भाजपा विधायक नेमचा किपगेन और नगा पीपुल्स फ्रंट (एनपीएफ) के विधायक एल डिखो ने मणिपुर के उप मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ली।

राष्ट्रपति शासन के अधीन था। राज्य में 356 दिन बाद राष्ट्रपति शासन हटाया गया। किपगेन उन दो कुकी मंत्रियों में से एक थीं जो राज्य में संघर्ष शुरू होने के दौरान एन बीरेन सिंह के मंत्रिमंडल का हिस्सा थीं और इस्तीफा देने तक उस पद पर बनी रहीं। उन्होंने बाकी कुकी विधायकों के साथ बीरेन की सरकार के साथ जुड़ने से इनकार कर दिया था और इफंल में सरकारी प्रक्रियाओं से दूर रही थीं। एल डिखो तीन बार विधायक रह चुके है और पहली बीरेन सिंह सरकार में मंत्री थे।

चुराचांदपुर स्थित कुकी काउंसिल ने बुधवार को एक बयान में कहा कि 'कुकी लोगों के लिए ऐसी सरकार में शामिल होना न तो तार्किक है और न ही स्वीकार्य, जिससे हम हिंसा की वजह से अलग हो गए थे। मणिपुर में राष्ट्रपति शासन हटाए जाने के कुछ घंटों बाद इफंल लोक भवन में शपथ ग्रहण समारोह हुआ।

सिंह को मंगलवार को दिल्ली में भाजपा और उसके बाद राजग विधायक दल का नेता चुना गया। पिछले वर्ष नौ फरवरी को मैतेई और कुकी समुदायों के बीच महीनों तक जारी रही जातीय हिंसा के बाद बीरेन सिंह के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार ने इस्तीफे दे दिया था, जिसके बाद मणिपुर में राष्ट्रपति शासन लगाया गया था। मणिपुर में तब से, इस हिंसा में कुकी और मैतेई दोनों समुदायों के सदस्यों के साथ-साथ सुरक्षाकर्मियों सहित 260 लोग मारे गए हैं, जबकि हजारों लोग बेघर हुए हैं।

पेज 1 का बाकी

खेल-खेल में बारूद की पहचान करना सीखते हैं कुत्ते

पहचान करने में माहिर हो जाता है। प्रशिक्षण के दौरान कुत्तों को शारीरिक रूप से भी तैयार किया जाता है। उन्हें अलग-अलग सतहों पर चलने, संतुलन बनाए रखने और बाधाओं को पार करने का अभ्यास कराया जाता है, ताकि वे मुश्किल और जोखिम भरी परिस्थितियों में भी काम कर सकें। रेमो की ट्रेनिंग का सबसे कठिन हिस्सा उसे 'साइलेंट इंडिकेशन' सिखाना था।

जवान ने बताया, 'अगर कुत्ता विस्फोटक देखकर भौंकने लगे, तो आवाज की तरंगों से कुछ संवेदनशील बम फट सकते हैं। इसलिए कुत्तों को सिखाया जाता है कि गंध मिलते ही वह चुपचाप वहां बैठ जाएं। उन्हें यह सिखाया जाता है कि वे बम से निर्धारित दूरी पर बैठें। उनके बैठने से हैंडलर को संकेत मिल जाता है कि वहां बम हो सकता है।' कुत्ता इस दुनिया का सबसे वफादार प्राणी है। एक बार यदि उसके मालिक ने आदेश दे दिया कि तो वह अपना टास्क पूरा करके ही मानेगा। यही कारण है कि कुत्ते लगभग 99 फीसद मामलों में सफल होते है।' उन्होंने कहा, 'कुत्ता यह नहीं जानता कि वह बारूद या विस्फोटक सामग्री की पहचान कर रहा है। उसके लिए यह महज एक खेल है।

आदेश मिलने पर वह उसी गंध को खोजता है, जिसकी ट्रेनिंग उसे दी गई होती है।' आइटीबीपी में विस्फोटक की पहचान के लिए बेल्जियम मेलिनोइस नस्ल के कुत्तों को प्राथमिकता दी जाती है। यह नस्ल बेहद फुर्तीली होती है, इसलिए कठिन परिस्थितियों और लंबे आपरेशन के लिए इन्हें उपयुक्त माना जाता है। पहले लैब्राडोर नस्ल के कुत्तों का भी इस्तेमाल किया जाता था, लेकिन फील्ड ड्यूटी में बेल्जियम मेलिनोइस ज्यादा प्रभावी साबित हुए हैं।' हालांकि, अब देशी नस्ल के कुत्तों को भी सेना में शामिल किया जा रहा है। अगर कोई कुत्ता उम्र या स्वास्थ्य संबंधी कारणों से ड्यूटी करने में असमर्थ नजर आता है तो चिकित्सीय परीक्षण के बाद उसे सेवानिवृत्त कर, कुत्तों के लिए समर्पित स्थान पर रखा जाता है।

पुनरीक्षण में काटे जा रहे हैं मतदाताओं के नाम

सीट पर बैठ गईं। एक वकील ने उनसे आगे जाने का अनुरोध किया। इस पर ममता ने विनम्रता से कहा, आप लोग मेरी आंख और कान हैं। मुझे आपके माध्यम से सब पता चलेगा चलता रहेगा। पीठ ने सूची के अनुसार सुनवाई शुरू कर दी। ममता पूरे धैर्य से अपने मामले की प्रतीक्षा में अदालत में बैठी रहीं। बीच में एक बार वह सुप्रीम कोर्ट के सबसे बड़े प्रशासनिक अधिकारी सेक्रेटरी जनरल के कमरे में चाय पीने के लिए गईं। दोपहर लगभग 1:05 बजे बंगाल मामले की सुनवाई शुरू हुई।

ममता बनर्जी की तरफ से वरिष्ठ वकील श्याम दीवान ने पीठ को बताया कि 19 जनवरी को अदालत ने लाजिकल डिस्क्रिपेंसी (तार्किक विसंगति) श्रेणी में आए लोगों को दस्तावेज जमा करने और चुनाव आयोग के अधिकारियों के पास बात रखने के लिए 10 दिन का अतिरिक्त समय दिया था। यह अवधि चार दिन में पूरी हो रही है। अभी लगभग 68 लाख लोग ऐसे हैं, जिन्हें सुनवाई का मौका नहीं मिला है। इसके बाद ममता बनर्जी ने जजों से अनुरोध किया कि उन्हें बोलने दिया जाए। प्रधान न्यायाधीश ने ममता से कहा, इस मामले में 19 तारीख को कपिल सिब्बल जैसे प्रसिद्ध वकील पेश हुए थे। आज आपके लिए श्याम दीवान जैसे योग्य वकील पेश हो रहे हैं। ये वकील बेहतर तरीके से आपका पक्ष रख सकते हैं।

प्रधान न्यायाधीश की बात पर ममता बनर्जी ने कहा, 'मैं बंगाल से हूं। वहां की स्थानीय परिस्थितियों को समझती हूं। इसलिए कोर्ट के प्रति पूरे सम्मान के साथ कुछ बातें रखना चाहती हूं। मैं अपनी लड़ाई नहीं लड़ रही हूं। लाखों-करोड़ों आम लोगों से जुड़ा मामला लेकर यहां पर आई हूं। मैंने चुनाव आयोग को छह पत्र लिखे। अगर वह मेरी बातों को गंभीरता से लेते हुए समाधान करते तो मुझे यहां नहीं आना पड़ता।' ममता ने कहा, बंगाल को निशाना बनाया जा रहा है। असम समेत कई राज्यों में चुनाव हैं। लेकिन वहां एसआइआर नहीं हो रहा है। बंगाल में एसआइआर सिर्फ मतदाताओं का नाम मिटाने के लिए किया जा रहा है। अगर किसी बेटी ने शादी के बाद अपने पति का उपनाम लगाना शुरू कर दिया है, तो उसे भी नाम का मिलान नहीं हुआ वाली श्रेणी में डालकर नोटिस भेज दिया गया है। ममता ने कहा कि लगभग 70 लाख लोग ऐसे हैं जो 'नेम मिसमैच' श्रेणी में है। प्रधान न्यायाधीश ने कहा, हम यह समझ सकते हैं। आपका इस विषय को उठाने के लिए धन्यवाद। चुनाव आयोग को इसे देखना चाहिए। इस बीच चुनाव आयोग के लिए पेश एक वकील ने सुनवाई टालने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि उन्हें याचिका की कापी अभी नहीं मिली है। चुनाव आयोग को समय दिया जाए।

ममता बनर्जी ने उनकी बात काटते हुए जजों से अनुरोध किया कि उन्हें अपनी बात को पूरा करने का अवसर दिया जाए।ममता ने राज्य में माइक्रो आब्जर्वर की नियुक्ति पर आपत्ति जताई। उन्होंने कहा, -सिर्फ पश्चिम बंगाल में माइक्रो आब्जर्वर नियुक्त किए गए हैं। दूसरे राज्यों से बुलाकर माइक्रो आब्जर्वर नियुक्त किए गए। इसका विरोध करते हुए चुनाव आयोग के लिए पेश वरिष्ठ वकील राकेश द्विवेदी ने कहा, कानून में इसकी व्यवस्था है। अगर राज्य सहयोग न करे तो चुनाव आयोग को बाहर से अधिकारी बुलाने पड़ते हैं। हमने क्लास दो अधिकारी मांगे थे, जो नहीं दिए गए।अपनी बात पूरी कर पाने का मौका न मिलने की आशंका को देखते हुए ममता ने कहा कि उन्हें पांच मिनट बोलने का मौका दिया जाए।

इस पर प्रधान न्यायाधीश ने कहा, हम आपको पांच नहीं, 15 मिनट का समय देंगे। इसमें कोई समस्या नहीं है। हम सब चाहते हैं कि किसी भी योग्य मतदाता का नाम सूची से बाहर न हो।जजों ने कहा कि चुनाव आयोग जवाब के लिए समय मांग रहा है। ममता के वकील याचिका की कापी चुनाव आयोग के वकील को दे दें। सोमवार को आयोग इस पर पक्ष रखे। अगर जरूरी हुआ तो एसआइआर का समय बढ़ाया जा सकता है। इसके बाद ममता ने कहा कि उनकी आखिरी दलील यह है कि लाजिकल डिस्क्रिपेंसी वाले लोगों के नाम सूची से नहीं हटाए जाने चाहिए।

सदन में विपक्ष के भारी हंगामे के कारण प्रधानमंत्री का जवाब स्थगित

मिलने और आठ विपक्षी सदस्यों के निलंबन के मुद्दे पर गतिरोध की स्थिति बनी हुई है। लोकसभा में धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा का जवाब बुधवार शाम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए जाने की संभावना से जुड़ी खबरों के बीच, पांच बजे सदन की बैठक दिनभर के लिए स्थगित कर दी गई। इससे पहले दो बजे सदन की कार्यवाही के दौरान भाजपा के सांसद निशिकांत दुबे ने लोकसभा में कुछ किताबों का जिक्र करते हुए पंडित जवाहरलाल नेहरू और कांग्रेस नेताओं पर निशाना साधा।

इस मुद्दे पर विपक्षी सदस्यों के हंगामे के कारण भी सदन की कार्यवाही एक बार स्थगित करनी पड़ी। सुबह 11 बजे सदन की बैठक शुरू होते ही लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने प्रश्नकाल शुरू कराया। इस दौरान, विपक्ष के सदस्य हंगामा करने लगे। अध्यक्ष बिरला ने विपक्षी सदस्यों से प्रश्नकाल चलने देने का आग्रह किया। शोर-शराबा नहीं थमने पर उन्होंने पांच मिनट बाद ही बैठक दोपहर 12 बजे तक स्थगित कर दी। सदन की कार्यवाही दोबारा शुरू हुई तो वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने विपक्षी सदस्यों की नारेबाजी के बीच, भारत-अमेरिका व्यापार समझौते पर वक्तव्य पढ़ा। बिरला ने इस दौरान आसन के समीप और सत्तापक्ष की पंक्तियों के सामने आकर नारेबाजी कर रहे विपक्षी सदस्यों के प्रति नाराजगी जताई।

कांग्रेस सदस्यों के हाथों में पूर्व सेना प्रमुख और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की तस्वीर वाले पोस्टर थे, वहीं राहुल गांधी सदन में एक किताब हाथ में लिए हुए दिखे। हंगामा नहीं थमने पर बिरला ने कुछ देर बाद ही सदन की कार्यवाही दोपहर बाद दो बजे तक के लिए स्थगित कर दी। बैठक फिर से शुरू हुई तो पीठासीन सभापति कृष्णा प्रसाद तेन्नेटी ने राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव संबंधी चर्चा शुरू कराई। तेदेपा के सांसद जीएम हरीश बालयोगी ने विपक्ष के हंगामे के बीच ही चर्चा में भाग लिया, जिसके बाद भाजपा सांसद निशिकांत दुबे का नाम पुकारा गया। दुबे ने कुछ किताबों का जिक्र करते हुए प्रथम प्रधानमंत्री और नेहरू-गांधी परिवार पर निशाना साधा और उन पर भ्रष्टाचार में लिप्त रहने का आरोप लगाया।

उन्होंने कहा कि राहुल गांधी एक अप्रकाशित पुस्तक की बात कर रहे हैं, लेकिन वह गांधी-नेहरू परिवार की सच्चाई सामने लाने के लिए कई किताबें लाए हैं। पीठासीन सभापति तेन्नेटी ने किसी पुस्तक या पत्र का उल्लेख नहीं करने संबंधी नियम का हवाला देते हुए अध्यक्ष ओम बिरला के निर्देश का उल्लेख किया और दुबे को सदन में किताबें नहीं दिखाने को कहा। उन्होंने नियम 349 का हवाला दिया जो सदस्यों को ऐसी कोई पुस्तक, अखबार या पत्र को पढ़ने से रोकता है जिसका सदन के कामकाज से लेनादेना नहीं है। हालांकि, भाजपा सांसद किताबों को दिखाते हुए उनके लेखकों और उनमें लिखी सामग्री के बारे में टिप्पणी करते रहे। दुबे के बयानों को लेकर विपक्षी सदस्यों ने हंगामा किया और कुछ सदस्यों को आसन के सामने कागज उछालते हुए भी देखा गया। हंगामा बढ़ने पर पीठासीन सभापति ने कार्यवाही शाम पांच बजे तक स्थगित कर दी।

शाम पांच बजे सदन की बैठक फिर से शुरू हुई तो पीठासीन सभापति संध्या राय ने धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा में भाग लेने को भाजपा सांसद पीपी चौधरी का नाम पुकारा। हालांकि, विपक्षी सदस्यों के शोर-शराबे के बीच उन्होंने बैठक को दिनभर के लिए स्थगित कर दिया। मंगलवार को सदन की अवमानना व महासचिव तथा लोकसभा अधिकारियों की मेजों के पास आकर आसन की गरिमा को ठेस पहुंचाने के लिए कांग्रेस के सात और एक माकपा सांसद को वर्तमान सत्र की शेष अवधि के लिए निलंबित कर दिया गया।

समझौता ऐतिहासिक : गोयल, ट्रंप का बताना अपमान : खरगे

रूप देने के लिए मिलकर काम करेंगे। 140 करोड़ भारतीयों की आवश्यकताओं की सुरक्षा करना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। देश को विकसित बनाने के पथ पर आगे बढ़ने के लिए ऊर्जा, विमानन, डेटा केंद्र और परमाणु ऊर्जा समेत विभिन्न क्षेत्रों में अपनी क्षमता बढ़ाने की आवश्यकता होगी और अमेरिका इन क्षेत्रों में अग्रणी देश है।

वहीं, खरगे ने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने देश के किसानों के हितों के साथ समझौता किया है। उच्च सदन में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा के दौरान उन्होंने भारत-अमेरिका समझौते का जिक्र करते हुए कहा कि यह पूरी तरह से किसान विरोधी है और इससे भारतीय किसान तबाह हो जाएंगे। समझौते के संबंध में अमेरिका के कृषि मंत्री ने कहा है कि इस समझौते से अमेरिकी किसानों को फायदा होगा। कांग्रेस नेता ने आरोप लगाया कि राजग सरकार किसानों की आय दोगुनी करने की बात कर रही थी, लेकिन वह वास्तव में किसानों के खिलाफ काम कर रही है। उन्होंने हाल में ट्रंप द्वारा की गई विभिन्न टिप्पणियों का हवाला देते हुए कहा कि यह भारत की संप्रभुता पर हमला है।

कांग्रेस अध्यक्ष खरगे ने मोदी सरकार की विदेश नीति को विफल करार देते हुए कहा कि भारत के पड़ोसी देश नेपाल और चीन आपस में मिल रहे हैं और नेपाल विभिन्न स्थानों को अपना बता रहा है, वहीं चीन भी कुछ क्षेत्रों पर अपना दावा कर रहा है। 1971 के बाद पहली बार बांग्लादेश, चीन और पाकिस्तान करीब आ रहे हैं तथा बांग्लादेश में हिन्दुओं पर अत्याचार हो रहे हैं, लेकिन सरकार ने कोई कदम नहीं उठाया। खरगे ने कहा कि गुजरात, प्रधानमंत्री मोदी, गृह मंत्री अमित शाह का गृह प्रदेश है, फिर भी वहां एक उद्योगपति के बंदरगाहों पर इतनी मात्रा में मादक पदार्थ जब्त किए जा रहे हैं।

प्रेरणा

हमेशा खुश रहना ही सौंदर्य बढ़ाने का सर्वश्रेष्ठ तरीका है। - चार्ल्स डिकेंस

संपादकीय

कानून ऐसे हों, जो धरातल पर अमल में लाए जा सकें

शिक्षा और खाद्य सुरक्षा प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अलग-अलग समय और रास्तों से मौलिक अधिकार तो बने लेकिन क्या इनका वास्तविक लाभ आम नागरिकों को मिला? शिक्षा महंगी और निजी हाथों में जाती रही जबकि खाद्य सुरक्षा कुछ किलो मुफ्त अनाज तक सीमित हो गई। वर्तमान सरकार मनरेगा के बाद इन दोनों कानूनों में बदलाव लाकर इन्हें समयबद्ध तरीके से अमल में लाना चाहती है। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि समानता स्कूलों से शुरू होती है। कोर्ट के एक फैसले के बाद ही 2002 में संविधान संशोधन करके शिक्षा को मौलिक अधिकार बनाने के लिए अनुच्छेद 21(अ) जोड़ा गया और 2009 में शिक्षा का अधिकार कानून आया। खाद्य सुरक्षा को भी कोर्ट ने जीवन के अधिकार का अभिन्न अंग माना और यूपीए सरकार ने 2013 में इसे कानूनी जामा पहनाया। लेकिन क्या वास्तव में एक गरीब का बच्चा आज वही शिक्षा पा रहा है, जो किसी उच्च वर्ग के बच्चे को मिल रही है? क्या यह सच नहीं कि आज भी कुपोषण देश के लिए बड़ी समस्या है और केवल मुफ्त अनाज इसका हल नहीं है? सरकार का मानना है कि इन कानूनों में बदलाव करके इन्हें सबके लिए सुलभ करने का समयबद्ध खाका होना चाहिए। दूसरा, क्रियान्वयन की रियल टाइम मॉनिटरिंग डिजिटल प्रक्रिया से हो। और तीसरा, योजना भले सबके लिए हो लेकिन उससे लाभान्वित होने वाले लोगों को प्राथमिकता से चिह्नित किया जाए। कानून ऐसे होने चाहिए, जिन्हें अमल में लाना राज्यसत्ता के लिए बाध्यकारी हो।

जीने की राह

पं. विजयशंकर मेहता
humarehanuman@gmail.com

साथ भोजन करने से शांति व प्रेम का माहौल बनता है

जीवन में अशांति आने के अनेक रास्ते हैं, पर शांति के मार्ग सीमित हैं। उनमें से एक है- भोजन। अन्न भी हमें बहुत शांति पहुंचा सकता है। भोजन का संबंध तीन बातों से है- बनाना, परोसना, खाना। और यदि ये ठीक हों तो पचाना आसान है। अन्न की ये तीनों प्रक्रियाएं मनुष्य को शांत कर सकती हैं। अब तो मनोवैज्ञानिकों ने भी मान लिया है कि साथ बैठकर जो लोग भोजन करते हैं, उनके परिवारों में शांति और प्रेम का वातावरण बनता ही है। नए प्रयोग इस बात के हो रहे हैं- जिसको वेल बीइंग थ्रू कुकिंग कहते हैं- कि यदि कोई एक-दो सदस्य भोजन बना रहे हों तो दो-चार को और उसमें जुट जाना चाहिए। बनाते हुए भोजन को जितने हाथों का साथ मिलेगा, भोजन में उतना ही आनंद आएगा। आज एकल खाने की वृत्ति बढ़ गई है। लेकिन सिंगल डाइनर्स आगे जाकर अपने को अशांत पाएंगे। हमारे यहां सभी धार्मिक अनुष्ठानों में इसीलिए अन्न का बड़ा महत्व बताया है। वैसे आजकल अनुष्ठानों की बनावट बड़ी जटिल है और आयोजनों की सजावट कुटिल है। ऐसे में कम से कम घर में तो अन्न देवता का मान करें।

•Facebook:Pt. Vijayshankar Mehta

पाठकों के पत्र

दीर्घकालिक सुधारों पर जोर

बजट में विकास, कल्याण और वित्तीय अनुशासन को महत्व दिया गया है। आयकर स्लैब में बदलाव नहीं होने से धारणा बनी है कि वेतनभोगियों को राहत नहीं दी गई। किसानों को भी एमएसपी और प्रत्यक्ष आय सहायता में बढ़ोतरी की उम्मीद थी। लेकिन बजट में तात्कालिक राहत के बजाय संरचनात्मक सुधारों पर जोर रहा है। आलोचकों के अनुसार बजट दीर्घकालिक विकास की दिशा में है, लेकिन अल्पकालिक आकांक्षाओं को संबोधित नहीं कर पाया। -समीक्षा मिश्रा, जम्मू

बच्चों में बढ़ रही हिंसक प्रवृत्ति

इंटरनेट का बढ़ता उपयोग आज बच्चों में हिंसक प्रवृत्ति और असामाजिकता को बढ़ावा दे रहा है। किशोर गंभीर अपराधों में लिप्त पाए जा रहे हैं। संयुक्त परिवारों का अभाव और अकेलापन भी इस समस्या का प्रमुख कारण है। अमेरिका में अभिभावकों को लेकर किए गए एक अध्ययन में 77 फीसदी पैरेंट्स ने कहा कि स्कूलों में शैक्षणिक कौशल के साथ ही बच्चों को चरित्र निर्माण की शिक्षा भी दी जानी चाहिए। -साजिद अली, इंदौर, मध्य प्रदेश

नौकरी न मिलने से निराश हो रहे अभ्यर्थी

कई स्टूडेंट्स सालों से कॉम्पिटिटिव एग्जाम्स दे रहे हैं, लेकिन नौकरी न मिलने से निराश हैं। महानगरों में ये विद्यार्थी होस्टल या कमरों में रहते हैं। गांव के इलाकों के पैरेंट्स हर महीने इन्हें पैसे भेजते हैं, लेकिन अगर कई सालों तक परिश्रम देने के बाद भी इन्हें सफलता नहीं मिलती तो वे क्या करें? कई अभ्यर्थी तो अपने सपने छोड़कर निजी कंपनियों में काम करने लगे हैं। -प्र.मु.काळे, नासिक, महाराष्ट्र

परिवारवाद पर दोहरा मानदंड क्यों?

महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम अजित पवार की विमान हादसे में मृत्यु के बाद उनकी पत्नी को उप मुख्यमंत्री बनाया जाना तो ठीक है। लेकिन क्या यह परिवारवाद को बढ़ावा नहीं देता? प्रधानमंत्री अक्सर कांग्रेस पर परिवारवाद को बढ़ावा देने का आरोप लगाते हैं। मुख्य विपक्षी दल को खूब कोसा भी जाता है। लेकिन यही काम उनकी सरकार का सहयोगी दल करता है तो सब ठीक है। ऐसा दोहरा मानदंड क्यों? -अनिल तलवाड़, लुधियाना, पंजाब

आप अपने पत्र editpage@dbcorp.in पर भेज सकते हैं

क्या आप जानते हैं

जापान के शिनजुकु स्टेशन से रोजाना गुजरते हैं 38 लाख यात्री

जापान की राजधानी टोक्यो में स्थित शिनजुकु रेलवे स्टेशन दुनिया का सबसे व्यस्त रेलवे स्टेशन है। इस स्टेशन से होकर रोजाना औसतन 35 से 38 लाख लोगों का आवागमन होता है। यह मेट्रो, शहरी रेल और उपनगरीय रेल सेवा का हब है। जमीन के ऊपर और नीचे 5 से 8 तलों में स्टेशन संबंधी कार्यालय, प्लेटफॉर्म, मॉल और भूमिगत पैदल मार्ग बने हुए हैं, जिससे यह स्टेशन एक पूरे शहर जैसा प्रतीत होता है। 2022 में इसे विश्व के सबसे व्यस्त रेलवे स्टेशन के तौर पर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया।

200 दरवाजे यात्रियों के आने-जाने के लिए बने हैं शिनजुकु स्टेशन पर। यहां 36 प्लेटफॉर्मों से ट्रेनें संचालित होती हैं।

विश्लेषण • अप्रैल-मई में तमिलनाडु में होने जा रहे चुनाव राष्ट्रीय राजनीति के लिए मायने रखते हैं

दक्षिण की राजनीति पर भी नजर बनाए रखें

सियासत

शीला भट्ट
वरिष्ठ पत्रकार
sheelabhatt@gmail.com

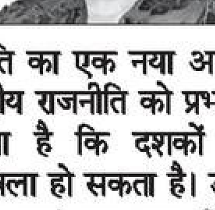

तमिलनाडु में क्षेत्रीय राजनीति का एक नया अध्याय शुरू होने जा रहा है, जो राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित करेगा। जानकारों का मानना है कि दशकों बाद तमिलनाडु में त्रिकोणीय मुकाबला हो सकता है। उससे भी बड़ा अचम्भा ये है कि वहां इस बार त्रिशंकु विधानसभा की संभावनाएं भी बन रही हैं। दक्षिण भारत के इस महत्वपूर्ण राज्य में राजनीति के मूलभूत आयाम बदल रहे हैं। इस बार के चुनाव सिर्फ हिंदी बनाम तमिल और उत्तर विरुद्ध दक्षिण के ही नहीं हैं। ये चुनाव सिर्फ तमिल संस्कृति की रक्षा वाले भी नहीं होंगे। ये तमिलनाडु के मिजाज को बदलने वाले होंगे। अभी इस बाजी में पूरे पत्ते खुले नहीं हैं। लेकिन मुकाबला बहुत दिलचस्प हो गया है।

विधानसभा की 234 सीटों में सत्तारूढ़ द्रमुक के पास 133 सीटें हैं। द्रमुक मुख्यमंत्री एमके स्टालिन के खिलाफ अन्य सभी दल कुछ न कुछ ऐसा मोर्चा बांध रहे हैं कि इस बार का चुनाव उन सभी के लिए संपूर्णतः द्रमुक को हराने का चुनाव बन गया है। वैसे तो तमिलनाडु में कई साल से द्रमुक के सामने अन्नाद्रमुक मैदान में होती है। मुकाबला इन दो द्रविड़-पार्टियों में ही होता रहा है। पर्सनैलिटी-कल्ट आधारित राजनीति तमिलनाडु की पहचान रही है। अन्नादुरै, एमजी रामचंद्रन, करुणानिधि और जयललिता जैसे महारथियों को तमिल जनता ने अवर्णनीय श्रद्धा से अपना बनाया था।

लेकिन आज तमिलनाडु में उनके बराबर का कोई स्थापित नेता नहीं है। ऐसा नेता जो अपने पक्ष से भी बड़ा हो और तमिल संस्कृति का रुआबदार संरक्षक भी हो। खासकर जयललिता के बाद अन्नाद्रमुक के पास उनके कद का कोई दिग्गज नेता नहीं रह गया है और पार्टी के सीनियर नेताओं में मतभेद बहुत बढ़ गया है। उसके कारण द्रमुक के खिलाफ बन रहे माहौल का वो सही लाभ उठा नहीं पा रही है।

भाजपा- जो द्रविड़ भूमि में अपनी जड़ें डालने की कोशिश कर रही है- के पास भी न करिश्माई नेता हैं, न द्रविड़ रणनीति समझने वाले तमिलभाषी महारथी हैं। शायद उनको ऐसा व्यक्तित्व चाहिए भी नहीं, जिसका कद पार्टी और उसकी विचारधारा से बड़ा हो। भाजपा इस चुनाव में सिर्फ एक ही मकसद से लड़ रही है- कुछ भी हो जाए द्रमुक को हराना है। तमिलनाडु में कांग्रेस पूरी तरह से द्रमुक की छाया में ही पनपती रही है। वो लोकसभा चुनाव में तमिलनाडु से नौ सीटें जीत पाई थी। अगर द्रमुक तमिलनाडु में हारती है तो केंद्र में कांग्रेस की आज जो स्थिति है, वह उससे भी ज्यादा निर्बल हो जाएगी। द्रमुक के पास लोकसभा में 22 सांसद हैं। मोदी सरकार का वो हर मुद्दे पर पुरजोर विरोध करते हैं। आज देश में भाजपा विरोधी दो मजबूत गढ़ हैं- एक ममता बनर्जी का बंगाल में और एक स्टालिन का तमिलनाडु में।

तमिलनाडु में भाजपा का संगठन ऐसा नहीं है, जो द्रमुक की बराबरी कर सके। ये भी सही है कि 2026 का तमिलनाडु विधानसभा चुनाव भाजपा के नेतृत्व में लड़ा जाने वाला चुनाव भी नहीं है। इस चुनाव में अमित शाह प्रमुख रणनीतिकार हैं, जो द्रमुक के सामने एक प्रभावशाली गठजोड़ खड़ा करने में कुछ सफल हुए हैं। अप्रैल 2025 में भाजपा और अन्नाद्रमुक ने तमिलनाडु चुनाव लड़ने के लिए गठबंधन बनाया था। पिछले तीन महीनों में अमित शाह और प्रभारी पीयूष गोयल ने गौंडर से लेकर वाणीयार जाति को समझा-बुझाकर एनडीए के साथ जोड़ा है। इधर पिछले दो सालों से द्रमुक का प्रचार भी प्रमुख रूप से भाजपा की विचारधारा के खिलाफ का रहा है। स्टालिन ने भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपने बेटे उदयनिधि को आगे किया है। आज द्रमुक की भाजपा विरोधी राजनीति के मुख्य प्रचारक उदयनिधि ही हैं।

स्टालिन कई मुसीबत से घिरे हुए हैं। गंभीर भ्रष्टाचार के आरोप, बेटे उदयनिधि को अपना वारिस बनाने का संकल्प और राज्य में बिगड़ती हुई कानून-व्यवस्था द्रमुक के खिलाफ एक माहौल पैदा कर रही है। बदलती जमीनी हकीकत के कारण इस बार द्रमुक की साथी रही कांग्रेस भी हिम्मत दिखाकर द्रमुक से अलग चुनाव लड़ने का सोच रही है। पर ऐसा होने की संभावना काफी कम है।

द्रविड़ राजनीति में उभर रहा है एक नया त्रिकोणीय संघर्ष

वैसे तो तमिलनाडु में कई साल से द्रमुक के सामने अन्नाद्रमुक मैदान में होती है। मुकाबला इन दो द्रविड़-पार्टियों में ही होता है। लेकिन आज इनके पास लोकप्रिय नेता नहीं हैं। विजय से उन्हें कड़ी चुनौती मिल रही है। भाजपा-कांग्रेस की नजरें इन समीकरणों पर हैं।

लेकिन तमिलनाडु का चुनाव अगर अभूतपूर्व बनने जा रहा है तो उसका कारण न तो स्टालिन हैं, ना ही विपक्ष के नेता पलानीस्वामी (ईपीएस)। वास्तव में तमिल सुपरस्टार विजय ने सबको हिलाकर रख दिया है। कई सर्वे आ गए हैं, जिनमें विजय को लगभग 25% लोग पसंद कर रहे हैं। अगर ये लोग विजय की टीवीके- तमिलगा वेत्री कषगम- पार्टी को वोट भी दे देंगे तो चुनाव नतीजों का कोई भी पूर्वानुमान नहीं लगा सकता है।

कांग्रेस में तो कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो सोच रहे हैं कि अगर विजय उनके साथ आने को राजी हो जाएं तो द्रमुक को 20 सीट मिलनी भी मुश्किल हो जाएगी। लेकिन विजय किसी के हाथ आसानी से आने वाले नहीं हैं। उसके पास गजब का कॉन्फिडेंस है। खूब पैसा भी है। आज के दिन में वो सबसे पॉपुलर सुपरस्टार हैं। वो दूसरे पक्ष के नेताओं को जल्दी से मिलते नहीं हैं। घटनाओं पर जल्दी प्रतिक्रिया भी नहीं देते हैं। पूरे तमिलनाडु में लड़ाने के लिए उसके पास पर्याप्त उम्मीदवार नहीं हैं। लेकिन लोगों में बिगड़ती हुई परिस्थिति के कारण इतना गुस्सा है कि वो अपनी आशा विजय के साथ बांध रहे हैं। विजय के पीछे दलित, महिलाओं और युवा वर्ग का समर्थन है।

वास्तव में लोग दोनों द्रविड़ दलों से इतने थक चुके हैं कि जो चुनाव द्रमुक के खिलाफ का था, वो मतदान का दिन आते-आते विजय को जिताने का माहौल बना दे तो अचरज नहीं होना चाहिए। द्रमुक के नेता विजय की भरपूर टीका करते हैं कि वो भाजपा के खिलाफ कोई खास बयान नहीं देते। सेंसर बोर्ड ने उनकी महंगी फिल्म रोक रखी है, फिर भी वो भाजपा के खिलाफ बोल नहीं पाए। इस कारण से अफवाहों का बाजार भी गर्म है कि कहीं द्रमुक के खिलाफ भाजपा खेल तो नहीं खेल रही है? जो लगातार सर्वे हो रहे हैं, वो सब को उलझन में डालने के लिए काफी हैं। जानकार लोग ये भी कहते हैं कि विजय द्रमुक और अन्नाद्रमुक दोनों को नुकसान पहुंचाएंगे। उस स्थिति में द्रमुक मामूली अंतर से भी चुनाव जीतने की पूरी कोशिश करेगी, क्योंकि विजय की एंट्री से द्रमुक-विरोधी वोटों का बंटवारा होने की संभावना है। वहीं भाजपा कोशिश करेगी कि तमिलनाडु में त्रिशंकु विधानसभा हो जाए, जिसमें भाजपा भी सरकार बनाने या चलाने में एनडीए के तहत कोई भूमिका अदा कर सके।

(ये लेखिका के अपने विचार हैं)

इस लेख को मोबाइल पर सुनने के लिए **QR कोड** को स्कैन करें।

नजरिया • मुद्दा हवा, पानी, भोजन, दवा का

विकसित भारत के केंद्र में इकोनॉमी तो है, पर इंसान?

देश-समाज

मुकेश माथुर
दैनिक भास्कर
X @mukesh1275

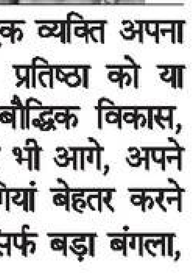

शून्य से शिखर तक पहुंचने वाला एक व्यक्ति अपना 'विकास' किसे मानेगा? पैसे, पद, प्रतिष्ठा को या अच्छी गुणवत्ता वाले जीवन-स्तर, बौद्धिक विकास, मन की शांति और खुशी को? इससे भी आगे, अपने दायरे में आने वाले लोगों की जिंदगियां बेहतर करने को? शायद इस सभी को, लेकिन सिर्फ बड़ा बंगला, बड़ी गाड़ी विकास नहीं हो सकता।

2047 में विकसित देश बनने से हमारे देश को कोई नहीं रोक सकता। ट्रम्प का टैरिफ भी नहीं। अब हमारे पास 'मां' भी है। मदर ऑफ ऑल डील्स! सवाल इतना-सा है कि विकसित होते देश की हवा जहरीली, पानी मृत्यु देने वाला, भोजन कैंसर कोशिकाएं बनाने वाला और दवाइयां मौत के और करीब ले जाने वाली (नकली) कैसे हो सकती हैं? क्या हमारे विकास मॉडल के केंद्र में इकोनॉमी तो होगी मगर इंसान न होगा? विकसित बन किसके लिए रहे हैं? दुनिया को दिखाने के लिए या अपनों को आगे ले जाने के लिए?

दुनिया को तो बुलंदी से बढ़ता भारत दिख ही रहा है। लेकिन दुनिया को यह भी दिख रहा है कि भारत में निवेश करने जाएंगे तो दिल्ली में लैंड करते ही फेफड़े लड़खड़ाने लगेंगे, सांस उखड़ने लगेगी। विश्व बैंक की 2022 की रिपोर्ट बताती है कि भारत में हर साल 17 लाख लोगों की मौत प्रदूषण से होती है।

क्या सरकार ने तय किया है कि हम किस तरह के विकसित देश बनना चाहते हैं? अमेरिका जैसे, जो इंसान छोड़ इकोनॉमी को केंद्र में मान चुका है? सुनते थे कि अमेरिका में एक भी असामान्य मौत हो जाए तो वह जमीन-आसमान एक कर देता है। लेकिन मिनियोपोलिस में एक व्यक्ति को फेडरल एजेंटों ने ही गोली मार दी, महिला को गाड़ी में शूट कर दिया। ट्रम्प सुरक्षा बल के पक्ष में ही खड़े हो गए जबकि पूरे देश में आंदोलन चल रहा है। दुनिया पर मनमानी करते आए इस देश में 2021 के बाद से आम आदमी का जीवन-स्तर और क्रय-शक्ति गिरते चले गए। एक तिहाई मध्यमवर्गीय परिवार भोजन और स्वास्थ्य की बुनियादी जरूरतें पूरी नहीं कर पा रहे हैं।

दूसरी तरफ, कहीं कम जीडीपी वाले विकसित देशों ने विकास की अपनी परिभाषा गढ़ी है। स्कैंडिनेवियाई देश नॉर्वे, स्वीडन, फिनलैंड एचडीआई यानी मानव विकास सूचकांक पर ज्यादा ध्यान देते हैं। इनका मंत्र है- बचपन से बुढ़ापे तक सुरक्षा। फिनलैंड में शिक्षा मुफ्त है, निजी स्कूल न के बराबर। नॉर्वे अपनी प्राकृतिक संपदा का उपयोग नागरिकों के लिए वेलफेयर फंड बनाने में करता है। वहां स्वास्थ्य सेवाएं लगभग मुफ्त हैं। जापान ने लंबी उम्र और स्वास्थ्य सेवाओं को अपना मुख्य आधार बनाया है। यहां सड़कें सुरक्षित हैं, आपदा प्रबंधन गजब का है और ट्रेनें मिनटों की सटीकता से चलती हैं। प्रसिद्ध कोलंबियाई अर्थशास्त्री गुस्तावो पेट्रो ने कहा था- एक विकसित देश वह नहीं है जहां गरीबों के पास कारें हों, बल्कि वह है जहां अमीर सार्वजनिक परिवहन का इस्तेमाल करते हों।

भावनात्मक मुद्दे चुनाव जिता सकते हैं लेकिन विकास के ब्लू प्रिंट में उस मतदाता की परवाह तो कीजिए जो आपको जिताएगा। अगर जीडीपी बढ़ रही है और लोगों का स्वास्थ्य व खुशहाली नहीं, तो वह विकास एक धोखा है।

इधर, हमारे देश में 2047 तक आधी आबादी शहरों में रह रही होगी। उन शहरों में जहां ट्रैफिक बेकाबू हो चुका है, हवा-पानी जहरीले हैं, 90 डिग्री के फ्लाईओवर बन रहे हैं, गिर रहे हैं। स्थानीय निकाय और एजेंसियां गैर-जिम्मेदार हैं। इन्फ्रास्ट्रक्चर और ट्रांसपोर्ट में मंत्री-अफसर का कमीशन और ठेकेदार का मुनाफा बढ़ता जा रहा है। एक विकासशील देश में कई तरह की समस्याएं हो सकती हैं। लेकिन महत्वपूर्ण यह है कि सरकार की प्राथमिकताएं क्या हैं? वह अपनी नीतियों से किस तरह की संस्कृति बना रही है?

नोबेल विजेता जोसेफ स्टिग्लिट्ज कहते थे- विकास का मतलब जीवन को बदलना है, सिर्फ अर्थव्यवस्था को नहीं। अगर जीडीपी बढ़ रही है और लोगों का स्वास्थ्य व खुशहाली नहीं, तो वह विकास एक धोखा है।

दूरदृष्टि • एआई हमसे श्रम की अस्मिता छीन रहा

काम करने का प्रश्न मनुष्य के अस्तित्व की गरिमा से जुड़ा है

एआई

पीटर कर्षलैगर
ल्युसर्न यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर और डायरेक्टर

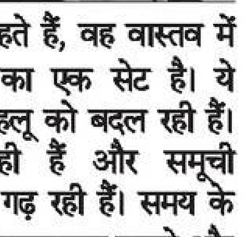

जिसे हम आमतौर पर एआई कहते हैं, वह वास्तव में डेटा-बेस्ड सिस्टम्स (डीएस) का एक सेट है। ये तकनीकें इंसानी जीवन के हर पहलू को बदल रही हैं। नए बिजनेस मॉडल बढ़ा रही हैं और समूची अर्थव्यवस्थाओं को नए सिरे से गढ़ रही हैं। समय के साथ ये नई नौकरियां पैदा करने, उत्पादकता बढ़ाने और कॉग्निटिव क्षमताएं बढ़ाने का वादा करती हैं।

लेकिन इन फायदों के साथ ही डिजिटल क्रांति और डीएस का यह प्रसार श्रम बाजार, शिक्षा और प्रोफेशनल ट्रेनिंग को बाधित भी कर रहा है। परिणाम साफ दिखने लगे हैं- एल्गोरिदम-आधारित प्लेटफॉर्म्स द्वारा तैयार जोखिमपूर्ण कार्य-स्थितियां, घटती मजदूरी और अर्थव्यवस्था की जरूरतों व कामगारों के प्रशिक्षण के बीच बढ़ता असंतुलन। इस सब से यह बुनियादी सवाल खड़ा होता है कि क्या एआई का बढ़ता इस्तेमाल वेतन या मजदूरी वाले पेशेवर काम को अप्रासंगिक कर देगा? हमें अक्सर बताया जाता है कि तकनीकी छलांग ने हर बार बड़े पैमाने पर बेरोजगारी की आशंकाएं पैदा कीं और हर बार ये गलत ही साबित हुईं। लेकिन ये ऐतिहासिक पैटर्न अब शायद काम न करे।

मोटे तौर पर अतीत की तकनीकें मानव श्रम को अधिक कुशल या शारीरिक रूप से कम मेहनत वाला बनाने के लिए विकसित हुई थीं। इसके उलट, एआई इंसान को वैल्यू-चेन से हटा देने पर आमादा है। पिछली तकनीकी क्रांतियों के विपरीत एआई सिस्टम्स महज सामान्य या कम-कौशल वाले कामों तक सीमित नहीं हैं। ये उन क्षेत्रों में भी बढ़ रहे हैं, जो कभी मानवीय विशिष्टता में शामिल थे, जैसे चिकित्सा और सर्जरी, कानूनी विश्लेषण या रचनात्मक सृजन।

आज एआई के विस्तार और गति से उस भरोसे को चुनौती मिल रही है कि तकनीकी इनोवेशंस हमेशा जितनी नौकरियां खत्म करते हैं, उससे अधिक पैदा करते हैं। वस्तुतः ऐसा कोई ऐतिहासिक नियम है ही नहीं, जो यह गारंटी देता हो कि तकनीकी बदलाव अनिवार्य रूप से इंसानों के लिए अधिक पेड-वर्क पैदा करेगा। इसके विपरीत, सामने आ रहे प्रमाण बताते हैं कि जिस गति से नई नौकरियां पैदा हो रही हैं, उससे कहीं ज्यादा तेजी से एआई पूरे के पूरे पेशों को ही समाप्त कर रहा है।

यकीन मानिए कि काम का कम समय और अधिक फ्री-टाइम जरूरी तौर पर बुरा नहीं। अत्यधिक श्रम से मुक्त कोई समाज अधिक रचनात्मक हो सकता है। खतरा काम खत्म होने से नहीं, बल्कि इसके साथ समाप्त होने वाली चीजों से है। जैसे, वेतन, जनहित में काम आने वाला टैक्स-आधार और रोजगार से मिलने वाली पहचान, प्रयोजन-भावना, अस्मिता और साथ काम करने वाले लोगों के बीच का सौहार्द।

जब आर्थिक मूल्य पैदा करने के लिए कम से कम लोगों की जरूरत होगी तो नीति-निर्माताओं को श्रम बाजार पर एआई का असर स्वीकारना ही होगा। ऐसे में दांव पर देशों की वो प्रतिबद्धता है, जिसमें अधिक से अधिक रोजगार पैदा करने पर जोर होता है। अस्तित्व खो चुके किसी जॉब-मार्केट के प्रति लोगों को कुशल होने के लिए कहना इन बदलावों के लिए ऐसे व्यक्तियों को जिम्मेदार ठहराना होगा, जिनका उन पर कोई नियंत्रण ही नहीं है। जबकि जरूरत ऐसे पॉलिसी फ्रेमवर्क की है, जो इस बदलाव की व्यापकता के अनुरूप हो।

एआई के विस्तार और गति से इस भरोसे को चुनौती मिल रही है कि तकनीकी इनोवेशंस हमेशा जितनी नौकरियां खत्म करते हैं, उससे अधिक पैदा करते हैं। इसके उलट आज एआई पूरे के पूरे पेशों को ही खत्म कर रहा है।

ऐसे में हमें 'सोसाइटी, आंत्रप्रेन्योरशिप और रिसर्च-टाइम' (एसईआरटी) मॉडल को अपनाना होगा, जो आय को काम से पृथक करता है, लेकिन बिना शर्त नहीं। इसका उद्देश्य गरिमापूर्ण जीवन और मानवाधिकारों के साथ मानवीय अस्तित्व की आवश्यकताएं पूरा करना है। लेकिन अगर दुनिया ने बिना किसी सामूहिक प्रतिक्रिया के एआई को मानव श्रम को विस्थापित करने दिया तो यह असमानता और अन्याय बढ़ाएगा। इससे राजनीतिक अस्थिरता पैदा होगी और सामाजिक ताना-बाना कमजोर होगा।

(@प्रोजेक्ट सिंडिकेट)

डिफ्रेंट एंगल • 'फ्रिक्शन-मैक्सिंग' यानी दिनचर्या में असुविधा की वापसी का विचार लोकप्रिय हो रहा है

एक क्लिक पर ही सब मिल जाएगा तो व्यक्तित्व कैसे निखरेगा?

युवामन

नन्दितेश निलय
वक्ता, एथिक्स प्रशिक्षक एवं लेखक
nanditeshnilay@gmail.com

आपने ध्यान दिया है कि एक तरफ जहां सारी दुनिया पूरी ऊर्जा के साथ स्क्रीन पर आलोकित होती रहती है; वहीं दूसरी तरफ हमारी युवा पीढ़ी पर एक कभी न खत्म होने वाली सुस्ती भी छाई रहती है। बेड शीट झाड़ना, दो कदम चलकर पानी का गिलास उठाना, किताबों को सहेजना, किसी का हालचाल पूछना, अपने कमरे से निकलकर दूसरे कमरे में जाना- ये सब उनके लिए बहुत दुरूह कार्य बन जाते हैं। बिस्तर पर पढ़ना, वहीं पर खाना और साथ-साथ लगातार फोन देखते रहना ही उन्हें सही और उपयोगी नजर आने लगता है। स्क्रीन टाइम के अलावा बाकी सारे कार्य अनिच्छा से भर जाते हैं।

इस पीढ़ी में जितनी ऊर्जा अनवरत फोन देखने और एक क्लिक पर सामान मंगाने के लिए है, वैसी घर से बाहर निकलकर टहलने या लाइब्रेरी तक पहुंचने के लिए क्यों नहीं नजर आती है? 'टेक-ब्रोज' कहलाने वाली यह पीढ़ी हजार बातों में अपने माता-पिता से सहमत नहीं होती। तुरंत प्रतिक्रिया देना इनके लिए आम है। अपनी सोच को लेकर ये बहुत पजेसिव होते हैं और उन लोगों को बिलकुल पसंद नहीं करते, जो उनके कम्फर्ट जोन को तोड़ना या उन्हें कुछ सिखाना या समझाना चाहते हैं।

सिलिकॉन वैली में मशहूर 'तेजी से आगे बढ़ो' का मंत्र इस नई पीढ़ी को अकसर नैतिक गलतियों और अनचाहे नतीजों की ओर ले जाता है। इस पीढ़ी को इनोवेशन और विजन के लिए सराहा जाता है, लेकिन जोखिम लेने को लेकर उनका लापरवाह रवैया समाज को नुकसान भी पहुंचा सकता है। यह डेटा-प्राइवेसी के उल्लंघन और एल्गोरिदम में भेदभाव के मामलों में देखा भी गया है।

अगर हम इस पीढ़ी को उनके माता-पिता की नजरों से देखें तो वे उन्हें लगातार गैजेट्स से दूर रखने की कोशिश करते पाए जाते हैं। उनके लिए अपने बच्चों का सर्वांगीण विकास मायने रखता है, जबकि 'टेक-ब्रोज' के लिए, तकनीक, दक्षता और कम्फर्ट जोन ही लक्ष्य होता है। और शायद यही कारण है कि जिस बात पर वे सबसे ज्यादा असहमत होते हैं, या जिस पर अपनी तीखी प्रतिक्रिया जाहिर करते हैं; वह है मेहनत का महत्व।

उनके माता-पिता का मानना होता है कि जीवन में आगे बढ़ने के लिए सभी को अपने कम्फर्ट जोन से बाहर निकलना चाहिए। लेकिन 'टेक-ब्रोज' के लिए तो पूरी दुनिया एक क्लिक पर मौजूद है, फिर मेहनत क्या करना! श्रम तो निम्न वर्ग के हिस्से गया है। वो भला फोन छोड़ मेहनत का दामन क्यों थामें! तकनीक की दुनिया ने उन्हें एक ऐसा सपनीला संसार दिया है, जहां उनकी हर 'असुविधा' को खत्म कर दिया गया है। सबकुछ इंस्टैंट डिलीवर हो जाता है। अब तो सोचने का काम भी बुद्धिमान चैटबॉट्स को आउटसोर्स कर दिया गया है।

लेकिन इसी ने 'फ्रिक्शन-मैक्सिंग' (Friction-maxxing) के नए विचार को भी जन्म दिया है, जो हमारी दिनचर्या में 'असुविधा' की वापसी की वकालत करता है। यह शरीर को चलाने और प्रयत्नशीलता के महत्व के तर्क को सामने रखता है। ये कहता है कि घर बैठकर खाना मंगवाने के बजाय घर से बाहर निकलना, ट्रैफिक का सामना करना और खाना ऑर्डर करने के बाद उसकी प्रतीक्षा करना हम में धैर्य और ऐसे माहौल में रहने की क्षमता को विकसित करता है, जिन पर हमारा नियंत्रण नहीं। क्योंकि खुद को मुश्किल स्थितियों में डालना हमारे व्यक्तित्व को निखारता है। इससे हासिल होने वाली मानसिक मजबूती और आत्मविश्वास हमें बात-बात पर निराश होने से बचाता है और हमें बताता है कि जीवन कोई इंस्टा या मेटा का प्लेटफार्म नहीं, एक सघन वास्तविकता है। आखिर यह 'फ्रिक्शन' ही है, जो फिजिक्स की भाषा में व्यक्ति को गिरने से बचाता है और हर घड़ी सतर्क भी रखता है!

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

बिजनेस ब्रीफ

टाटा पावर का मुनाफा 25% घटा, ₹772 करोड़

मुंबई | टाटा पावर ने वित्त वर्ष 2026 की अक्टूबर-दिसंबर तिमाही के लिए 772 करोड़ रुपए का कंसॉलिडेटेड नेट प्रॉफिट दर्ज किया। यह पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही के 1,031 करोड़ रुपए से 25% की सालाना गिरावट है। कंपनी का परिचालन राजस्व पिछले वर्ष की तुलना में 9% घटकर 13,948 करोड़ रुपए रह गया। कुल खर्च 6% घटकर 13,465 करोड़ रुपए रहे।

इले. कंपोनेंट में 11,000 करोड़ का निवेश आएगा

नई दिल्ली | इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय जल्द ही इलेक्ट्रॉनिक्स कंपोनेंट मैन्युफैक्चरिंग स्कीम के तहत 5 से 7 नए आवेदनों को मंजूरी दे सकता है। इन परियोजनाओं में करीब 11,150 करोड़ रुपए का कुल निवेश होने की संभावना है। इन इकाइयों से करीब 29,000 करोड़ रुपए का उत्पादन हो सकता है।

जनवरी में सर्विसेज पीएमआई बढ़कर 58.5

नई दिल्ली | जनवरी में देश का सर्विसेज पीएमआई दिसंबर 2025 के 58.0 से मामूली बढ़कर 58.5 हो गया। मजबूत मांग, नए कारोबार में बढ़ोतरी और तकनीकी निवेश से वृद्धि मजबूत बनी रही। वित्त और बीमा क्षेत्र में नए ऑर्डरों में सबसे अधिक वृद्धि देखी गई। कंपनियों ने इंडोनेशिया, केन्या, मलेशिया, ओमान, कतर, श्रीलंका, थाईलैंड और वियतनाम जैसे देशों से नए कारोबार की सूचना दी।

दिल्ली अंतरराष्ट्रीय छात्रों के लिए सबसे किफायती

नई दिल्ली | अंतरराष्ट्रीय छात्र-छात्राओं के लिए दुनिया के सबसे किफायती शहरों की सूची में दिल्ली पहले स्थान पर है। नाइट फ्रैंक, डेलॉय इंडिया और क्यूएस की इस सूची में मुंबई 11वें जबकि बेंगलुरु 15वें स्थान पर है। रैंकिंग के लिए दुनिया के 150 शहरों का मूल्यांकन किया गया। पढ़ाई व रहने का खर्च, रोजगार के अवसर, विश्वविद्यालयों की स्थिति, शहर, छात्रों की राय और विविधता जैसी 6 प्रमुख श्रेणियों के आधार पर रैंकिंग तय की गई।

एपल हैदराबाद में खोलेगी नया रिटेल स्टोर

हैदराबाद | आईफोन निर्माता एपल हैदराबाद में एक नया रिटेल स्टोर खोलने की योजना बना रही है और उसने कर्मचारियों की भर्ती शुरू कर दी है। कंपनी ने हैदराबाद में स्टोर लीडर, सीनियर मैनेजर और जीनियस जैसे पदों के लिए भर्तियां निकाली हैं। मामले से जुड़े लोगों के मुताबिक कंपनी भारत में अपने रिटेल कारोबार का विस्तार तेज कर रही है। यह कदम भारतीय स्मार्टफोन मार्केट में एपल की बढ़ती हिस्सेदारी और बढ़ते भरोसे का प्रतीक है।

शेयर मार्केट: सेंसेक्स में मामूली बढ़त, स्मॉल और मिडकैप का प्रदर्शन बेंचमार्क से बेहतर

एआई का खौफः आईटी में 6 वर्ष की बड़ी गिरावट, ऑयल-गैस 2% उछले

भास्कर न्यूज़ | मुंबई

शेयर बाजार में बुधवार को आईटी कंपनियों के शेयरों में बड़ी गिरावट देखी गई। निफ्टी आईटी इंडेक्स 6% तक टूट गया। यह मार्च 2020 के बाद सबसे बड़ी गिरावट है। परसिस्टेंट सिस्टम्स और एलटीआईमाइंडट्री के शेयरों में 7% से अधिक की गिरावट देखी गई। एसबीआई सिक्युरिटीज के वाइस प्रेसीडेंट सुदीप शाह के मुताबिक आईटी इंडेक्स में यह बिकवाली अमेरिकी एआई कंपनी एन्थ्रोपिक द्वारा अपने 'क्लाउड एआई' चैटबॉट के लिए एक कानूनी टूल लॉन्च करने के बाद आई, जिससे सॉफ्टवेयर निर्माताओं के लिए प्रतिस्पर्धा बढ़ने की चिंता पैदा हो गई है। निफ्टी शेयरों में इंफोसिस और टीसीएस सबसे बड़े लूजर रहे।

सेंसेक्स 78 अंक उछल कर 83,817 पर और निफ्टी भी मामूली बढ़त के साथ 25,776 पर बंद हुआ। सेक्टोरल इंडेक्स के मोर्चे पर, निफ्टी ऑयल-गैस 2% से अधिक की बढ़त के साथ टॉप गेनर रहा। निफ्टी पीएसई में भी 2% की तेजी देखी गई। स्मॉलकैप्स ने मिडकैप और फ्रंटलाइन इंडेक्स दोनों से बेहतर प्रदर्शन किया। शाह के मुताबिक इन दोनों इंडेक्स ने एक 'बुलिश कैंडल' बनाई, जो निचले स्तरों पर खरीदारी की दिलचस्पी को दर्शाती है।

इंफोसिस, टीसीएस जैसे दिग्गज आईटी शेयरों में 7% से ज्यादा गिरावट

कंपनी का नाम	गिरावट (%)	बंद भाव (₹)	52 हफ्ते का हाई	52 हफ्ते का निचला स्तर
इंफोसिस	-7.26%	1,535	1,924	1,307
टीसीएस	-7.01%	2,999	4,150	2,867
कोफोर्ज	-5.74%	1,614	1,994	1,194
एलटीआईमाइंडट्री	-5.58%	5,706	6,429	3,802
परसिस्टेंट सिस्टम्स	-4.66%	5,986	6,599	4,149
एचसीएल टेक	-4.34%	1,622	1,780	1,303
टेक महिंद्रा	-4.15%	1,645	1,854	1209
विप्रो	-3.85%	233	324	228

रिकवरी तब दिखेगी, जब आईटी फर्में एआई का इस्तेमाल फायदे के लिए करने लगेंगी

भास्कर एक्सपर्ट
जी चोकालिंगम
फाउंडर,
इक्विनॉमिक्स रिसर्च

आज आईटी शेयरों में जो गिरावट देखी जा रही है, उसका मुख्य कारण एआई द्वारा उनके बिजनेस मॉडल को प्रभावित करने का डर है। यह समझना होगा कि आईटी सर्विस इंडस्ट्री पहले से ही सुस्त ग्रोथ वाले दौर में है, क्योंकि इनका एक्सपोर्ट बेस पहले ही बहुत बड़ा हो चुका है। पिछले 3 वर्षों में आईटी निर्यात में केवल मामूली 'सिंगल डिजिट' बढ़ोतरी हुई है। एआई के बढ़ते डर ने पहले से मौजूद इस सुस्ती को और गहरा कर दिया है। आईटी सेक्टर, विशेष रूप से बड़ी आईटी कंपनियों में अपना निवेश कम करें। अब इन शेयरों में लंबी अवधि के लिए वेल्थ क्रिएशन के अवसर नहीं दिख रहे हैं।, निवेशक बेहतर क्वालिटी वाली मिड-कैप आईटी कंपनियों पर विचार कर सकते हैं, क्योंकि वे अधिग्रहण का लक्ष्य बन सकती हैं। रिकवरी का सबसे बड़ा संकेत तब मिलेगा जब कोई आईटी कंपनी एआई (एआई) का इस्तेमाल अपने फायदे के लिए करना शुरू करेगी।

भास्कर नॉलेज

क्या है 'क्लाउड कोवर्क टूल?
एन्थ्रोपिक ने एआई टूल कोवर्क लॉन्च किया है। यह कंपनियों के जटिल बिजनेस टास्क को ऑटोमेट कर सकता है। यह डेटा एनालिसिस, कानूनी दस्तावेज की समीक्षा, सेल्स सपोर्ट और मार्केटिंग जैसे काम बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के कर सकता है।

गिरावट क्यों | निवेशकों के बीच इस बात का डर है कि यह टूल सॉफ्टवेयर, आईटी सेवा कंपनियों के बिजनेस मॉडल को खत्म कर सकता है। इसे सॉफ्टवेयर कंपनियों का अंत कहा जा रहा है क्योंकि अब कंपनियों को अलग से महंगे सॉफ्टवेयर की जरूरत नहीं पड़ेगी।

भास्कर एनालिसिस | ईरान-अमेरिका तनाव बढ़ने से मांग फिर बढ़ी

2 दिन में चांदी 10% उछली, 2.8 लाख पार, रिकॉर्ड स्तर से अब भी 25% नीचे

भास्कर न्यूज़ | मुंबई

सोने-चांदी के दाम फिर बढ़ने लगे हैं। घरेलू बाजार में चांदी बुधवार को 18,497 रुपए महंगी होकर 2,82,462 रुपए प्रति किलो पहुंच गई। आईबीजेए के डेटा के मुताबिक चांदी बीते महीने 29 जनवरी को 3,79,988 रुपए प्रति किलो के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई थी, फिर इसमें बड़ी गिरावट देखी गई और घरेलू बाजार में 2 फरवरी को 2,59,500 रुपए प्रति किलो पर पहुंच गई थी। बीते दो दिनों में चांदी 9% उछल चुकी है। हालांकि चांदी अपने उच्चतम स्तर से 25% नीचे हैं। इस दौरान 24 कैरेट सोना भी करीब 11% चढ़कर 1,58,158 रुपए पर पहुंच गया। सोना अभी अपने उच्चतम स्तर 176121 से करीब 10% नीचे हैं। कोटक सिक्युरिटीज में एवीपी (कमोडिटीज) कायनात चैनवाला के मुताबिक अरब सागर में अमेरिकी सेना द्वारा एक ईरानी ड्रोन को मार गिराए जाने के बाद भू-राजनीतिक तनाव पैदा हो गया है, जिससे सुरक्षित निवेश के रूप में सोने की मांग फिर से बढ़ गई है। रिकॉर्ड ऊंचाई से भारी गिरावट के बाद खरीदारों की बाजार में वापसी हुई है। अंतरराष्ट्रीय मार्केट में सोने की कीमतों में लगातार दूसरे दिन तेजी जारी रही और यह 2% से अधिक बढ़कर 5,050 डॉलर प्रति औंस के ऊपर पहुंच गया। इस साल अब तक सोने ने करीब 17% का रिटर्न दिया, जिससे लंबी अवधि में तेजी का रुझान बरकरार है।

ऑर्डर-टू-ट्रेड नियम आसान हुए, अब जुर्माना लगने का डर खत्म

भास्कर न्यूज़ | मुंबई

भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) ने शेयर बाजार में एल्गोरिदम ट्रेडिंग करने वालों और मार्केट मेकर्स के लिए नियमों को उदार बना दिया है। सेबी ने 'ऑर्डर-टू-ट्रेड रेश्यो' के ढांचे में ढील दी है, जिससे अब इक्विटी ऑप्शन में सौदे करना आसान होगा। तकनीकी कारणों से लगने वाली पेनाल्टी में कमी आएगी। अगर कोई एल्गो ऑर्डर लास्ट ट्रेडेड प्राइस यानी अंतिम कारोबार मूल्य के 40% ऊपर-नीचे या 20 रुपए (जो भी ज्यादा हो) के दायरे में रखा गया है, तो उसे ऊंचे ओटीआर दंड से छूट मिलेगी। पहले यह छूट सीमा बहुत कम थी। इस कारण ट्रेडर्स को डर रहता था कि अगर उनके ऑर्डर तुरंत ट्रेड में नहीं बदले, तो उन्हें भारी जुर्माना भरना पड़ेगा। ये नए नियम 6 अप्रैल 2026 से प्रभावी होंगे।

पीएफ की ब्याज दरों में हो सकती है कटौती

नई दिल्ली | ईपीएफओ प्रॉविडेंट फंड पर दिए जाने वाले ब्याज में कटौती कर सकता है। वर्तमान में पीएफ पर 8.25% ब्याज मिलता है। मामले से जुड़े लोगों के मुताबिक ईपीएफओ की 239वीं सीबीटी मीटिंग में इसे कम करके 8-8.2% के बीच ला सकता है। ये बदलाव प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना के तहत योगदानकर्ताओं की संख्या बढ़ने के कारण फंड को संरक्षित करने के लिए किया जा सकता है।

स्टील्थ फाइटर की रेस से एचएएल बाहर

नई दिल्ली | भारत के सबसे महत्वाकांक्षी रक्षा प्रोजेक्ट 'एएमसीए' (पांचवीं पीढ़ी का लड़ाकू विमान) को लेकर बड़ी खबर आई है। रक्षा मंत्रालय की शॉर्टलिस्ट से सार्वजनिक क्षेत्र की दिग्गज कंपनी हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स बाहर हो गई। बुधवार को शेयर 6% तक टूट गए।

अब इस 15,000 करोड़ रुपए के प्रोटोटाइप प्रोजेक्ट के लिए तीन निजी दिग्गज टाटा ग्रुप, कल्याणी ग्रुप और एलएंडटी बचे हैं। सूत्रों के मुताबिक, यदि किसी कंपनी की 'ऑर्डर बुक' उसके सालाना टर्नओवर से तीन गुना ज्यादा है, तो उसे इस प्रोजेक्ट में 'जीरो' अंक मिलने थे। कंपनी इस मापदंड पर खरी नहीं उतरी।

जियो-ब्लैकरॉक: अंबानी-लैरी फिंक ने एआई के भविष्य पर की चर्चा

ये भारत का युग... 3 दशक में 30 ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी बनेगा देशः मुकेश अंबानी

भास्कर न्यूज़ | मुंबई

रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन मुकेश अंबानी और दुनिया की सबसे बड़ी एसेट मैनेजमेंट कंपनी ब्लैकरॉक के सीईओ लैरी फिंक ने मुंबई में आयोजित 'इन्वेस्टिंग फॉर ए न्यू एरा' कार्यक्रम में भारत के भविष्य का रोडमैप पेश किया। अंबानी ने विश्वास जताया कि भारत अगले दो-तीन दशकों में 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में अग्रसर है। उन्होंने कहा कि भारत पारंपरिक रूप से बचत करने वाला देश रहा है, लेकिन अब समय निवेश का है। अगर भारतीयों की बचत पूंजी बाजार में आती है, तो इससे न केवल परिवारों की संपत्ति बढ़ेगी, बल्कि देश की जीडीपी को भी गति मिलेगी। लैरी फिंक ने इस पर सहमति जताते हुए कहा कि लॉन्ग-टर्म इक्विटी निवेश ही वेल्थ क्रिएशन का सबसे प्रभावी जरिया है। मुकेश अंबानी ने कहा कि मजबूत नीति, राजनीतिक स्थिरता और डिजिटल क्रांति ने भारत को निवेश के लिए दुनिया का सबसे आकर्षक केंद्र बना दिया है।

भारत अब खपत से इनोवेशन हब बन रहा है

लैरी फिंक ने भारत को विश्व अर्थव्यवस्था के लिए 'आशा की किरण' बताया। उन्होंने कहा कि जिस तरह भारत ने अपनी युवा आबादी को यूपीआई, आधार जैसी डिजिटल तकनीक से जोड़ा है, उसने भारत को एक नई पहचान दी है। अंबानी ने कहा कि भारत अब केवल खपत का बाजार नहीं, बल्कि 'इनोवेशन हब' बन चुका है।

एक दशक में ऊर्जा के क्षेत्र में भारत बनेगा आत्मनिर्भर
अंबानी ने दावा किया कि अगले दशक में भारत अपनी 80% ऊर्जा जरूरतें घरेलू स्रोतों से पूरी कर सकता है। लैरी फिंक ने रिलायंस के 'नेट-जीरो' लक्ष्य की सराहना करते हुए कहा कि भारत भविष्य में हरित ऊर्जा का प्रमुख निर्यातक बन सकता है।

युवा खड़ी कर सकते हैं रिलायंस जैसी 100 नई कंपनियां
मुकेश अंबानी ने भारतीय स्टार्टअप्स और युवाओं पर भरोसा जताते हुए कहा कि आने वाले समय में देश में रिलायंस के स्तर की कम से कम 100 नई कंपनियां खड़ी होंगी। उन्होंने युवाओं को 'ग्रोथ' पर भरोसा करने और लंबे समय के लिए निवेश करने की सलाह दी।

आज का भारत प्रचुर फलों से लदा हुआ वृक्ष है, जो देश की दीर्घकालिक ग्रोथ पर भरोसा करेंगे, वही आने वाले दशकों में ज्यादा लाभ पाएंगे।
- मुकेश अंबानी,
चेयरमैन, रिलायंस इंडस्ट्रीज

एआई में निवेश न करना बड़ा जोखिम है। अगर हम एआई में निवेश नहीं करते, तो चीन इस रेस में जीत जाएगा। भारत में डेटा की प्रचुरता है, जो एआई का ईंधन होगा।
- लैरी फिंक,
सीईओ, ब्लैकरॉक

ड्रीम यॉट: 33 करोड़ रुपए हफ्ता दीजिए और बिल गेट्स के सुपरयॉट में रहिए

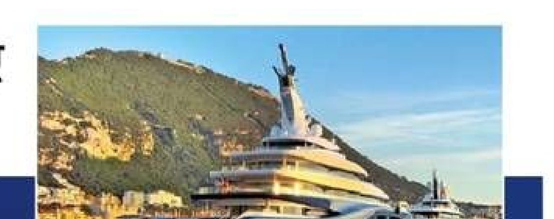

न्यूयॉर्क | माइक्रोसॉफ्ट के को-फाउंडर बिल गेट्स ने गुपचुप तरीके से दुनिया का पहला लिक्विड हाइड्रोजन से चलने वाला सुपरयॉट 'ब्रेकथ्रू' बनवाया है। अब यह 36 करोड़ प्रति हफ्ते के किराए पर उपलब्ध है। इसमें -253C पर जमा कर रखी गई हाइड्रोजन ईंधन के रूप में इस्तेमाल होती है, जिससे धुएं के बजाय केवल 'पानी की भाप' निकलती है। यह 90% तक कम कार्बन उत्सर्जन करता है। एक फुटबॉल मैदान से भी बड़ा है। इसमें 12 मेहमानों के लिए 15 केबिन हैं। करीब 587 करोड़ रुपए खर्च हुए। इसमें पारंपरिक मास्टर सुइट की जगह चार स्तरों का एक 'टाउनहाउस' है, जिसमें जिम, ऑफिस और डाइनिंग एरिया हैं।

अगले वित्त वर्ष देश में 18% तक बढ़ेगी ई-दो पहिया की बिक्रीः क्रिसिल रिपोर्ट

नई दिल्ली | भारत में इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों की बिक्री में तेजी आने की उम्मीद है। क्रिसिल रेटिंग्स की रिपोर्ट के अनुसार, रेयर अर्थ मिनरल्स की आपूर्ति में आसानी से ई- दो पहिला की बिक्री में अगले वित्त वर्ष में 16-18% की वृद्धि होने की उम्मीद है। रिपोर्ट के मुताबिक स्थापित कंपनियां विस्तार कर रही है। इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहन लागत के मामले में काफी किफायती साबित हो रहे हैं। पेट्रोल दोपहिया के 2.2.5 रुपए प्रति किमी की तुलना में ईवी 2 व्हीलर की लागत करीब 3 पैसे प्रति किमी आती है।

भास्कर एक्सप्लेनर

भारतीय ₹75,000 तक का सामान ड्यूटी फ्री ला सकते हैं

भारत ने ड्यूटी-फ्री बैगेज रूल्स में संशोधन किया है। हवाई या समुद्री मार्ग से आने वाले भारतीय यात्री दैनिक उपयोग के आवश्यक निजी सामान बिना शुल्क के ला सकते हैं, बशर्ते कि ये सामान बिक्री के लिए न हों। अन्य सामानों के लिए सामान्य छूट सीमा 50,000 रुपए से बढ़ाकर 75,000 रुपए कर दी गई है। विदेशी पर्यटक भी अब 15,000 रुपए के बजाय 25,000 रुपए तक का ड्यूटी फ्री सामान ला सकते हैं।

2 साल विदेश में रह चुके भारतीयों के लिए क्या बदला?
2 साल से अधिक समय विदेश में रह चुके भारतीय 7.5 लाख तक के सामान बिना शुल्क भारत ला सकेंगे। ये पिछली सीमा से दोगुना है।

आभूषणों के मामले में क्या बदलाव हुए हैं?
आभूषणों के लिए पूरी तरह से वजन आधारित प्रणाली। एक वर्ष से अधिक समय विदेश में रह चुके यात्रियों पर ये छूट लागू है। महिलाएं 40 ग्राम, पुरुष 20 ग्राम तक तक सोना बिना शुल्क ला सकते हैं।

क्या एक नया लैपटॉप बिना शुल्क के ला सकते हैं।
अब यात्रियों को एक नया लैपटॉप बिना शुल्क के लाने की अनुमति है। यह प्रावधान चालक दल के सदस्यों पर लागू नहीं है।

कौन इस छूट का लाभ उठा सकता है?
यह सीमा भारतीय निवासियों, भारतीय मूल के आगंतुकों और वैध वीजा धारक विदेशी नागरिकों पर लागू होती है। यह छूट केवल हवाई या समुद्री मार्ग से भारत आने वाले 18 वर्ष और अधिक आयु के लोगों पर लागू होती है।

अवसर: ट्रम्प नीति, लागत कटौती का असर

अमेरिकी टेक दिग्गज भारत में 20% तक हायरिंग बढ़ा रहे

बिजनेस संवाददाता | बेंगलुरु

अमेरिकी वीजा नीतियों में सख्ती और बढ़ती लागत के कारण गूगल, एपल, अमेजन और माइक्रोसॉफ्ट जैसी कंपनियां 2026 में भारत में बड़े पैमाने पर नौकरियां शिफ्ट कर रही हैं। गूगल की पैरेंट कंपनी अल्फाबेट भारत में 20,000 तक नई नौकरियां दे सकती है। अल्फाबेट ने बेंगलुरु के वाइटफील्ड में ऑफिस टावर किराए पर लिया है। एपल बेंगलुरु में सप्लाई चेन के कर्मचारियों को प्रशिक्षण देने के लिए एजुकेशन हब बना रही है। प्रोफेशनल नेटवर्किंग एप ब्लाइंड के सर्वे में 52% टेक और बैंकिंग कंपनियों के प्रोफेशनल्स ने कहा कि कंपनियां 2026 में भारत में भर्ती बढ़ाने की योजना बना रही हैं। 25% कंपनियां मौजूदा टीम का आकार बढ़ा रही हैं। अकेले गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, अमेजन ने 6 लाख करोड़ के निवेश की घोषणा की है, 5 वर्षों में 20 लाख से ज्यादा जॉब्स पैदा हो सकती हैं।

50 लाख से ज्यादा सालाना पैकेज दे रहीं टेक कंपनियां

जॉब	पैकेज
जेन एआई इंजीनियर	50-55
क्लाउड आर्किटेक्ट	15-40
मशीन लर्निंग इंजीनियर	10-30
साइबर सिक्युरिटी	15-28

(स्रोत- टीमलीज डिजिटल, एक्सफेनो)

2025 में 5 कंपनियों ने दिए 32,000 नए रोजगार

स्टाफिंग फर्म एक्सफेनो के मुताबिक मेटा, अमेजन, एपल, माइक्रोसॉफ्ट, नेटफ्लिक्स और अल्फाबेट ने 2025 में कुल 32,000 नियुक्तियां कीं। टीमलीज डिजिटल की सीईओ नीति शर्मा के मुताबिक इस साल इनकी भर्तियों में करीब 16-20% बढ़ोतरी की उम्मीद है। विशेषज्ञों के मुताबिक अमेरिकन कंपनियों के लिए भारतीय टैलेंट को अमेरिका बुलाने से ज्यादा आसान है कि भारत में काम करवाया जाए।

अमेरिकी टेक कंपनियां भारत में विस्तार क्यों कर रहीं?

वीजा महंगा और कठिन हुआ: कंपनियों को एच-1बी स्पॉन्सर करना अब महंगा पड़ता है। खासकर एंट्री-लेवल या नए पदों के लिए।
लागत में कटौती: अमेरिका में कर्मचारी रखना भारत के मुकाबले कई गुना महंगा है। भारत में कम सैलरी में ज्यादा अच्छे टैलेंट उपलब्ध हैं।
भर्ती में आसानी: अमेरिकन कंपनियों के लिए भारतीय टैलेंट को अमेरिका बुलाने से ज्यादा आसान है। भारत की साख ग्लोबल बैक-ऑफिस के रूप में है अब यहां ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर्स भी तेजी से बढ़ रहे हैं।

बैंकों में एफडीआई 49% हो सकता है

बिजनेस संवाददाता | नई दिल्ली

देश में बैंकिंग व्यवस्था को नया रूप देने की सरकार की योजना तेजी से आगे बढ़ रही है। इसी कड़ी में सरकारी बैंकों में विदेशी निवेश बढ़ाने की तैयारी है। सरकार ने बैंकों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की सीमा को मौजूदा 20% से बढ़ाकर 49% करने की योजना बनाई है। वित्त सेवा सचिव एम. नागराजू के मुताबिक मंत्रालय स्तर पर इस मामले में चर्चा चल रही है। सरकार के इस कदम का उद्देश्य बैंकों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए मजबूत करना है। मजबूत बैंक बड़े इन्फ्रास्ट्रक्चर और ग्रीन एनर्जी सेक्टर की बढ़ती फंडिंग आवश्यकताओं को पूरा करने में मददगार साबित होंगे। विकसित भारत 2047 रोडमैप में ऐसे बैंकों की आवश्यकता जताई गई है जो बड़े पैमाने पर, दीर्घकालिक निवेशों को फंड कर सकें।

बैंकों की आरबीआई से तरलता बढ़ाने की मांग
बैंकों ने आरबीआई से संशोधित तरलता नियमों को जल्द लागू करने का अनुरोध किया है। इससे उन्हें कम सरकारी बॉन्ड रखने की अनुमति मिलेगी। कर्ज देने के लिए अधिक नकदी होगी। गौरतलब है कि अर्थव्यवस्था में तेजी आने के कारण कॉर्पोरेट और व्यक्तिगत स्तर पर लोन की मांग बहुत बढ़ गई है।

भारतीय कंपनियों ने कहा- रूस से खरीदी बंद करने का आदेश नहीं मिला; क्रेमलिन बेफ्रिक

भास्कर न्यूज़ | नई दिल्ली

भारतीय तेल रिफाइनर भारत-अमेरिका के बीच द्विपक्षीय व्यापार समझौते (बीटीए) पर हस्ताक्षर के बाद रूसी कच्चे तेल की खरीद के लिए अगले कदमों के बारे में सरकार से विवरण की प्रतीक्षा कर रहे हैं। अभी तक सरकार की तरफ से उन्हें कोई निर्देश नहीं मिले हैं। कम से कम तीन रिफाइनरी अधिकारियों इस बात की पुष्टि की है। उधर, अमेरिका के साथ व्यापार समझौते के बाद भारत की तेल खरीद में बदलाव लाने की योजना को रूस कोई नई या आश्चर्यजनक बात नहीं मानता। क्रेमलिन के प्रवक्ता दिमित्री पेस्कोव ने कहा कि भारत हमेशा से रूस सहित कई देशों से तेल खरीदता रहा है और आगे भी खरीदता रहेगा। रूस इस बात से अवगत है कि भारत कच्चे तेल के लिए एक आपूर्तिकर्ता पर निर्भर नहीं है। पेस्कोव ने कहा कि रूस भारत के संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ संबंधों का सम्मान करता है, लेकिन भारत के साथ अपनी रणनीतिक साझेदारी को महत्व देता है। उधर, बुधवार को केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि सरकार ऊर्जा स्रोतों में विविधता लाने की योजना बना रही है। उन्होंने इसे बदलते वैश्विक हालातों के बीच भारत की ऊर्जा सुरक्षा की रक्षा के लिए एक रणनीतिक फैसला बताया।

बिजनेस एंकर स्पेसएक्स द्वारा एक्सएआई के अधिग्रहण के बाद मस्क की नेटवर्थ 800 अरब डॉलर

मस्क दुनिया के पहले ट्रिलियनर बनने के करीब पहुंचे

भास्कर न्यूज़ | न्यूयॉर्क

दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति इलॉन मस्क दिनों दिन और ज्यादा अमीर बनने का रिकॉर्ड बना रहे हैं। हाल ही में उनकी दो कंपनियों का विलय हुआ। स्पेसएक्स द्वारा एक्सएआई के अधिग्रहण के बाद उनकी नेथवर्थ 800 अरब डॉलर (करीब 72 लाख करोड़ रुपए) पहुंच गई है। इस बेंचमार्क तक पहुंचने वाले वे दुनिया के पहले व्यक्ति बन गए हैं। फोर्ब्स का अनुमान है कि इस सौदे से, मस्क की संपत्ति में 84 अरब डॉलर की वृद्धि हुई है। इससे उनकी संपत्ति बढ़कर रिकॉर्ड 852 अरब डॉलर हो गई है। माना जा रहा है कि वे इस साल के अंत तक दुनिया के पहले ट्रिलियनर (1 लाख करोड़ डॉलर संपत्ति वाले व्यक्ति) बन सकते हैं। मस्क ने महज चार महीनों में संपत्ति के चार बड़े मुकाम हासिल किए हैं। अक्टूबर 2025 में, टेस्ला के शेयरों में भारी उछाल आने पर वे 500 अरब डॉलर की संपत्ति वाले दुनिया के पहले व्यक्ति बन गए। 15 दिसंबर 2025 को, इलॉन मस्क की संपत्ति 600 अरब डॉलर पार कर गई। चार दिन बाद, ही वे 700 अरब डॉलर की संपत्ति वाले व्यक्ति बन गए। उनकी संपत्ति का बड़ा हिस्सा संयुक्त स्पेसएक्स-एक्सएआई इकाई में 43% हिस्सेदारी (लगभग 542 अरब डॉलर मूल्य की) और टेस्ला में 12% हिस्सेदारी पर आधारित है। 1999 में, डॉट-कॉम बूम के चरम पर, 27 वर्षीय इलॉन मस्क ने अपनी पहली कंपनी जिप2 को कॉम्पैक को 307 मिलियन डॉलर में बेचकर पहली बार दस लाख डॉलर कमाई का आंकड़ा पार किया था। इस कमाई पर मस्क ने खुद को एक मैक्लारेन एफ1 कार खरीदकर तोहफा दिया। उस समय उन्होंने ऑनलाइन भुगतान स्टार्टअप एक्स.कॉम को लॉन्च करने के लिए 10 मिलियन डॉलर (7.4 मिलियन पाउंड) का निवेश किया। बाद में इस स्टार्टअप का नाम पेपाल कर दिया और एक्स.कॉम को ट्विटर की जगह उपयोग किया। 2002 में स्पेसएक्स की स्थापना और 2004 में टेस्ला से जुड़ने के बाद, मस्क ने अपने व्यापारिक साम्राज्य और व्यक्तिगत संपत्ति में तेजी से वृद्धि की।

तो मस्क की संपत्ति करीब 90% देशों की जीडीपी से ज्यादा होगी

दुनिया में महज 15-20 देश ऐसे हैं जिनकी जीडीपी 1 ट्रिलियन डॉलर से ज्यादा है। मस्क की संपत्ति दुनिया के करीब 90% देशों की जीडीपी से ज्यादा होगी। इसका वाणिज्य, वित्त, संस्कृति सहित कई क्षेत्रों में व्यापक प्रभाव पड़ेगा। टोरंटो स्थित हिमल्फार्ब प्रोजान्स्की एलएलपी के प्रबंध भागीदार डेविड हिमल्फार्ब के मुताबिक यह हमारे समाज में काम को महत्व देने के तरीके में मौजूद असंतुलन के बारे में एक चेतावनी है। यह एक ऐसी व्यवस्था को उजागर करता है जहां इक्विटी की कीमत में वृद्धि, इसमें योगदान देने वाले मजदूर की तुलना में मालिक को ज्यादा फायदा पहुंचाती है।

हिन्दुस्तान
1936
सत्य • सार्थक • सदैव

सियासी सरगर्मी

देश में सियासी सरगर्मी बहुत तेज हो गई है। सबसे पहले, मणिपुर में फिर चुनी हुई सरकार की वापसी सुखद और स्वागतयोग्य है। मई 2023 से ही संघर्षग्रस्त मणिपुर में राष्ट्रपति शासन बुधवार को औपचारिक रूप से हटा लिया गया, जिससे युमनाम खेमचंद सिंह के नेतृत्व में राज्य में नई भाजपा सरकार के गठन का मार्ग प्रशस्त हुआ। मणिपुर को नया मुख्यमंत्री मिलना जरूरी था। अव्वल तो भाजपा स्थानीय आंतरिक तनाव की वजह से पूर्ववर्ती मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह को शुरू में हटा नहीं सकी थी और अब जो नियुक्ति हुई है, वह भी देर से हुई कही जाएगी। यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि मणिपुर में भाजपा को एक नई शुरुआत करनी पड़ेगी। मणिपुर में अगले साल विधानसभा चुनाव है। ऐसा लग रहा है कि नई सरकार में भाजपा जातीय समीकरण को ठीक से बिठाकर चलेगी। वहां जातीय तनाव को नियंत्रित रखना होगा, हालांकि, यह आसान काम नहीं है। ध्यान रहे, राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने मणिपुर की चर्चा भी करते हुए भाजपा और प्रधानमंत्री पर निशाना साधा है। संकेत साफ है कि मणिपुर में सियासत अब विधानसभा चुनाव तक ऐसे ही गर्म रहेगी।

दूसरी ओर, पश्चिम बंगाल की राजनीति ने मानो दिल्ली में डेरा डाल रखा है। स्वयं मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने दिल्ली में भाजपा और चुनाव आयोग के खिलाफ मोर्चा संभाल रखा है। दर्ज करने लायक बात है कि पश्चिम बंगाल में एसआईआर के खिलाफ सर्वोच्च न्यायालय में पैरवी करने वाली ममता पहली मुख्यमंत्री बन गई हैं। ममता बनर्जी को शुरू से लग रहा है कि पश्चिम बंगाल को चुनाव आयोग निशाना बना रहा है, ताकि भाजपा को लाभ पहुंचाया जा सके। हालांकि, एसआईआर की कवायद अन्य राज्यों में भी चल रही है, पर सर्वाधिक चिंता शायद पश्चिम बंगाल में है। ममता बनर्जी की इस सक्रियता से यही संकेत गया है कि वह पश्चिम बंगाल में एसआईआर के खिलाफ हैं। सर्वोच्च न्यायालय में इसे रोकने के लिए पहले भी कोशिश हुई है, पर वहां किसी को कामयाबी नहीं मिली है। क्या ममता बनर्जी को कामयाबी मिलेगी? एसआईआर को लेकर उनकी परेशानी समझ से परे है, क्योंकि चुनाव आयोग राज्य सरकार के कर्मचारियों के भरोसे ही काम करता है। सरकार के बीएलओ और सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस के बीएलए, दोनों मिलकर यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि एसआईआर सोलह आना सही ढंग से पूरा हो। खैर, अब सर्वोच्च न्यायालय के फैसले से पश्चिम बंगाल की राजनीति को नई दिशा मिल सकती है, इसका इंतजार हर दल को है।

मणिपुर में चुनी हुई नई सरकार की वापसी सुखद है, पर पश्चिम बंगाल और राष्ट्रीय राजधानी में अचानक तेज हुई सियासत सबके लिए चिंता की बात होनी चाहिए।

बहरहाल, इन दिनों तमाम सियासी दल राष्ट्रीय राजधानी में पूरी तरह सक्रिय हैं। संसद का बजट सत्र जारी है, पर तीन दिन से कार्यवाही सही नहीं चल पा रही है। राहुल गांधी राष्ट्रीय सुरक्षा पर बोलना चाहते हैं, पर उनका आरोप है कि उन्हें बोलने से रोका जा रहा है। यह भी गौर करने की बात है कि राष्ट्रपति के अभिभाषण पर प्रधानमंत्री को धन्यवाद ज्ञापित करना था, पर हंगामे की वजह से ऐसा न हो सका। संसद में सियासी तल्खी चरम पर है, यह ठीक नहीं है। यह बजट सत्र है, इसे खांटी सियासत में खर्च न किया जाए। यह बात किसी नेता को भूलनी नहीं चाहिए कि जरूरत से ज्यादा सियासत किसी भी राज्य या देश के लिए हानिकारक है। मणिपुर से दिल्ली तक दलों के अंदर और दलों के बीच भी व्यवहार की ऐसी मिसाल पेश होनी चाहिए, ताकि आम लोग समस्या के साथ नहीं, समाधान के साथ खड़े होने को प्रेरित हों।

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले 05 फरवरी, 1951

भारतीय रेलों की प्रगति

युद्धकालीन परिस्थितियों का भारतीय रेलों के प्रबन्ध पर बहुत बुरा असर पड़ा था। मुसाफिर गाड़ियों की संख्या कम हो गयी थी और इस कारण उनमें बेहद भीड़ रहने लगी थी। मुसाफिर गाड़ियां निश्चित समय से घण्टों की देर से दौड़ती थी। माल को एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजने में बहुत विलम्ब होता था। यह चुनाव करना होता था कि किस प्रकार के माल को भेजने में प्राथमिकता दी जाये। जो माल प्राथमिकता की कोटि में नहीं आ पाता, उसके लदान की कोई आशा नहीं की जा सकती थी।

यह सन्तोष का विषय है कि भारतीय रेलों के लिए यह बुरा काल बीत चुका है और वे धीरे-धीरे ही सही, किन्तु निश्चित गति से सुव्यवस्था की ओर कदम बढ़ा रही हैं। रेलवे बोर्ड की सन् 1949-50 की वार्षिक रिपोर्ट से यह तथ्य भली-भांति प्रमाणित हो जाता है। इस वर्ष पुनः रेलमार्ग द्वारा भारत का आसाम के साथ संबंध जुड़ गया है और इसे रेलवे प्रबन्ध की सबसे उल्लेखनीय सफलता कहा जा सकता है। पाकिस्तान की स्थापना के बाद ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गयी थी कि भारत और आसाम के बीच सीधा रेल-सम्पर्क नहीं रह गया था और भारत पाकिस्तान रेलवे पर निर्भर हो गया था।

भारत और पाकिस्तान के संबंध मित्रतापूर्ण होते, तो कोई विशेष कठिनाई पैदा नहीं होती। किन्तु दुर्भाग्य से दोनों देशों के संबंध अभी भी संतोषजनक आधार पर स्थिर नहीं हुए हैं। स्वतंत्र भारत ने आसाम के साथ स्वतंत्र रेल-सम्पर्क स्थापित करना अनिवार्य रूप से आवश्यक समझा और उसने नया रेलमार्ग निर्माण करने की योजना अपने हाथ में ली। भारत ने 14 करोड़ रुपये खर्च करके इस योजना को निर्दिष्ट समय से पहले ही पूरा कर लिया है और इस नये रेलमार्ग पर आवागमन भी प्रारम्भ हो गया है। देश की रक्षा की दृष्टि से इस रेलमार्ग का बहुत महत्व है और उसके निर्माण पर रेलवे बोर्ड सचमुच बधाई का पात्र है। भारतीय रेलों की दृष्टि से चित्तरंजन इंजन निर्माण कारखाने का इस वर्ष उद्घाटन होना भी कम महत्वपूर्ण कार्य नहीं है। भारत अब तक रेलों की आवश्यक सामग्री के लिए बहुत कुछ विदेशों पर निर्भर रहा है। इस कारखाने की स्थापना के साथ देश को इस विषय में स्वावलंबी बनाने की दिशा में पहला कदम उठाया गया है।

ईरान में तनाव अभी खत्म नहीं हुआ

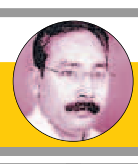

यहां स्कैन करें

रहीस सिंह | वरिष्ठ अध्येता, अंतरराष्ट्रीय मामले

खाड़ी में अमेरिकी दबाव का बढ़ना और यूरोपीय संघ का उसके साथ खड़ा दिखना, तेहरान की सड़कों पर फिर से प्रदर्शनकारियों के लौटने का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

यूरोपीय संघ द्वारा ईरानी रिवॉल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स को आतंकवादी संगठन घोषित किए जाने के बाद ईरान ने जिस तरह तेहरान में तैनात यूरोपीय देशों के राजदूतों को तलब किया और यूरोपीय संघ की सेनाओं को आतंकी संगठन करार दिया है, उससे तनाव एक बार फिर गहरा गया है। उधर अमेरिकी युद्धपोत यूएसएस अब्राहम लिंकन तेहरान पर पैनी नजर रखे हुए है। बीते मंगलवार को उसने एक ईरानी ड्रोन को मार गिराने का दावा किया। साफ है, खाड़ी में अमेरिकी दबाव का बढ़ना और यूरोपीय संघ का अपने परंपरागत मित्र के साथ खड़ा दिखना, तेहरान की सड़कों पर फिर से प्रदर्शनकारियों के लौटने का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

कुछ दिनों पहले ईरान की सड़कें उस इतिहास को दोहराती दिख रही थीं, जो सन् 1979 में लिखा गया था। ऐसा लगा कि 50 साल पूरा करने से पहले ही इस्लामी हुकूमत उसी तरह विदा हो जाएगी, जैसे जनवरी-फरवरी 1979 में राजतंत्र को बेदखल होना पड़ा था। ऐसा नहीं हो सका और इतिहास स्वयं को दोहराने से बच गया। सवाल उठता है, ईरान की सड़कों पर जो लोग उतरे थे, वे अपनी बेहतर जिंदगियों के लिए आवाज बुलंद कर रहे थे या धर्मतंत्र व धार्मिक शासक को सत्ता से हटाने के लिए? सवाल यह भी है कि वह धर्मतंत्र आज इतना अलोकप्रिय क्यों हो गया, जिसे 1979 में लोगों ने जनमत संग्रह में 98 प्रतिशत मत देकर स्वीकार किया था? क्या यह दुनिया से जुड़ाव के कारण पैदा हो रही नई आकांक्षाओं का परिणाम है?

पिछले महीने के दमन की कहानियां अब दुनिया के सामने आ रही हैं। 'यह केवल हिंसक दमन नहीं, एक सुनियोजित नरसंहार था।' एमनेस्टी इंटरनेशनल से जुड़ी वकील राबिया बहरेनी की यह टिप्पणी ईरान में हुई दमनात्मक कार्रवाई का सच बताती हुई दिख रही है। दुनिया के बहुत से पत्रकारों और मानवाधिकार से जुड़ी संस्थाओं ने इस नरसंहार को तेहरान, इस्फहान, शीराज, रश्त, बेहश्त-ए-जहरा, अबादान और अहवाज सहित दर्जनों शहरों में बहुत करीब से देखा है।

अमेरिका स्थित 'ह्यूमन राइट्स एक्टिविस्ट्स न्यूज एजेंसी', यानी एचआरएएनए के अनुसार, ईरान में पिछले प्रदर्शनों में कम से कम 6,713 लोग मारे गए, जबकि खामेनेई के विरोधियों के अनुसार, मरने वालों की वास्तविक संख्या 30,000 तक हो सकती है। प्रश्न यह कि यह क्यों हुआ? इसलिए कि लोग अपनी परेशान जिंदगी के लिए एक उम्मीद तलाशने सड़कों पर आ गए थे या इसलिए कि धर्म के सिंहासन पर बैठकर सत्ता चला रहे अली खामेनेई में अब उन्हें कोई उम्मीद नजर नहीं आ रही? शांति स्थापित करने की यह कैसी व्यवस्था है?

न्यूयॉर्क टाइम्स सहित पश्चिम के कई अखबार तेहरान और अन्य शहरों के कम से कम 19 इलाकों में सुरक्षा बलों द्वारा प्रदर्शनकारियों पर गोलियां बरसाने के 40 से अधिक वीडियो की पुष्टि कर चुके हैं। ये वीडियो दिखाते हैं कि ईरान में नागरिक विद्रोह का दमन किस व्यापक और घातक तरीके से किया गया। इस दमन ने ईरानी राज्य के संस्थागत तंत्र की भी केंचुलें उतार दीं।

बहरहाल, ऐसे दृश्य केवल हिंसा के दस्तावेज नहीं हो सकते हैं, ये एक समाज के टूटने के प्रमाण हैं। यह संकट केवल राजनीतिक नहीं है; यह नैतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक है, जिसकी जवाबदेही तय करना अंतरराष्ट्रीय समुदाय के सामने भी एक गंभीर चुनौती बना हुआ है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप पहले लोगों को धोखा देकर और अब ईरान को चेतावनी देते हुए मृत आंदोलन को ऑक्सीजन देने की कोशिश कर रहे हैं। सड़कों पर होने वाला प्रदर्शन फिलहाल शांत है अथवा ईरान में लगी इंटरनेट पाबंदी के कारण अदृश्य। पिछले प्रदर्शन में प्रदर्शनकारी सड़कों पर चीख-चीखकर कह रहे थे कि तानाशाह की मौत होगी, इस्लामी गणराज्य अब स्वीकार नहीं।

सन् 1979 की इस्लामी क्रांति ने विरोध का लगातार सामना किया और ईरान ने आंतरिक अशांति के कई दौर देखे हैं। कारण यह कि शाह को हटाने के बाद लोगों को लगा था कि राजतंत्र के खत्म होने के बाद नागरिक अधिकारों की बहाली होगी। यह यकीन नहीं था कि धार्मिक नेता सत्ता हथिया लेंगे, लेकिन ऐसा हुआ। कुछ ही समय में इस्लामी मिलिशिया ने सड़कों से लेकर लोगों के जीवन तक पर कब्जा कर लिया। महिलाओं पर तमाम तरह की पाबंदियां लगा दी गईं। मानवाधिकारों को बेखौफ होकर कुचला गया। इसलिए विरोध उठना ही था और 2009, 2017-18, 2022 और 2025 के अंत में लोग सड़कों पर उतरे।

आज की युवा पीढ़ी और शहरी मध्यवर्ग इस्लामी क्रांति को नहीं जानता, इसलिए उसका इससे कोई भावनात्मक लगाव नहीं है। यह पीढ़ी क्रांति की यादों से अधिक आधुनिक सोच से चलना चाहती है। डिजिटल माध्यमों से दुनिया के साथ जुड़ी आज की पीढ़ी यह स्वीकार नहीं कर सकती कि बड़े लोगों की संतानें हजारों-लाखों डॉलर लुटाकर विदेश में पले-पढ़ें और ईरान के आम लोगों को सलाह दी जाए कि वे तीन वक्त के बजाय दो वक्त खाना खाकर जिंदगी जिएं। नई पीढ़ी के पास वैश्विक अनुभवों के बीच उगती हुई नई अपेक्षाएं हैं और उसे अमेरिका की वेनेजुएला जैसी कार्रवाइयां प्रेरित करती हैं। हालांकि, उन्हें यह तथ्य समझते हुए ही आगे बढ़ना चाहिए कि ईरान वेनेजुएला नहीं है। जैसा कि ईरानी राजनयिक अमीर मौसवी ने कहा भी है, 'ईरान में हजारों मीटर ऊंचे पर्वत हैं। इन क्षमताओं तक पहुंचना और उसे आसानी से नुकसान पहुंचाना संभव नहीं।' यह सच है कि ईरान सुरक्षित और बेहद जटिल क्षेत्रीय संतुलनों से जुड़ा हुआ है, इसलिए उसके खिलाफ कोई भी सैन्य हस्तक्षेप पश्चिम एशिया में नए तनावों को जन्म दे सकता है।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप फिलहाल सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्रुथ के जरिये ईरान को यह धमकी देते हुए दिख रहे हैं कि उसकी ओर से एक विशाल नौसैनिक बेड़ा (मैसिव अर्मेडा) बढ़ रहा है। यदि ईरान अपने परमाणु कार्यक्रम, मिसाइल उत्पादन और विदेश नीति को लेकर समझौता नहीं करता है, तो अगला हमला पिछले वर्ष के उसके परमाणु ठिकाने पर किए गए हमलों से कहीं अधिक भीषण होगा। दूसरी तरफ, ईरानी शासन अपने पत्तों को पूरी तरह से बंद रखे हुए है। उसने बस यही संदेश दिया है कि, 'हम युद्ध के लिए तैयार हैं।' जाहिर है, पश्चिमी दुनिया असमंजस में हैं। अब देखिए, समय कौन सी करवट लेता है और इतिहास कौन सी।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

श्वानों के साथ ऐसा सुलूक बिल्कुल ठीक नहीं

यहां स्कैन करें

मोहित चौहान | गायक, संगीतकार और अभिनेता

लावारिस कुत्तों की नसबंदी से जुड़े मामले की सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने 28 जनवरी को राज्य सरकारों के रवैये पर जो टिप्पणी की, उससे यह मसला फिर से गरम हो गया है। मैं एक पशुप्रेमी हूं। साथ ही संगीतकार भी। जब छोटा था, तब संगीत ने मुझे सहारा दिया। इसने मुझे सिखाया कि खामोशी कैसे बोलती है, कैसे तड़प एक आवाज बन जाती है। मैं हिमालय की गोद में पला-बढ़ा, सरकारी नौकरी में रहे पिता के तबादलों के साथ-साथ ही मैंने यह समझ लिया कि यह दुनिया किसी की मिल्कियत नहीं, इस पर सबका बराबर का अधिकार है।

बाद के दिनों में संगीत ही मेरी जिंदगी बन गई। कुत्ते मेरे शिक्षक बन गए। शहरों और सीमाओं के निर्धारण के बहुत पहले से कुत्तों ने हमारा साथ दिया। वे जंगल से बाहर आए और हमारे साथ रह गए। भोजन या किसी फायदे के लिए नहीं, बल्कि हमारे साथ के लिए। वे हमारे साथ इसलिए रुके, क्योंकि उन्हें हम पर भरोसा था। पहाड़ों में, हम उन्हें कभी आवारा नहीं कहते थे। श्वान श्वान होते थे। वे वहीं रहते थे, जहां हम रहते थे। वहीं सोते थे, जहां हम सोते थे। वही खाते थे, जो हम खाते थे। हमारी करुणा कहीं से निर्देशित नहीं थी, बल्कि हमारी सहज प्रवृत्ति थी। हमारे धर्मग्रंथों में इसके बारे में बताया गया है। हमारे संविधान ने इसे याद रखा, बल्कि इससे भी अहम बात यह कि हमने दिल से इन्हें स्वीकार किया था।

कुत्ते इस धरती पर तब से हैं, जब हमने उनको नाम भी नहीं दिया था। वे हमारे साथ रहने आए, तो उन्हें रहने की जगह तो दे ही सकते हैं।

जब मैं शहर आया, तो कुत्ते साथ आए। कंक्रीट और विध्वंस के बीच उन्होंने मेरा साथ दिया। उन्होंने मेरे कदमों की आहट पहचानी। मैंने उनके चेहरे पहचान लिए। हम साथ-साथ बड़े हुए। कोरोना महामारी के दौरान मेरा सामाजिक दायरा बढ़ गया। भूख लॉकडाउन नहीं समझती। डर सीमाओं को नहीं जानता। आज, मैं और मेरा परिवार कॉलोनियों और हरित पार्कों में 400 से ज्यादा कुत्तों की देखभाल करते हैं।

श्वानों पर पड़ोसी चिल्लाते हैं। उन पर पत्थर फेंके जाते हैं। सर्दियों की सुबह उन पर ठंडा पानी डाला जाता है। पूंछ में पटाखे बांध दिए जाते हैं। गर्म पानी से उनकी त्वचा जलाई जाती है। उनकी आजादी का अपहरण करने के लिए वैन आती हैं। कुत्ते कानून नहीं समझते। उनके साथ जब क्रूरता की जाती है, तब वे बस मुझे ऐसी निगाह से देखते हैं, जिनमें कोई आरोप नहीं होता। उनकी चुप्पी में बस यही सवाल होता है- 'आखिर मेरा कुसूर क्या है?' मैं उनके सिर पर हाथ फेरता हूं- 'कुछ नहीं। तुम वहां सोए, जहां तुम्हें सुरक्षित महसूस हुआ। तुम भौंके, क्योंकि तुम डरे हुए थे। तुम दौड़े, क्योंकि तुम्हारे पैरों में अभी भी खुशियां जिंदा हैं।' वे मेरा यकीन करते हैं। वे हमेशा करते हैं।

दूसरी तरफ, नफरत नई-नई भाषाओं में आती है और अग्रसारित संदेशों और चिंता में छिपे डर के जरिये फैलती है। लोग अपने वातानुकूलित कमरों में बैठकर तय करते हैं कि ये कुत्ते यहां के नहीं हैं। पार्कों में उनको घुसपैठिया कहा जाता है। उनके पानी पीने के पात्र तोड़ दिए जाते, आराम करने की जगहें ध्वस्त कर दी जाती हैं। हमसे अक्सर कहा जाता है कि हम 'सरकार को यह काम क्यों नहीं सौंप देते?' आप अपनी करुणा किसी को कैसे सौंप सकते हैं? आप अपनी अंतरात्मा को कैसे 'आउटसोर्स' कर सकते हैं? हमने उनकी दुनिया छोटी कर दी, हम लगातार उनकी जगहों पर कब्जा करते गए और फिर उनकी मौजूदगी को समस्या बता दिया। आप अपनी जिम्मेदारियों से मुंह चुराकर उससे हुए नुकसान के लिए श्वानों को सजा नहीं दे सकते!

श्वान हमें सिखाते हैं कि भरोसा कैसे किया जाता है, बिना किसी गारंटी के प्यार कैसे किया जाता है? जब हम अकेले पड़ जाते हैं, हमारी कोई नहीं सुन रहा होता, उस समय वे हमारा साथ देते हैं। जब कोई हमारा साथ नहीं देता, उस समय वे हमारी रक्षा करते हैं। वे एक ऐसी दुनिया में हमारे साथी हैं, जो तेजी से निर्मम होती जा रही है। उनको छिपाया नहीं जा सकता, न मिटाया जा सकता है। हमें चुनने के लिए उन्हें सजा नहीं दी जा सकती।

कुत्ते इस धरती पर तब से हैं, जब हमने उनका कोई नाम नहीं रखा था। अगर उन्होंने हमारे साथ रहने का फैसला किया है, तो कम से कम हम उन्हें रहने लायक जगह तो दे ही सकते हैं। आइए, करुणा को हम अपनी नीति बनाएं।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

फिर पत्थर तराशने लगा

एक सुंदर जापानी कहानी है। एक आदमी चट्टानों को तराशने का काम करता था। वह कड़ी मेहनत करता, लेकिन कमाई कुछ खास नहीं होती। वह असंतुष्ट रहता था। वह आहें भरा करता। एक बार वह चिल्लाकर बोला, 'काश! मैं इतना धनवान होता कि रेशमी गद्दों पर आराम करता।' स्वर्ग से एक देवदूत आया और बोला, 'तुमने जो कहा, तुम वही हो।'

वह आदमी धनवान हो गया, उसने रेशम के गद्दे पर खुद को बैठा हुआ पाया। तभी वहां से उस देश का राजा निकला। उसके रथ के आगे और पीछे घुड़सवार चल रहे थे और सिर के ऊपर सोने का छत्र लगा हुआ था। जब उस धनवान ने यह दृश्य देखा, तो वह अपनी स्थिति से असंतुष्ट हो गया। आहें भरते हुए चिल्लाया, 'मैं राजा बनना चाहता हूं।' देवदूत फिर आया और बोला, 'तुमने जो कहा, तुम वही हो।' अचानक उस धनवान ने खुद को रथ पर पाया। उसके आगे घुड़सवार चल रहे थे, पीछे घुड़सवार चल रहे थे और ऊपर छत्र लगा हुआ था। उस दिन सूरज तमतमाता हुआ धरती को ऐसे झुलसा रहा था कि जैसे सब कुछ स्वाहा हो जाएगा। राजा को शिकायत हुई कि सूरज की शक्ति उससे अधिक है। वह असंतुष्ट हो गया। वह चिल्लाया, 'मैं सूरज होना चाहता हूं।' देवदूत आया और कहा, 'तुमने जो कहा, तुम वही हो।'

राजा सूरज बन गया। उसने धरती की सारी खर-पतवार जला दी और पृथ्वी के तमाम राजाओं के काफिलों को झुलसा दिया। फिर एक बादल आया और उसके व पृथ्वी के बीच अड़ गया। इस तरह, वह बादल बन गया।

बादल ने धरती पर मोटी-मोटी बूंदें बरसाईं, जिनसे नदियों में बाढ़ आ गई, घर बह गए, खेत तबाह हो गए। उसकी बूंदें एक चट्टान पर गिरीं, जो टस से मस न हुई। बादल क्रोधित हो गया, क्योंकि चट्टान उसकी शक्ति के सामने झुक नहीं रही थी। वह चिल्लाया, 'मैं चट्टान होना चाहता हूं।' देवदूत ने चट्टान बना दिया। तभी एक आदमी छैनी व हथौड़ी लिए हुए आया और चट्टान को तराशने लगा। चट्टान ने सोचा कि इस आदमी के पास इतनी शक्ति कैसे है, जो मेरी छाती से पत्थर तराश रहा और वह असंतुष्ट हो गया। वह चिल्लाया, 'मैं कमजोर हूं। मैं आदमी बनना चाहता हूं।' देवदूत ने फिर से उसे संगतराश बना दिया। अब भी वह कड़ी मेहनत करता और थोड़ी सी कमाई होती, मगर उसी में संतुष्ट था।

संतोष का अर्थ उस सबके प्रति बोध से भरना है, जो तुम्हारे पास है। अधिक की अपेक्षा अनुग्रह की कमी है। यदि तुम देख पाओ, तो जितना तुम्हें मिला है, उनके प्रति अहोभाव से भर जाओगे।

संतोष का अर्थ उस सबके प्रति बोध से भरना है, जो तुम्हारे पास है। यदि तुम्हें एक झलक भी मिल जाए कि कितना कुछ तुम्हें मिला हुआ है, तो क्या तुम्हारी अपेक्षा रह जाएगी? अधिक की अपेक्षा करना मात्र अनुग्रह की कमी है। यदि तुम पूरे परिप्रेक्ष्य को देख पाओ, तो जो तुम्हें मिला है, तो उसके प्रति अहोभाव से भर जाओगे।

ओशो

द्रौपदी मुर्मु | राष्ट्रपति

हमारी बेटियों और बहनों ने नामुमकिन को मुमकिन करके दुनिया को हैरान कर दिया है। कला, साहित्य और शोध के क्षेत्र में हमारी लड़कियां बहुत अच्छा करती रही हैं, अब सेना, पुलिस, विमानन और खेल जैसे क्षेत्रों में भी वे कामयाबी हासिल कर रही हैं।

अनुलोम-विलोम
व्यापार समझौता

भारत की एक बड़ी कूटनीतिक जीत

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने दूसरे कार्यकाल में भारत समेत अनेक देशों पर जब टैरिफ थोपना शुरू किया, तब भारत के चीन और यूरोपीय देशों से संबंध और मजबूत हुए। इससे भारत को आर्थिक लाभ हुआ और अमेरिका को नुकसान। अमेरिका में कीमतें आसमान छूने लगीं। बढ़ती महंगाई, टैरिफ पर अदालतों की फटकार से ट्रंप का विरोध उनके अपने देश में ही तेज हो गया। विश्व मंच पर अमेरिकी दबदबा कमजोर पड़ने से छोटे-छोटे देश भी खुलकर अमेरिका को चुनौती देने लगे। घिरते ट्रंप को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की याद आई। भारत पर लगाया गया 50 प्रतिशत टैरिफ घटाकर 18 प्रतिशत कर दिया गया। यह भारत की बड़ी कूटनीतिक जीत है। अमेरिका को अब पाकिस्तान और बांग्लादेश के साथ रिश्तों पर भी पुनर्विचार करना होगा।

अरविंद रावल, टिप्पणीकार

भारत-अमेरिका के बीच व्यापार वार्ताओं का सकारात्मक नतीजा सामने आना केवल एक समझौता भर नहीं है, बल्कि यह भारत की बदली हुई वैश्विक आर्थिक हैसियत, कूटनीतिक परिपक्वता और नीतिगत स्थिरता का प्रमाण है। टैरिफ को घटाकर 18 प्रतिशत करने के बाद जिस तरह से शेयर बाजार, कमोडिटी मार्केट और मुद्रा बाजार में उत्साह दिखा, उसने साफ कर दिया कि यह फैसला केवल कागजों तक सीमित नहीं है, बल्कि जमीनी अर्थव्यवस्था को गति देने वाला है। सेंसेक्स और निफ्टी का रिकॉर्ड तेजी के साथ बंद होना, निवेशकों की संपत्ति में एक ही दिन में करीब 12 लाख करोड़ रुपये की बढ़ोतरी और रुपये की तीन साल की सबसे बड़ी मजबूती, यह सब बाजार की उस भरोसे की अभिव्यक्ति है, जो मौजूदा सरकार की आर्थिक नीतियों में उसे दिखाई देता है। सोना और चांदी में आई तेजी यह दर्शाती है कि निवेशक इस समझौते को दीर्घकालिक रूप में सही मान रहे हैं।

कांतिलाल मांडोत, टिप्पणीकार

भारत-अमेरिका के बीच हुए करार के प्रमुख असर की बात करें, तो इससे भारत के निर्यातकों के लिए प्रतिस्पर्द्धा बढ़ेगी, यानी अब अमेरिका में भारतीय वस्तुओं पर कम शुल्क लगेगा। साथ ही इससे भारतीय स्टॉक मार्केट और रुपये को मजबूती मिली है। राजस्थान के हस्तशिल्प और इंजीनियरिंग उत्पादों को भी इससे राहत मिलेगी। कहना गलत नहीं होगा कि इससे भारत को ऊर्जा खरीद में विविधता लाने और रूसी तेल पर निर्भरता घटाने का अवसर भी मिला है। इस समझौते के राजनीतिक निहितार्थों की यदि हम यहां पर बात करें, तो इससे दोनों देशों के बीच तनाव कहीं न कहीं कम होगा।

सुनील कुमार महला, टिप्पणीकार

किसानों को नुकसान उठाना पड़ेगा

भारत-अमेरिका व्यापार समझौते से भारतीय किसानों के लिए सोयाबीन, मक्का, कपास, गेहूं और डेयरी उत्पादों के सस्ते आयात की आशंका बढ़ गई है। इससे हमारी पारंपरिक खेती पर दबाव का खतरा उत्पन्न हो गया है।

इस समझौते के नुकसान की बात करें, तो अमेरिका से कृषि उत्पादों के आयात से भारतीय कृषि उपज की मांग कम हो सकती है, जिससे किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ेगा। कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग में बढ़ोतरी से छोटे किसानों की सौदेबाजी की शक्ति कम हो जाएगी। इसी तरह, अमेरिकी बहुराष्ट्रीय बीज कंपनियों के प्रवेश से देसी बीजों के लिए संकट पैदा हो सकता है। उधर, डेयरी उत्पादों के आयात से देशी उत्पादकों की आय पर बहुत नकारात्मक असर पड़ेगा। भारतीय किसान समूहों ने कृषि बाजार खोलने के संभावित दबाव को लेकर चिंता जताई है। हालांकि, अब तक इस समझौते के अधिकांश विशिष्ट नियम या शर्तें सार्वजनिक नहीं की गई हैं, किसान नेताओं ने आगाह किया है कि इस डील के कारण किसानों को भारी आर्थिक मार झेलनी पड़ सकती है, जिससे देश भर में विरोध प्रदर्शन शुरू हो सकते हैं।

राहुल रंजन शुक्ला, टिप्पणीकार

वर्तमान में जो अमेरिकी टैरिफ लगे हैं, वे भी भारत के लगभग 86 अरब डॉलर के निर्यात में से करीब आधे हिस्से को प्रभावित कर सकते हैं। टेक्सटाइल, रत्न-आभूषण, झींगा, रसायन और मशीनरी जैसे क्षेत्रों पर विशेष दबाव बनाया गया है। इसी तरह, स्टील और एल्युमिनियम पर बढ़े शुल्क भारत के 4.56 अरब डॉलर के धातु निर्यात को महंगा बना सकते हैं। टैरिफ बढ़ने के बाद इसके शुरुआती असर सामने भी आए थे। मई से सितंबर 2025 के बीच अमेरिका को होने वाले भारतीय निर्यात में 37.5 प्रतिशत की कमी देखी गई। फार्मा निर्यात में 15.7 प्रतिशत और एल्युमिनियम में 37 प्रतिशत गिरावट दर्ज की गई। समझौते के बाद भी जोखिम बने हुए हैं। विशेषज्ञ इसे 'रणनीतिक झटका' बताते हैं, जो श्रम-प्रधान उद्योगों में रोजगार और वैश्विक आपूर्ति शृंखला में भारत की स्थिति को कमजोर कर सकता है। टैरिफ नीति भारत के लिए चेतावनी भी है। यह स्पष्ट संकेत देती है कि केवल सस्ते उत्पादन से नहीं, बल्कि उच्च गुणवत्ता, तकनीक और मजबूत घरेलू बाजार के सहारे ही भारत वैश्विक प्रतिस्पर्द्धा में टिक सकता है। यदि 'मेड इन इंडिया' को विश्वसनीय ब्रांड बनाया जाता है और निर्यात बाजारों को वैविध्यपूर्ण बनाया जाता है, तो हम इन चुनौतियों को अपनी आर्थिक शक्ति में बदल सकते हैं।

विभूति बुपक्या, टिप्पणीकार

मास्टर्स डिग्री का अब क्या मतलब

शिक्षा का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। यही कारण है कि अब ग्रेजुएशन कर रहे छात्र केवल किताबों और कक्षाओं तक सीमित नहीं हैं। वे प्रोजेक्ट, इंटर्नशिप और असली काम के अनुभव के जरिए भी सीख रहे हैं। ऐसे में उनके सामने यह सवाल है कि क्या मास्टर्स डिग्री की सार्थकता समाप्त हो रही है? किन स्थितियों में मास्टर्स डिग्री करिअर के लिए लाभ दे सकती है और बदलते रोजगार बाजार में उनके काम आ सकती है? बता रही हैं श्वेता राकेश

एक सर्वे के अनुसार भारत में उच्च शिक्षा में लगभग 12 फीसदी छात्र पोस्टग्रेजुएशन में नामांकित हैं। इसमें 21.1 प्रतिशत छात्र सामाजिक विज्ञान, 14.7 प्रतिशत छात्र विज्ञान और करीब 13 प्रतिशत वाणिज्य और प्रबंधन संबंधी विषयों में रजिस्टर्ड हैं। सर्वे यह भी बताता है कि स्नातकोत्तर स्तर पर, खासकर विज्ञान व सामाजिक विज्ञान में छात्राओं की भागीदारी बढ़ रही है। हालांकि, जब ग्रेजुएशन के दौरान ही पढ़ाई के साथ काम का अनुभव मिलने लगा है, तो छात्रों के सामने सवाल यह भी है कि क्या पीजी डिग्री करिअर में वाकई अतिरिक्त बढ़त देगी?

बेहतर वेतन का रास्ता

यह सच है कि नियोक्ताओं की प्राथमिकताएं बदल रही हैं। अब केवल डिग्री या अंक नहीं, बल्कि छात्रों के व्यावहारिक कौशल और नौकरी की तैयारी को महत्व दिया जाता है। स्नातक स्तर पर पाठ्यक्रम और अनुभव मिलने से कई छात्र नौकरी के लिए तैयार होकर निकलते हैं। पर, पेशेवरों की राय में यदि अपना कौशल बढ़ाने का मौका है, तो पोस्ट ग्रेजुएशन आपके लिए बेहतर राहें खोलता है।

मास्टर ऑफ कंप्यूटर एप्लीकेशंस डिग्री के बाद एक मल्टीनेशनल कंपनी में काम कर रहीं अनुष्का कहती हैं कि पोस्ट ग्रेजुएशन करिअर में एक कदम आगे ले जाता है, जिसका असर वेतन और भूमिका दोनों पर दिखता है। जैसे, एमसीए को ही लें। यह दीर्घकालिक करिअर ग्रोथ, बेहतर वेतन और विशेषज्ञता देता है। केवल बीसीए के बाद हायरिंग के अवसर सीमित होते हैं। वहीं, एमसीए करने के बाद हर तरह की कंपनी और भूमिकाओं के लिए योग्य हो जाते हैं। हायरिंग के मौके बढ़ते हैं। एमसीए से कोडिंग और तकनीकी नेतृत्व से जुड़ी भूमिकाओं, जैसे डाटा साइंस और एआई के लिए गहरी समझ मिलती है। बीसीए का अधिकतम सालाना पैकेज दो-ढाई लाख रुपये और एमसीए का चार लाख तक का हो सकता है। बीसीए धारकों को एमसीए के बराबर वेतन तक पहुंचने में आमतौर पर 4 साल लग जाते हैं।

प्रबंधन के छात्रों के लिए एमबीए जरूरी

एमबीए कर चुके विजय नोएडा की एक कंपनी में असिस्टेंट मैनेजर हैं और मानते हैं कि इस क्षेत्र में मास्टर्स डिग्री करिअर में आगे बढ़ने का रास्ता खोलती है। उनके अनुसार एमबीए कोर्स युवा की पेशेवर विश्वसनीयता बढ़ाता है और एग्जीक्यूटिव व मैनेजरियल भूमिकाओं के लिए अच्छी तरह तैयार करता है। एमबीए के बाद एक युवा का कौशल ऑपरेशनल कामों तक ही सीमित नहीं रहता। उसे मानव संसाधन, फाइनेंस, टैलेंट मैनेजमेंट और बिजनेस प्लानिंग जैसे क्षेत्रों में काम करने के अवसर मिलते हैं। बड़े पद और बेहतर वेतन की चाह रखने वालों के लिए यह अब भी एक मजबूत विकल्प है।

बीटेक से आगे एमटेक कब

इंजीनियरिंग जैसे तकनीकी क्षेत्रों में, खासकर उन संस्थानों में जहां पढ़ाई उद्योग की जरूरतों से जुड़ी होती है, एमटेक आज भी प्रासंगिक है। मशीन लर्निंग, डाटा इंजीनियरिंग और माइक्रोइलेक्ट्रॉनिक्स जैसी स्पेशलाइज्ड भूमिकाओं में एमटेक को अकसर बीटेक के मुकाबले बेहतर अवसर और वेतन मिलता है। कई वर्किंग प्रोफेशनल्स इसे री-स्किलिंग और करिअर बदलाव के साधन के रूप में भी देख रहे हैं।

एलएलएम के फायदे

एलएलएम अकादमिक करिअर के लिए अनिवार्य है और अभियोजन या न्यायिक सेवाओं में कार्यरत पेशेवरों को पदोन्नति और वेतन लाभ देता है। विशेषज्ञता से ज्यादा मौके बनते हैं। कॉरपोरेट लॉ, बौद्धिक संपदा (आईपीआर), अंतरराष्ट्रीय और मानवाधिकार कानून जैसी विशेषज्ञताएं छात्रों को लॉ फर्मों, कॉरपोरेट संस्थानों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में बेहतर रोजगार अवसर दिलाती हैं। दिल्ली, मुंबई और कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय तीन साल के एलएलएम कोर्स कराने वाले संस्थानों में प्रमुख हैं। यह कोर्स सिविल जज जूनियर डिवीजन जैसी न्यायिक सेवाओं के लिए समय की बचत के साथ पात्रता पाने का अच्छा विकल्प है।

व्यावहारिक भूमिकाओं में भी उपयोगी

डिजाइन इंडस्ट्री ऐसे पेशेवरों को तरजीह देती है जिनके पास अलग-अलग विषयों की समझ हो और जो तकनीक या फाइन आर्ट्स के ज्ञान को व्यावहारिक रूप से इस्तेमाल कर सकें। मास्टर्स डिग्री उम्मीदवारों को इंडस्ट्री के लिए तैयार करती है और उन्हें अधिक जिम्मेदारी वाले पदों तक पहुंचने में मदद करती है। मास्टर्स इन डिजाइन बीटेक युवाओं को तकनीकी भूमिका से आगे इंडस्ट्रियल, प्रोडक्ट, इंटरैक्शन और व्हीकल डिजाइन जैसे एप्लिकेशन-आधारित क्षेत्रों में अवसर देती है। यह डिग्री डिजाइन से जुड़ी नौकरियों में सीधे प्रवेश दिलाती है और कॉरपोरेट डिजाइन स्टूडियो व टेक कंपनियों में करिअर के बेहतर मौके खोलती है।

कुछ चुनौतियां भी

हालांकि, कुछ पीजी प्रोग्रामों की गुणवत्ता में अंतर और प्रवेश प्रक्रियाओं की चुनौतियों के कारण छात्रों के लिए यह आसान नहीं है। एनईपी-यूजीसीएफ के तहत यूजी पाठ्यक्रम में कई आसान वैकल्पिक और अतिरिक्त विषय जोड़े गए हैं। इससे कई छात्र अपने मुख्य विषय पर फोकस नहीं कर पाते। नतीजतन, पीजी के दौरान उन्हें ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है।

सरकारी नौकरियों का प्रवेश द्वार

पीजी के बाद ही नेट परीक्षा पास कर असिस्टेंट प्रोफेसर बन सकते हैं, जेआरएफ मिलने पर सरकारी फेलोशिप के साथ शोध किया जा सकता है और पीएचडी में प्रवेश भी संभव होता है। यानी शोध और अकादमिक क्षेत्र के द्वार पीजी के बाद ही खुलते हैं। वहीं, पत्रकारिता और जनसंचार में डिप्लोमा करने वाले छात्र प्रायः प्राइवेट मीडिया इंडस्ट्री तक सीमित रह जाते हैं, तो पीजी डिग्री रखने वाले छात्रों के लिए दूरदर्शन आदि सरकारी क्षेत्र के कई मौके बन जाते हैं। पीजी कोर्स की इंटर्नशिप मीडिया संस्थानों में अनुभव देती है।

विशेषज्ञ की राय

डॉ.संजीब आचार्य, सीनियर करिअर काउंसलर

स्नातक स्तर पर ही कई सरकारी और गैर-सरकारी नौकरियां उपलब्ध होने के कारण कई छात्र पोस्ट ग्रेजुएशन नहीं करते और ग्रेजुएशन के साथ अपस्किलिंग पर ध्यान देकर करिअर बनाते हैं। दूसरी ओर, जिन छात्रों का लक्ष्य पीएचडी या नेट क्वालिफाई कर शिक्षण क्षेत्र में जाना है या ट्रेनिंग, रिसर्च एंड डेवलपमेंट से जुड़ना है, उनके लिए स्नातकोत्तर डिग्री अनिवार्य होती है, क्योंकि यह डिग्री ही विषय पर मजबूत पकड़ देती है। इसके अलावा आरबीआई ग्रेड-बी (डीआर), इंडियन इकोनॉमिक सर्विस और एग्रीकल्चरल साइंटिस्ट जैसे पदों के लिए भी संबंधित विषय में मास्टर्स डिग्री होना आवश्यक है। जितना अधिक ज्ञान, उतने अधिक अवसर। हालांकि, बाजार में वास्तविक मांग तब बनती है, जब डिग्री के साथ कौशल भी हो। कुल मिलाकर, पोस्ट ग्रेजुएशन करना या न करना पूरी तरह छात्र के करिअर लक्ष्य पर निर्भर करता है।

जॉब/करिअर

■ डाक विभाग, भारत सरकार में ग्रामीण डाक सेवक की भर्तियां निकली हैं। इसके अंतर्गत ब्रांच पोस्टमास्टर, डाक सेवक आदि के पद भरे जाएंगे।
कुल पद : 28,636
अंतिम तिथि : 14 फरवरी 2026
आवेदन प्रक्रिया : ऑनलाइन। डाक विभाग की वेबसाइट **indiapost.gov.in** पर जाएं।

■ रेलवे रिक्रूटमेंट बोर्ड में लेवल-1 (7वां वेतन आयोग) के तहत असिस्टेंट, ट्रैक मेन्टेनर समेत विभिन्न पदों पर भर्तियां की जाएंगी।
कुल पद : 22195
अंतिम तिथि : 02 मार्च 2026
आवेदन प्रक्रिया : ऑनलाइन करें। वेबसाइट है : **rrbchennai.gov.in**

■ भारतीय स्टेट बैंक में सर्कल बेस्ड अधिकारी के पद रिक्त हैं। बैंक में सेवा देने के इच्छुक एवं योग्य उम्मीदवारों के पास ऑनलाइन आवेदन का मौका है।
कुल पद : 2273
अंतिम तिथि : 18 फरवरी 2026
आवेदन प्रक्रिया : एसबीआई की वेबसाइट **sbi.bank.in** पर लॉगइन करें।

■ यंत्र इंडिया लिमिटेड में ट्रेड अप्रेंटिस की रिक्तियां हैं। योग्यता मानदंडों को पूरा करने वाले अभ्यर्थी आवेदन कर सकते हैं।
कुल पद : 3979
अंतिम तिथि : 03 मार्च 2026
आवेदन प्रक्रिया : ऑनलाइन। वेबसाइट **recruit-gov.com** पर जाएं।

■ बैंक ऑफ बड़ौदा में इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी विभाग में विभिन्न पदों पर ऑनलाइन आवेदन किए जा रहे हैं।
कुल पद : 418
अंतिम तिथि : 19 फरवरी 2026
आवेदन प्रक्रिया : बैंक की वेबसाइट है : **bankofbaroda.bank.in**

■ पंचायती राज विभाग, बिहार के अंतर्गत ऑडिटर के पदों पर ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए जा रहे हैं।
कुल पद : 102
अंतिम तिथि : 26 फरवरी 2026
आवेदन प्रक्रिया : ऑनलाइन करें। आयोग की वेबसाइट है : **bpsc.bihar.gov.in**

■ यूरेनियम कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, झारखंड में अप्रेंटिस की भर्तियां की जाएंगी। ये भर्तियां फिटर, मशीनिस्ट समेत विभिन्न ट्रेड में होंगी।
कुल पद : 364
अंतिम तिथि : 28 फरवरी 2026
आवेदन प्रक्रिया : ऑनलाइन माध्यम से करना होगा। वेबसाइट है : **ucil.gov.in**

■ बिहार पुलिस रेडियो, बिहार, पटना में असिस्टेंट सब-इंस्पेक्टर के पदों पर भर्ती के लिए आधिकारिक विज्ञापन जारी किया गया है। योग्य एवं इच्छुक उम्मीदवार ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।
कुल पद : 462
अंतिम तिथि : 04 मार्च 2026
आवेदन प्रक्रिया : संबंधित वेबसाइट देखें **bpssc.bihar.gov.in**

(नोट : आवेदन करने से पहले आधिकारिक वेबसाइट से अपने स्तर पर जांच कर लें।)

भेजें अपना सवाल

करिअर या शैक्षिक कोर्स संबंधी आपके मन में कोई उलझन है या कोई जानकारी चाहते हैं, तो आप हमें अपने सवाल नीचे दी गई ईमेल पर भेज सकते हैं। हमारे विशेषज्ञ उसके जवाब देंगे। इस ईमेल आईडी का उपयोग करें
nayiraheincareer@gmail.com

सबके लिए सरकार के एआई कोर्स

एक्सपर्ट टिप्स

आशीष आदर्श
करिअर काउंसलर

■ **मैं अभी बीएससी कर रही हूं और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का कोर्स करना चाहती हूं। क्या सरकार द्वारा ऐसा कोई कोर्स कराया जाता है?**
-प्रकृति राज

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई के बढ़ते प्रभाव व रोजगार अवसरों को देखते हुए भारत सरकार द्वारा अनेक निशुल्क शॉर्ट टर्म कोर्स की घोषणा की गई है, जिन्हें कोई भी कर सकता है। यदि आप सफलतापूर्वक कोर्स पूरा करते हैं, तो आपको इसका सर्टिफिकेट भी मिलता है। सरकार द्वारा घोषित निशुल्क सर्टिफिकेट कोर्स का विवरण इस प्रकार है :

युवा एआई फॉर ऑल : भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक एंड इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी मंत्रालय के अंतर्गत चलने वाला यह कोर्स अंग्रेजी और हिंदी सहित कई अन्य भाषाओं में कराया जाता है। इस कोर्स के अंतर्गत एआई के आधारभूत सिद्धांत, इसके इस्तेमाल और यह कैसे काम करता है, ये सब शामिल हैं। लगभग 4.5 घंटे के इस कोर्स को करने पर आपको सरकारी प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है। इस कोर्स के लिए वेबसाइट **mybharat.gov.in** देखें।

स्वयं प्लस : भारत सरकार के शिक्षा विभाग के अंतर्गत स्वयं प्लस के पोर्टल पर एआई से संबंधित कई ऐसे कोर्सेस उपलब्ध हैं, जिनको आप निशुल्क कर सकते हैं। मशीन लर्निंग और एआई से संबंधित अलग-अलग विषय के 6 कोर्स उपलब्ध हैं। कोर्स सफलतापूर्वक पूरा करने पर सर्टिफिकेट भी मिलता है, जिसपर भारत सरकार की मुहर होती है। कोर्स की अधिक जानकारी के लिए वेबसाइट **swayam-plus.swayam2.ac.in** पर संपर्क करें।

स्किल इंडिया डिजिटल : भारत सरकार के स्किल डेवलपमेंट एंड एंटरप्रेन्योरशिप मिनिस्ट्री के अंतर्गत चलने वाले एआई के शॉर्ट टर्म कोर्स लोकप्रिय हैं। इनमें शुल्क और निशुल्क दोनों प्रकार के पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। विडियो कंटेंट के साथ विभिन्न कोर्स की अवधि भी अलग-अलग है। इस पोर्टल पर उपलब्ध कोर्स के लिए **skillindiadigital.gov.in** वेबसाइट पर लॉगइन करें।

■ **बीटेक और बीई में कौन सा कोर्स बेहतर है ?**
-प्रभुनाथ कुमार

दरअसल बैचलर ऑफ टेक्नोलॉजी कोर्स को ही पहले बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग के नाम से पढ़ाया जाता था। देश के कई एनआईटी संस्थानों को पहले आरईसी यानी रीजनल इंजीनियरिंग कॉलेज के नाम से जाना जाता था। जैसे कि, दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग का नाम बदलकर दिल्ली टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी कर दिया गया। नागपुर का विश्वसरैया रिजनल कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग को एनआईटी नागपुर कर दिया गया, जबकि पटना इंजीनियरिंग कॉलेज का नया नाम एनआईटी पटना हो गया। इसी प्रकार रीजनल कॉलेजों में पढ़ाया जाने वाला बीई कोर्स अब बीटेक हो गया। अतः दोनों पाठ्यक्रमों में कुछ खास फर्क नहीं है।

जॉब मंजूर करने में जल्दबाजी नहीं

नौकरी का ऑफर मिलते ही उत्साहित होना स्वाभाविक है, लेकिन इसी दौरान लिए गए निर्णय करिअर की दिशा तय करते हैं। खुशी में की गई जल्दबाजी या चूक बाद में परेशानी का कारण बन सकती है

करिअर टिप्स

किसी कंपनी की ओर से नौकरी का ऑफर मिलते ही उम्मीदवार खुशी और मानसिक राहत महसूस करता है, लेकिन यही समय सबसे ज्यादा सोच-समझकर कदम उठाने का होता है। इस पड़ाव पर छोटा सा गैर-पेशेवर व्यवहार भी आगे बड़ा असर डाल सकता है, इसलिए कुछ बातों का ध्यान रखना जरूरी है-

■ **'हां' कहें सोच-समझकर :** नौकरी के प्रस्ताव को हां कहने से पहले वेतन, जॉइन करने की तिथि, नोटिस पीरियड, बॉन्ड, नौकरी की जगह और भूमिका की शर्तें जरूर समझ लें। जल्दबाजी में दी गई सहमति बाद में परेशानी बन सकती है।

■ **कंपनियों से बात करना बंद न करें:** ऑफर मिलना अच्छा है, लेकिन जब तक ऑफर लेटर लिखित में न मिले और नियुक्ति सुनिश्चित न हो, दूसरे विकल्प खुले रखें। इसलिए, दूसरी कंपनियों से बातचीत अचानक से न छोड़ दें।

■ **मना करें, तो शालीन रहें :** किसी पुराने ऑफर को ठुकराते समय हमेशा विनम्र और स्पष्ट रहें। रूखा बर्ताव पेशेवर छवि प्रभावित कर सकता है, क्योंकि इंडस्ट्री के लोग एक-दूसरे से जुड़े होते हैं।

■ **सीखना बंद न करें :** ऑफर मिलते ही ढीला पड़ जाना आम गलती है। स्किल्स पर काम जारी रखें, नई तकनीकें सीखते रहें, ताकि पहले दिन ही पेशेवर व मजबूत छवि बने।

■ **कंपनी और टीम की जानकारी लें :** ऑफर मिलने के बाद भी कंपनी के मूल्यों और माहौल और वहां प्रगति के अवसरों को समझना जरूरी है। इससे नियुक्ति के बाद काम की जिम्मेदारियां स्पष्ट होती हैं और बेहतर शुरुआत होती है।

■ **मौखिक वादों को लिखित में पाएं :** प्रमोशन, पद में बदलाव या वेतन में बढ़ोतरी जैसी बातें अगर ऑफर लेटर में नहीं दर्ज हैं, तो उन्हें लिखित में कन्फर्म कराएं, ताकि गलतफहमी या विवाद न हो और जॉइनिंग के बाद रूपरेखा स्पष्ट हो।

■ **ज्यादा मोलभाव न करें :** नौकरी के लिए आए प्रस्ताव में अपनी बात रखनी हो, तो किसी तरह की तुलना के साथ उसे पेश न करें। शर्त ना रखें। यह बात आपके खिलाफ जा सकती है।

■ **अपना रोडमैप तैयार करें :** नौकरी मिलना और उसमें अपनी जगह बनाना, दो अलग बातें हैं। अपनी भूमिका के लिए तैयारी पूरी रखें। अपडेट रहें।

■ **डॉक्यूमेंट्स तैयार रखें:** जॉइनिंग के लिए आवश्यक डॉक्यूमेंट्स, जैसे एड्रेस प्रूफ, पहचान पत्र, मार्कशीट आदि समय पर तैयार रखें। इससे पेशेवर छवि मजबूत होती है और जॉइनिंग में किसी तरह की परेशानी नहीं होती।

-माधव श्रेष्ठ

रोजनामचा

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

मेष : मन परेशान हो सकता है। माता-पिता की सेहत का ध्यान रखें। जीवनसाथी का साथ मिलेगा। किसी मित्र के सहयोग से कारोबार में लाभ के अवसर मिल सकते हैं।

वृष : मन प्रसन्न रहेगा। आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। संतान सुख में वृद्धि होगी। परिवार में सुख-शांति रहेगी। कारोबार में भागदौड़ अधिक रहेगी। लाभ में वृद्धि होगी।

मिथुन : आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। मन प्रसन्न रहेगा। किसी मित्र के सहयोग से नौकरी के अवसर मिल सकते हैं। आय वृद्धि होगी। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा।

कर्क : मन परेशान रहेगा। आत्मसंयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखने का प्रयास करें। परिवार का साथ मिलेगा। परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं।

सिंह : मन परेशान रहेगा। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। परिवार की सेहत का ध्यान रखें। कारोबार के लिए विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। लाभ के अवसर भी मिलेंगे।

कन्या : मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। कारोबार में बदलाव के योग बन रहे हैं। किसी मित्र का सहयोग मिलेगा। लाभ के अवसर मिलेंगे।

तुला : आत्मविश्वास तो भरपूर रहेगा, परंतु मन परेशान हो सकता है। धैर्य रखें। माता-पिता की सेहत का ध्यान रखें। शैक्षिक कार्यों के लिए किसी दूसरे स्थान पर जा सकते हैं।

वृश्चिक : मन प्रसन्न रहेगा। आत्मविश्वास से भी भरपूर रहेंगे। नौकरी में अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। परिश्रम अधिक रहेगा। कठिनाइयां आ सकती हैं।

धनु : आत्मसंयत रहें। व्यर्थ के क्रोध एवं वाद-विवाद से बचें। बातचीत में भी संतुलित रहें। कारोबार में वृद्धि होगी। लाभ के अवसर मिलेंगे। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी।

मकर : मन परेशान रहेगा। संयत रहें। क्रोध के अतिरेक से बचें। परिवार का साथ मिलेगा। वाणी के प्रभाव से रुके कार्य पूर्ण होंगे। नौकरी में कार्यक्षेत्र में बदलाव हो सकता है।

कुंभ : पठन-पाठन में रुचि बढ़ेगी। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी। कारोबार में वृद्धि होगी। लाभ के अवसर मिलेंगे। भागदौड़ अधिक रहेगी। सेहत का ध्यान रखें।

मीन : मन प्रसन्न रहेगा। आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, फिर भी धैर्यशीलता बनाए रखने का प्रयास करें। नौकरी में तरक्की के अवसर मिल सकते हैं। आय में वृद्धि होगी।

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋभुकांत गोस्वामी

05 फरवरी, गुरुवार, **शक संवत् :** 16, माघ (सौर) 1947, **पंजाब पंचांग :** 23, माघ मास प्रविष्टे 2082 **इस्लाम :** 16, शब्बान, 1447, **विक्रमी संवत् :** फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी तिथि रात्रि 12.23 मिनट तक पश्चात पंचमी तिथि, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र रात्रि 10.58 मिनट तक पश्चात हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग रात्रि 12.04 मिनट तक, पश्चात धृति योग। चंद्रमा कन्या राशि में (दिन रात)

सूर्य उत्तरायण। शिशिर ऋतु। दोपहर 01.30 मिनट से अपराह्न 03 बजे तक तक राहुकालम्। गणेश चतुर्थी व्रत।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

कृपया यह बताएं कि वास्तु के अनुसार हमें छत को लेकर किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
-गौरी वर्मा, प्रयागराज

■ छत पर यदि झाड़ू रखी होती है, तो यह बरकत को खत्म करती है।
■ छत पर यदि सीलन आ रही है तो यह अनावश्यक चिंता बढ़ाती है।
■ छत पर यदि टूटा-फूटा सामान रखा है तो यह दुखों का कारण बनता है।
■ छत पर टेरेस गार्डन बनाना वास्तु के अनुसार सही नहीं होता।
■ छत पर पानी की टंकी भी कभी भी सीधे किसी भी बेडरूम के ऊपर नहीं होनी चाहिए।
■ कई लोग अपने पालतू कुत्ते को छत पर शौच करवाते हैं। ऐसा करवाना भी गलत है।

वर्ग पहेली : 8231

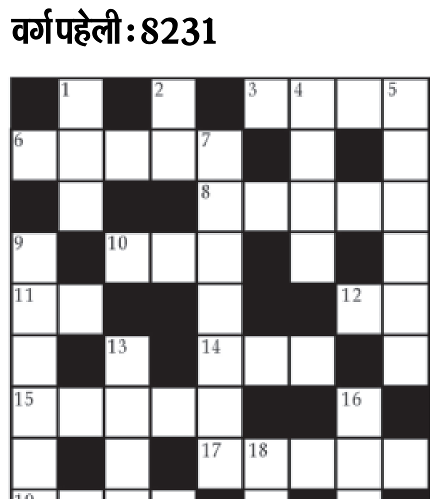

बाएं से दाएं
3. बिना पलक झपकाए; निरंतर; लगातार (4)
6. जो मन को मोहित करे; मंत्रमुग्ध करने वाला; आकर्षक; लुभावना; सुंदर (2,3)
8. रसायन शास्त्र का ज्ञाता; रसायन शास्त्र संबंधी; रसायन शास्त्र से संबंध रखने वाला (5)
10. गर्व; गौरव; महत्व; गुरुता; भारीपन (3)
11. खाल; चमड़ा; त्वचा; ढाल (2)
12. भुजंग; सांप; बादल; मेघ; हाथी (2)
14. प्रकट करना; सूचना देना; बोलना; सुनाना; आदेश (3)
15. चमकीला; भड़कीला (5)
17. प्रसिद्ध; विख्यात (5)
19. सूंड; तुलसी (4)

ऊपर से नीचे
1. मानदंड; स्तर (3)
2. झिल्ली; तल; परत; पेंदा; स्तर (2)
4. युद्ध करने के नियम; सैनिक अभ्यास; परेड (4)
5. बदनाम होना; दाग लगना; धब्बा लगना; लांछन लगना (3,3)
7. करतब करना; तिलिस्म दिखाना (4,3)
9. इच्छानुसार काम करवाना; तंग करना; परेशान करवाना (2,4)
13. चकित हो जाना; भ्रमित होना; चक्कर खाना; घूमना (4)
16. बहुत पहले का; पुरातन; प्राचीन; अप्रचलित; खराब (3)
18. एक राशि; मछली (2)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली : 8230

1 वि	त	2 र	क	■	3 सु	4 ध	बु	5 ध
रो	■	क्त	■	6 अ	■	च	■	र
7 धा	गा	■	8 द	म	नि	का	ल	ना
भा	■	9 बा	■	न	■	ल	■	■
10 स	म	र	स	■	11 मं	ग	वा	12 ना
■	■	बा	■	13 सं	■	ना	■	ज
14 उ	धा	र	मां	ग	ना	■	15 म	न
द	■	हो	■	म	■	16 पी	■	ख
17 य	था	ना	म	■	18 छ	र	ह	रा

सुडोकू : 8213

*मध्यम

				7				
		6	8			2		
	1	7			5	4	3	
		2	6		7		8	
6								4
	9		5		4	3		
	5	4	3			7	6	
		9			2	8		
				8				

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3x3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

सुडोकू : 8212

8	3	5	6	9	1	7	2	4
7	1	4	5	2	3	9	6	8
6	2	9	8	7	4	3	5	1
5	6	3	9	1	8	4	7	2
2	4	1	3	5	7	8	9	6
9	8	7	2	4	6	5	1	3
3	5	6	1	8	9	2	4	7
4	9	8	7	6	2	1	3	5
1	7	2	4	3	5	6	8	9

संपादकीय जागरण

गुरुवार, 5 फरवरी, 2026 : फाल्गुन कृष्ण - 4 वि. 2082

दायित्व का बोध कभी लक्ष्य से विमुख नहीं होने देता

विरोध करने की आदत

जैसी आशंका थी, वैसा ही हुआ। कांग्रेस को अमेरिका के साथ होने वाला व्यापार समझौता भी रास नहीं आया। जैसे ही अमेरिकी राष्ट्रपति ने भारतीय वस्तुओं पर टैरिफ 50 प्रतिशत से कम कर 18 प्रतिशत करने की घोषणा की, वैसे ही कांग्रेस ने आपत्तियां उठानी शुरू कर दीं। यह सही है कि व्यापार समझौते संबंधी ट्रंप की पोस्ट से कुछ सवाल उभर रहे थे, लेकिन इन सवालों का जवाब मांगने के स्थान पर कांग्रेस नेता इस नतीजे पर पहुंच गए कि प्रधानमंत्री मोदी मजबूरी के कारण इस समझौते पर सहमत हो गए। राहुल गांधी ने तो यह कहने में भी संकोच नहीं किया कि प्रधानमंत्री ने किसानों की मेहनत को बेच दिया। कांग्रेस को इस समझौते को लेकर बनी सहमति पर आपत्ति उठाने की इतनी जल्दी थी कि उसने न तो यह देखा कि अमेरिकी राष्ट्रपति की पोस्ट पर भारतीय प्रधानमंत्री की पोस्ट क्या कह रही है और न ही वाणिज्य मंत्री के जवाब की प्रतीक्षा की। जब वाणिज्य मंत्री ने यह स्पष्ट किया कि व्यापार समझौते में कृषि एवं डेरी क्षेत्र में भारत के हितों की सुरक्षा होगी और अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि ने भी इसकी पुष्टि कर दी तो कांग्रेस के पास कहने के लिए कुछ नहीं बचा, फिर भी उसने यह कहना शुरू कर दिया कि सरकार की ओर से इस बारे में संसद में जानकारी क्यों नहीं दी गई। हालांकि, वाणिज्य मंत्री ने उन परिस्थितियों का उल्लेख किया, जिनके चलते वे संसद में चाहकर भी बयान नहीं दे सके, लेकिन कांग्रेस को संतोष नहीं।

कांग्रेस की ओर से अमेरिका के साथ होने जा रहे व्यापार समझौते पर सवाल उठाने का सिलसिला कायम है। उसके साथ-साथ कुछ अन्य विपक्षी दल भी ऐसा ही कर रहे हैं। सामान्य समझ यह कहती है कि किसी भी समझौते या सहमति पर सवाल उठाने से पहले उसका विवरण सामने आने की प्रतीक्षा की जाए, लेकिन आज की भारतीय राजनीति में इस समझ के लिए स्थान शून्य होता जा रहा है। इसके स्थान पर विरोध के लिए विरोध का झंडा उठाने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। वैसे तो हर दल विपक्ष में रहते समय इसी प्रवृत्ति का परिचय देता है, लेकिन शायद कांग्रेस ने इसमें महारत हासिल कर ली है। इसी कारण उसकी आलोचना-निंदा चर्चा में तो आ जाती है, लेकिन वह न तो कोई प्रभाव छोड़ती है, न किसी सार्थक बहस को जन्म देती है और न ही सत्तापक्ष को अपने रुख-रवैये पर विचार को बाध्य करती है। विडंबना यह है कि चुनाव दर चुनाव पराजय के बाद भी कांग्रेस यह समझने को तैयार नहीं कि विपक्ष का काम केवल खोखली आलोचना करना या फिर सनसनीखेज आरोप उछालना भर नहीं है। सरकार के हर फैसले का हर हाल में विरोध करने की कांग्रेस की आदत इतनी अधिक बढ़ गई है कि वह तर्कों और तथ्यों से भी परे रहने लगी है।

उचित निर्णय

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में अतिक्रमण मुक्त कराई गई दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) की भूमि पर वेयर हाउस, मनोरंजन केंद्र, एम्यूजमेंट पार्क और लंदन आइ की तरह दिल्ली आइ बनाने की योजना स्वागतयोग्य है। ये भूमि अब इसलिए विकसित हो सकेगी, क्योंकि लंबे समय तक अतिक्रमण का शिकार रही भूमि के प्रति दिल्ली विकास प्राधिकरण ने गंभीरता दिखाई और उसे अवैध कब्जे से मुक्त कराया। उपराज्यपाल वीके सक्सेना की अध्यक्षता में बुधवार को हुई बैठक में इन योजनाओं पर कार्य करने का निर्णय लिया गया। इन योजनाओं से न सिर्फ दिल्ली में रहने वालों को बेहतर सुविधाएं मिलेंगी, बल्कि इससे दिल्ली विकास प्राधिकरण के राजस्व में काफी वृद्धि होगी।

> दिल्ली के विकास के लिए जरूरी है कि सरकार और निगम भी अपनी भूमि को अतिक्रमण मुक्त कराएं

दिल्ली विकास प्राधिकरण की तरह ही दिल्ली सरकार और दिल्ली नगर निगम की भी बड़ी संख्या में भूमि पर अतिक्रमण है। यही नहीं, अतिक्रमणकारियों ने राजधानी के तालाबों, जलाशयों और पार्कों पर भी कई वर्षों से कब्जा कर रखा है। जिस पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। राजधानी के विकास के लिए आवश्यक है कि दिल्ली सरकार और दिल्ली नगर निगम भी अपनी इन भूमि को अतिक्रमण मुक्त कराए। इस भूमि का दिल्ली में विकास कार्यों में इस्तेमाल किया जाए और दिल्लीवासियों को इसका लाभ मिले। साथ ही ये भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि भविष्य में सरकारी भूमि पर अतिक्रमण नहीं होने पाए।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या ट्रंप टैरिफ घटने से भारत का तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनना आसान होगा?

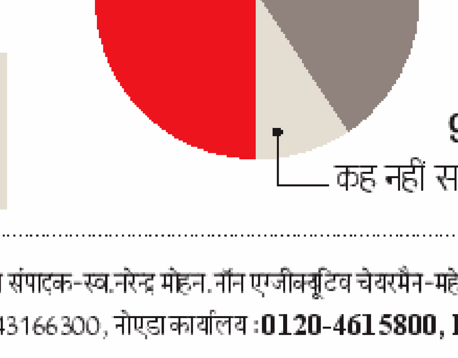

आज का सवाल

क्या खतरनाक टास्क बेस्ड मोबाइल गेम्स पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

डालर के दबदबे से सचेत होती दुनिया

शिवकांत शर्मा

सोना या कोई अन्य मुद्रा फिलहाल तो डालर का स्थान लेने की स्थिति में नहीं दिखती, पर बचाव की ढाल जरूर बन सकती है

सोने और चांदी के चढ़ते-उतरते भाव इन दिनों सुर्खियों में बने हुए हैं। विश्व स्वर्ण परिषद के अनुसार पिछले वर्ष दुनिया में 3,670 टन सोने का रिकार्ड उत्पादन हुआ था। वैश्विक उत्पादन के लगभग 40 प्रतिशत सोने की खपत अकेले चीन और भारत में होती है। हालांकि आसमान छूती कीमतों के कारण वहां भी सोने की मांग में उछाल की जगह लगभग 10-11 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई। ऐसी स्थिति में सवाल उठता है कि ऐसी खपत में हालिया 10 प्रतिशत की गिरावट के बावजूद सोने के दाम में यह उछाल क्यों आया है? इसकी सबसे बड़ी वजह अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप हैं। डालर और उसमें भुगतान के लिए जारी किए जाने वाले अमेरिकी ऋणपत्र या बांड अपनी साख की वजह से लगभग सौ वर्षों से अंतरराष्ट्रीय लेनदेन और राजकोषों के रिजर्व का प्रमुख माध्यम बने हुए थे। अमेरिका ने इन्हें हथियार बनाकर रूस को यूक्रेन से खदेड़ने की कोशिश की। रूस और उसके समर्थकों को डालर में होने वाले लेनदेन की अंतरराष्ट्रीय प्रणाली से बाहर कर दिया और यूरोपीय बैंकों में अमेरिकी बांड एवं डालर के रूप में जमा रूसी संपत्ति को फ्रीज कर दिया। ट्रंप ने सत्ता संभालते ही उनका और खुल्लम-खुल्ला प्रयोग करना और व्यापार को हथियार बनाना शुरू कर दिया। इसकी वजह से दुनिया को अमेरिका की नीयत पर संदेह होने लगा और उसकी मुद्रा और बांड की साख गिरने लगी। ट्रंप की लिबरेशन डे टैरिफ की घोषणा के समय भी अमेरिकी बांड और डालर की कीमतें गिरी थीं और सोने की कीमतों में उछाल आया था।

क्रेडिट संकट के समय सोने ने हमेशा लेनदेन के सर्वग्राह्य और भरोसेमंद माध्यम की भूमिका निभाई है। उसकी सीमित मात्रा और सर्वग्राह्यता के कारण उसके दाम भी संकटकाल को छोड़कर औसतन स्थिर ही रहे हैं। इसलिए इन दिनों विश्व भर के केंद्रीय बैंक और बहुराष्ट्रीय निवेश कंपनियों ने अपने-अपने कोषों में अमेरिकी बांड और डालरों को घटाकर उनकी जगह सोने को रखना शुरू किया है। पिछले पांच वर्षों में चीन ने अपना स्वर्ण भंडार बढ़ाने के लिए 351 टन, भारत ने 218 टन और जापान ने 81 टन सोना खरीदा है। भारत ने 51 अरब डालर के अमेरिकी बांड बेचकर उनके भंडार में 21 प्रतिशत की कटौती की है और उनकी जगह सोने का भंडार बढ़ाकर 880 टन कर लिया है जो उसके विदेशी मुद्रा भंडार का 16 प्रतिशत है। सोने की कीमतों में निरंतर उछाल का प्रमुख कारण यही है। कुछ बाजार विशेषज्ञों का तो कहना है कि सोने के दाम अगले दो-तीन साल में 30,000 रुपये प्रति ग्राम पर भी पहुंच सकते हैं।

अवधेश राजपूत

अमेरिकी बांड की साख लंबे राजकोषीय अनुशासन, राजनीतिक स्थिरता के साथ मिलने वाली निश्चित आय से बनी है। वह कर्ज की राशि डालरों में अदा करने के साथ-साथ ब्याज भी चुकाता है, जिसकी दरें बांड की अवधि पर और तत्कालीन ब्याज दरों के रुझान पर निर्भर करती हैं। आम तौर पर अमेरिकी बांड पर मिलने वाले ब्याज की दरें महंगाई की दर से अधिक ही रहती हैं। इसलिए अपने कोष में अमेरिकी बांड रखने वाले देश या कंपनी को कोष की क्रयशक्ति की सुरक्षा के साथ-साथ ब्याज के रूप में कुछ लाभ भी मिलता रहता है। यह लाभ डालर या सोना रखने से नहीं मिल सकता। यही कारण है कि विदेशी मुद्रा भंडारों में अमेरिकी बांड का अनुपात नकद डालर और सोने से अधिक रहता है। जो देश अमेरिका के साथ व्यापार में साल-दर-साल लाभ कमाते रहे हैं उनके पास अमेरिकी डालर जमा हो जाते हैं। ये देश डालरों से अमेरिकी बांड खरीद लेते हैं। व्यापार के इस चक्र की वजह से अमेरिका का राष्ट्रीय कर्ज बढ़कर उसकी जीडीपी का 126 प्रतिशत यानी सवा गुना हो चुका है, जिसका 25 प्रतिशत दूसरे देशों के पास है जिनमें यूरोप, जापान, चीन और भारत प्रमुख हैं।

जब तक अमेरिका के डालर और बांड की साख बरकरार है, तब तक अमेरिका को कर्ज के बढ़ते पहाड़ की खास चिंता नहीं है, क्योंकि 2000 के डाट-काम और 2008 के वित्तीय संकट के बाद पहले से कम हो जाने के बावजूद दुनिया भर के विदेशी मुद्रा भंडारों का 57 प्रतिशत आज भी अमेरिकी बांड और डालरों में है। हालांकि भारत इस साल ब्रिक्स देशों के आपसी व्यापार के लिए केंद्रीय बैंकों की डिजिटल मुद्राओं के विनिमय लिंक की स्थापना का प्रस्ताव रखने वाला है, परंतु विश्व व्यापार में ब्रिक्स देशों की हिस्सेदारी 25 प्रतिशत ही है और उसका श्रेय भी चीन को अधिक जाता है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की हालिया रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका और यूरोप को छोड़कर आधे से अधिक व्यापार आज भी डालर में होता है। भले रूस, चीन, भारत और दक्षिण अमेरिकी देश आपसी व्यापार अपनी मुद्राओं में करने लगें, लेकिन छोटी मुद्राओं का आपसी विनिमय और तेल, गैस एवं सोने जैसी महत्वपूर्ण चीजों का मूल्य निर्धारण डालर में ही होता है। दूसरी मुद्राओं में लेनदेन के बाद भी बहुराष्ट्रीय कंपनियों और देशों को बाजार के उतार-चढ़ाव से बचने के लिए स्वैप या हेजिंग डालर में ही करनी पड़ती है। इतना अवश्य है कि ट्रंप की व्यापार अस्त्रीकरण की नीतियों के कारण दुनिया अमेरिकी बांड और डालर पर बनी निर्भरता के प्रति सचेत हो उठी है। उससे बचने के लिए व्यापार और राजकोषीय संग्रह में अमेरिकी बांड और डालर के साथ-साथ सोने-चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं और दूसरी मुद्राओं को शामिल करने के सक्रिय प्रयास हो रहे हैं। अमेरिका की मनमानी पर लगाम लगाने के लिए अमेरिकी बांड की सुनियोजित बिकवाली का विकल्प भी है। ऐसी बिकवाली से अमेरिका को मिलने वाले कर्ज की दरों में उछाल आ सकता है, जिससे मनमानी करने वाली सरकार को पीछे हटना पड़ सकता है। ग्रीनलैंड विवाद में डेनमार्क की पेंशन कंपनी एकेडेमीकर ने अपने सारे अमेरिकी बांड बेचकर यही संकेत दिया, जिसने ट्रंप को नरम पड़ने के लिए विवश किया। यूरोप के जिस ब्रह्मास्त्र की बात हो रही थी उसमें यह विकल्प भी शामिल था, क्योंकि अमेरिकी कर्ज का करीब 20 प्रतिशत यूरोप और उसकी कंपनियों के पास ही है। कुल मिलाकर, सोना या कोई और मुद्रा डालर का स्थान लेने की स्थिति में तो नहीं दिखती, पर बचाव की ढाल जरूर बन सकती है।

(लेखक बीबीसी हिंदी के पूर्व संपादक हैं)

response@jagran.com

इस्लामिक जगत में बदलते समीकरण

आनंद कुमार

पाकिस्तान मुस्लिम दुनिया में समर्थन जुटाने की जो कोशिश कर रहा है, उससे भारत को सतर्क रहना होगा

पश्चिम और दक्षिण एशिया की सुरक्षा संरचना इस समय एक गहरे, लेकिन अपेक्षाकृत शांत परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। इसके मूल में विचारधारा से अधिक भू-राजनीतिक यथार्थ, आर्थिक गणनाएं और क्षेत्रीय शक्तियों की बढ़ती आत्मनिर्भरता है। अमेरिका की घटती सुरक्षा भूमिका, यूरोप की आंतरिक विभाजित स्थिति और वैश्विक शक्ति संतुलन में हो रहे बदलावों ने क्षेत्रीय देशों को अपनी सुरक्षा जिम्मेदारी स्वयं संभालने के लिए प्रेरित किया है। लंबे समय तक पश्चिम एशिया की सुरक्षा व्यवस्था अमेरिकी नेतृत्व और गारंटी पर आधारित रही, किंतु ट्रंप के कार्यकाल के बाद से अमेरिका की नीति अधिक लेन-देन आधारित और अनिश्चित होती गई है। इससे पारंपरिक सहयोगी देशों को यह महसूस होने लगा कि संकट के समय अमेरिकी हस्तक्षेप स्वतःस्फूर्त नहीं रहेगा। यूरोप भी यूक्रेन युद्ध, ऊर्जा संकट के कारण इस क्षेत्र में प्रभावी सुरक्षा भूमिका निभाने की स्थिति में नहीं है। ऐसे में क्षेत्रीय शक्तियां वैकल्पिक सुरक्षा व्यवस्थाओं की तलाश में हैं। इस बदलते परिदृश्य में एक धारा पाकिस्तान, सऊदी अरब और तुर्किये के बीच उभरती निकटता के रूप में दिखाई देती है, जिसे 'इस्लामिक नाटो' भी कहा जा रहा है।

पाकिस्तान लंबे समय से सऊदी अरब के साथ रक्षा सहयोग रखता आया है, किंतु हालिया वर्षों में इस संबंध को व्यापक रणनीतिक ढांचे में बदलने का प्रयास तेज हुआ है। उसकी कोशिश है कि सऊदी संसाधनों और तुर्किये की रक्षा तकनीक के साथ मिलकर एक ऐसा सुरक्षा समूह बनाया जाए, जो अमेरिका पर निर्भरता कम कर सके। हालांकि इस प्रस्तावित धुरी की मजबूती उतनी नहीं है, जितनी उसकी राजनीतिक बयानबाजी से प्रतीत होती है। पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था गंभीर संकट में है और उसकी क्षेत्रीय विश्वसनीयता सीमित होती जा रही है। भारत के साथ उसका संघर्ष केवल भू-क्षेत्रीय नहीं, बल्कि वैचारिक भी है, जिसे उसकी सैन्य स्थापना अब भी 'दो-राष्ट्र सिद्धांत' के रूप में जीवित रखे हुए है। इसी वैचारिक ढांचे के माध्यम से पाकिस्तान मुस्लिम दुनिया में समर्थन जुटाने की कोशिश करता रहा है, किंतु व्यावहारिक स्तर पर उसे बार-बार यह एहसास हुआ है कि मजहबी एकजुटता अपने आप में स्थायी रणनीतिक समर्थन की गारंटी नहीं देती। सऊदी अरब अपनी सुरक्षा आवश्यकताओं को विविधीकृत कर रहा है। उसके अमेरिका, चीन, भारत और क्षेत्रीय शक्तियों के साथ समानांतर संबंध हैं। भारत में उसके बड़े आर्थिक हित हैं। तुर्किये भी नाटो का सदस्य रहते हुए स्वतंत्र क्षेत्रीय भूमिका निभाने की कोशिश कर रहा है, जिससे इस प्रस्तावित धुरी में अंतर्विरोध पैदा होते हैं। सऊदी और तुर्किये दोनों ही मुस्लिम दुनिया में नेतृत्व की आकांक्षा रखते हैं, जो उन्हें सहयोगी से अधिक प्रतिस्पर्धी बनाती है। शायद इसीलिए उसने सऊदी और पाकिस्तान के सैन्य गठजोड़ में शामिल होने से इन्कार कर दिया।

भारत-यूएई के निरंतर प्रगाढ़ होते संबंध ● फाइल

सऊदी अरब और पाकिस्तान के समानांतर एक दूसरी रणनीतिक साझेदारी भारत, संयुक्त अरब अमीरात और इजरायल के बीच उभर रही है। यह साझेदारी साझा सुरक्षा चिंताओं, तकनीकी क्षमताओं पर आधारित है। रक्षा, खुफिया, समुद्री सुरक्षा, साइबर और अंतरिक्ष जैसे क्षेत्रों में यह सहयोग धीरे-धीरे गहराता जा रहा है। यूएई का दृष्टिकोण वैचारिक नेतृत्व के बजाय स्थिरता, प्रतिरोधक क्षमता और आर्थिक विकास पर केंद्रित है। यमन से लेकर अफ्रीका के हार्न क्षेत्र तक यूएई ने यह दिखाया है कि वह अपने सुरक्षा हितों को स्वतंत्र रूप से परिभाषित करने के लिए तैयार है, भले ही इसके लिए उसे पारंपरिक सहयोगियों से अलग रास्ता क्यों न अपनाना पड़े। इजरायल के साथ सामान्यीकरण ने यूएई को क्षेत्रीय सुरक्षा ढांचे में एक नई स्थिति प्रदान की है। भारत के लिए यह साझेदारी रणनीतिक और मनोवैज्ञानिक दोनों स्तरों पर महत्वपूर्ण है। जहां नई दिल्ली पाकिस्तान द्वारा इस्लामिक जगत में अपनी स्थिति मजबूत करने के प्रयासों को लेकर सतर्क है, वहीं वह इजरायल के साथ दशकों से चले आ रहे संबंधों को यूएई जैसे आर्थिक और रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण देश के साथ जुड़ने का भी अवसर देख रही है।

हाल में भारत और यूएई के बीच रक्षा सहयोग पर आशय पत्र इसी दिशा में एक संकेत है। इस समीकरण का विस्तार पूर्वी भूमध्यसागर तक दिखाई देता है, जहां भारत, इजरायल, ग्रीस और साइप्रस के बीच बढ़ता संवाद तुर्किये की समुद्री आक्रामकता और व्यापार मार्गों की सुरक्षा से जुड़ा है। भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे जैसे प्रयास इस रणनीतिक नेटवर्क को आर्थिक आधार भी प्रदान करते हैं। एक ओर ऐसा ढांचा है जो वैचारिक अपील और प्रतीकात्मक शक्ति पर निर्भर करता है, दूसरी ओर एक ऐसा समीकरण है, जो आर्थिक मजबूती, तकनीकी सहयोग और साझा सुरक्षा पर आधारित है। पश्चिम और दक्षिण एशिया की सुरक्षा व्यवस्था एक बहुध्रुवीय, आत्मनिर्भर और क्षेत्रीय रूप से संचालित ढांचे की ओर अग्रसर है। जो देश आर्थिक रूप से मजबूत, तकनीकी रूप से सक्षम और रणनीतिक रूप से सुसंगत हैं, वे इस नए परिदृश्य में बेहतर स्थिति में होंगे। जो केवल वैचारिक नारों और प्रतीकात्मक गठबंधनों पर निर्भर हैं, वे शायद ध्यान आकर्षित कर लें, लेकिन स्थायी शक्ति हासिल नहीं कर पाएंगे। फिर भी भारत को सतर्क रहना होगा।

(लेखक मनोहर पर्रिकर रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान में एसोसिएट फेलो हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

सत्यनिष्ठा

सत्यनिष्ठा एक ऐसा गुण है जो मनुष्य को सुंदर एवं अनुकरणीय व्यक्तित्व प्रदान करते हुए समाज में उसे एक अद्वितीय पहचान दिलाता है। सत्यनिष्ठा से आशय केवल सत्य बोलना ही नहीं है, अपितु प्रतिपल सत्य के प्रति निष्ठावान रहना, सत्य को जीवन का मूल आधार बनाना और प्रत्येक परिस्थिति में सत्य को थामे रहना है। यह एक ऐसी शक्ति है जो व्यक्ति के चरित्र को दृढ़ता प्रदान करते हुए उसे निर्भीकता के कवच से सुसज्जित करती है। तीव्र एवं अनियंत्रित प्रतिस्पर्धा नैतिकता को पीछे छोड़ देती है। ऐसे परिवेश में सत्यनिष्ठा का महत्व और अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि असत्य, छल, कपट, दिखावा और स्वार्थ जैसे अवगुणों के मध्य सत्यनिष्ठा आशा की एक किरण के समान होती है। सत्यनिष्ठा का अर्थ है-विचारों में सत्यता एवं शुचिता, व्यवहार में ईमानदारी, दायित्वों में पारदर्शिता, निर्णयों में न्याय एवं निष्पक्षता तथा अंतरात्मा से सीधा जुड़ाव।

यथार्थ ही कहा गया है कि 'सत्य एक बार जीतता है, झूठ बार-बार हारता है।' सत्यनिष्ठा की सच्ची पहचान विपरीत एवं विषम परिस्थितियों में ही होती है। सत्यनिष्ठ व्यक्ति सदैव अपने सिद्धांतों पर अडिग रहता है। सत्यनिष्ठा वह दीपक है, जो निराशा के अंधकार में मार्ग दिखाता है। यह एक बहुमूल्य नैतिक गुण है। सत्यनिष्ठ व्यक्ति सदैव समाज में सम्मान अर्जित करता है, परिवार में विश्वास पाता है और स्वयं के भीतर आत्मशांति प्राप्त करता है।

आज के समय में तो यह और आवश्यक हो गया है कि हम सत्यनिष्ठा को केवल आदर्श की भांति न मानें, बल्कि उसे अपने व्यवहार का हिस्सा बनाएं, क्योंकि सत्यनिष्ठा ही वह शक्ति है जो व्यक्ति की महानता, समाज के स्वास्थ्य एवं राष्ट्र की प्रगति का एक प्रमुख स्तंभ है। निःसंदेह सत्यनिष्ठा के मार्ग पर चलना एक दुष्कर कार्य है, किंतु एक बार इस राह पर अग्रसर होकर व्यक्ति सदा-सदा के लिए दुश्वारियों से दूर हो जाता है।

प्रेरणा अवस्थी

पाठकनामा

pathaknama@nda .jagran.com

सही दिशा में कदम

'अमेरिका के साथ एक नई शुरुआत' शीर्षक से लिखे आलेख में डा. मनिष दाभाडे ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की नीतिगत अस्थिरता को लेकर कुछ आशंकाएं व्यक्त की हैं, जिनके बारे में स्थिति विवरणों से और स्पष्ट होंगी। इसलिए इस व्यापारिक समझौते को फलीभूत होने में कुछ समय लग सकता है। इसके बावजूद यह तो कहा ही जा सकता है कि बहुप्रतीक्षित व्यापारिक समझौते की जो प्रारंभिक बाधाएं थीं, वे दूर हो गई हैं। अब भारत को बड़ा बाजार मिल गया है, जो उसे उसके एशियाई प्रतिद्वंद्वियों पर बढ़त दिलाने में मददगार साबित होगा। तेल खरीद के मामले में वेनेजुएला से आश्वस्त होने के बाद भारत का यह समझौता मील का पत्थर साबित होगा। हालांकि इस संदर्भ में रूस जैसे सामरिक सहयोगी से सक्रियता -सहभागिता घटाना उचित नहीं होगा, क्योंकि ट्रंप की नीतियों से भारत का अमेरिका पर पूर्णतः विश्वास करना कठिन है। बहरहाल इस समझौते के लिए ट्रंप राजी क्यों हुए? कहीं इसमें यूरोपीय संघ के साथ हमारा मुक्त व्यापार समझौते का अहम योगदान नहीं है? इससे साबित होता है कि अमेरिका के साथ संबंधों में हमारी रणनीतिक स्वायत्तता और दृढ़ता काम आई। इस मामले में भारत ने कूटनीतिक परिपक्वता का जरूर परिचय दिया, मगर भारत के प्रति पड़ोसियों विशेषकर पाकिस्तान एवं बांग्लादेश के मौजूदा रुख में अमेरिका का बर्ताव कम अहम नहीं है। यह भी ध्यान में रखना जरूरी है। खैर, अब वस्त्र, परिधान, रत्न, समुद्री उत्पादों को व्यापक बाजार मिलने के आसार बढ़ेंगे। बजट में जो तीन लक्ष्य रखे गए हैं उत्पादकता, क्षमता निर्माण, सबका विकास को इससे गति मिलेगी।

मुकेश कुमार मनन, पटना

भारत-अमेरिका ट्रेड डील

भारत और अमेरिका के बीच लंबे समय से चली आ रही व्यापार वार्ताओं का सकारात्मक नतीजा सामने आना केवल एक समझौता भर नहीं है, बल्कि यह भारत की बदली हुई वैश्विक आर्थिक हैसियत, कूटनीतिक परिपक्वता और नीतिगत स्थिरता का प्रमाण है। टैरिफ दरों में 50 प्रतिशत से घटकर 18 प्रतिशत तक की कटौती के बाद जिस तरह से शेयर बाजार, कमोडिटी मार्केट और मुद्रा बाजार में उत्साह दिखा, उसने साफ कर दिया कि यह फैसला केवल कागजों तक सीमित नहीं है, बल्कि जमीनी अर्थव्यवस्था को गति देने वाला है। सेंसेक्स और निफ्टी का रिकार्ड तेजी के साथ बंद होना, निवेशकों की संपत्ति में एक ही दिन में करीब 12 लाख करोड़ रुपये की बढ़ोतरी और रुपये की तीन साल की सबसे बड़ी मजबूती, यह सब बाजार की उस भरोसे की अभिव्यक्ति है, जो मौजूदा सरकार की आर्थिक नीतियों पर दिखाई देता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एनडीए संसदीय दल की बैठक में इस समझौते को धैर्य और दूरदृष्टि का परिणाम बताया। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि आलोचनाएं होती रहीं, दबाव भी था, लेकिन सरकार ने राष्ट्रीय हितों से समझौता किए बिना संयम बनाए रखा। आज उसी का यह परिणाम है कि भारत शानदार तरीके से एक मजबूत सौदे की स्थिति में खड़ा है।

कांतिलाल मांडोत, नई दिल्ली

तार-तार होती संसद की गरिमा

एक हिंदी गाने ''जाते थे जापान पहुंच गए चीन समझ गए ना'' को चार बार के लोकसभा कांग्रेस सांसद व वर्तमान नेता विपक्ष राहुल गांधी ने और ज्यादा सार्थक बना दिया। क्योंकि बोलना राष्ट्रपति के अभिभाषण पर था, लेकिन बोलने लगे 2020 में भारत-चीनी सेना के मध्य घटित गलवान घटना पर, वो भी बिना किसी प्रमाणिकता के। जिसे लोकसभा अध्यक्ष ने तीन-चार बार टोका-टाकी के बावजूद अप्रकाशित किताब, न्यूज पेपर, मैगजीन आदि को संसदीय व्यवस्थाओं, परंपराओं व लोकसभा नियामवली संख्या 349 के विरुद्ध भी बताया। लेकिन मैं ना मानूं की जिद और उस पर आखिर तक अडिग रह कर अपने आपको संसद से बड़ा दिखाने की असफल कोशिशें भी कीं। यकीनन ऐसा अजीबोगरीब व्यवहार व तुच्छ आचरण देश की संसद की गरिमा को तार-तार करता प्रतीत हुआ। इसके बाद राहुल गांधी ने संसद भवन परिसर में मीडिया के समक्ष जिस तरह से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विरुद्ध आधारहीन, व्यक्तिगत, अमर्यादित, अक्षम्य व अशोभनीय टिप्पणियां कीं, निश्चित ही यह राहुल गांधी की राजनीतिक कुंठा, मनभेद, राग-द्वेष और मोदी अंधविरोध की पराकाष्ठा से ग्रसित कुंठित राजनीति लगी। राहुल गांधी ने अनर्गल रूप से कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने भारतीय किसानों के खून-पसीने को बेच दिया, देश को भी बेचा और मोदी भारी दबाव में है। जबकि वर्तमान परिस्थिति धैर्यशील मोदी की नेतृत्व क्षमताओं को दर्शाती है।

दीपक गौतम, सोनीपत

पोस्ट

देश में इन दिनों व्यापार और टैरिफ मामलों के विशेषज्ञों की बाढ़ आई हुई है। यह भी इंटरनेट मीडिया की खुमारी का असर है। सेवियो रोड्रिगेज@PrinceArihan

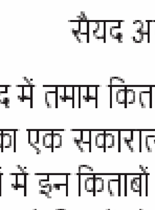

अमेरिका के साथ भारत का व्यापार समझौता पारंपरिक और औपचारिक न होकर ट्रंप के दौर की घोषणा अधिक है। इसमें पहले एलान किया जाता है और बाद में विवरण सामने आता है।

सैयद अकबरुद्दीन@AkbaruddinIndia

संसद में तमाम किताबों का हवाला दिया जा रहा है। इसका एक सकारात्मक पहलू यह भी हो सकता है कि लोगों में इन किताबों को पढ़ने की उत्सुकता जगे। कम से कम वे किताबें तो पढ़ी ही जा सकती हैं जो प्रतिबंधित नहीं हैं।

पद्मजा जोशी@PadmajaJoshi

इसे कहते हैं बैठे-बिठाए बेवजह का मुद्दा देना। पार्टियां बदलने का चलन राजनीति में आम है। ऐसे में किसी को गद्दार कहना मुनासिब नहीं। नेता-विपक्ष का काम सत्तापक्ष से सवाल करना है। ज्वलंत मुद्दे उठाना है। किसी पूर्व साथी पर व्यक्तिगत टिप्पणी करना नहीं।

उमाशंकर सिंह@umashankarsingh

जनपथ

यूजीसी की मूर्खता पर तो थे नाराज,
पर राहुल का आचरण देख आ रही लाज।
देख आ रही लाज चुनें फिर किसको भाई,
इक बाजू है कूप दूसरे बाजू खाई!
चलने दो सरकार चल रही है जो जैसी,
बहुत बड़ा है देश और छोटी यूजीसी!!

\- ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित, संपादक (दिल्ली एनसीआर)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No 50755/90 समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 36 अंक 202

संसद प्रश्नोत्तर

28 जनवरी तक बेची गईं 2,930 करोड़ की शत्रु संपत्तियां: सरकार

नई दिल्ली, प्रेट्र : भारत सरकार ने संसद में बताया कि 28 जनवरी तक 2,930 करोड़ रुपये की चल और अचल शत्रु संपत्तियां बेची हैं। शत्रु संपत्ति उन संपत्तियों को कहा जाता है जो पाकिस्तान व चीन की नागरिकता लेने वाले लोगों ने देश में मुख्यतः वर्ष 1947 से 1962 के बीच छोड़ी थीं। गृह राज्य मंत्री बंडी संजय कुमार ने राज्यसभा में एक प्रश्न के लिखित उत्तर में कहा कि शत्रु संपत्तियों का निपटान और मौद्रीकरण शत्रु संपत्ति अधिनियम, 1968 और इसके तहत बनाए गए नियमों और दिशा-निर्देशों के अनुसार किया जाता है।

सरकार की 260 वंदे भारत स्लीपर ट्रेनसेट बनाने की योजना: वैष्णव

नई दिल्ली, एएनआइ: देशभर में लंबी दूरी की यात्राओं के लिए सरकार ने वंदे भारत स्लीपर ट्रेनसेट के लिए बड़े पैमाने पर निर्माण कार्यक्रम की शुरुआत की है। इसके तहत 260 ट्रेनसेट के निर्माण की योजना है। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने लोकसभा में एक प्रश्न के जवाब में यह जानकारी दी। रेल मंत्रालय ने बताया कि वंदे भारत स्लीपर जैसी ट्रेनों के विकास की प्रक्रिया में एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, जिसमें तकनीकी नवाचार, रणनीतिक योजना और उत्पादन का समन्वय होता है ताकि सुरक्षित और आरामदायक यात्रा सुनिश्चित की जा सके।

दुरुपयोग रोकने के लिए निष्क्रिय किए गए ढाई करोड़ आधार नंबर

नई दिल्ली, प्रेट्र: सरकार ने बुधवार को लोकसभा में बताया कि भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (यूआइडीएआइ) ने दुरुपयोग रोकने के लिए ढाई करोड़ से अधिक मृत लोगों के आधार नंबर निष्क्रिय कर दिए हैं। इलेक्ट्रानिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री जितिन प्रसाद ने लोकसभा में एक प्रश्न के लिखित उत्तर में बताया कि आधार दुनिया की सबसे बड़ी बायोमीट्रिक पहचान प्रणाली है, जिसमें लगभग 134 करोड़ सक्रिय आधार धारक हैं। एक राष्ट्रव्यापी अभियान के तहत यूआइडीएआइ ने अब तक ढाई करोड़ से अधिक मृत लोगों के आधार नंबर को निष्क्रिय कर दिया है।

5.9 करोड़ फास्टैग सक्रिय : नितिन गडकरी

नई दिल्ली, प्रेट्र : केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने बुधवार को संसद में बताया कि देश भर में अब तक जारी किए गए कुल 11.86 करोड़ फास्टैग में से लगभग 5.9 करोड़ सक्रिय हैं। फास्टैग का उपयोग टोल का भुगतान के लिए किया जाता है। केंद्रीय सड़क, परिवहन और राजमार्ग मंत्री ने एक प्रश्न के लिखित जवाब में यह जानकारी दी।

पीएम सूर्यघर मुफ्त विजली योजना से 28 लाख परिवारों को हुआ फायदा

नई दिल्ली, प्रेट्र : सरकार ने बुधवार को लोकसभा में बताया कि जनवरी 2026 तक पीएम सूर्यघरः मुफ्त बिजली योजना के तहत 28 लाख से ज्यादा परिवारों को फायदा हुआ है, जिसमें केंद्र सरकार की वित्तीय सहायता के तौर पर 16 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा दिए गए हैं। नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा राज्य मंत्री श्रीपाद येसो नाइक ने एक प्रश्न के लिखित जवाब में यह बताया है।

दिल्ली में ड्रामा कर रही हैं ममता : भाजपा

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के दिल्ली दौरे और एसआइआर के विरोध को भाजपा ने बड़ा "राजनीतिक पाखंड" करार दिया है। सुप्रीम कोर्ट में ममता बनर्जी द्वारा खुद बंगाल का पक्ष रखने और एसआइआर की आड़ में लोकतंत्र को खत्म किए जाने के आरोपों पर भाजपा ने तीखा पलटवार किया है। भाजपा मुख्यालय में आयोजित संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए भाजपा प्रदेश अध्यक्ष और राज्यसभा सदस्य शमिक भट्टाचार्य एवं केंद्रीय शिक्षा राज्यमंत्री सुकांत मजूमदार ने तृणमूल कांग्रेस पर वोटर लिस्ट के शुद्धीकरण से घबराने का आरोप लगाया।

शमिक भट्टाचार्य ने कहा कि ममता चाहे जो भी कर लें, बंगाल में एसआइआर की प्रक्रिया होकर रहेगी। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि ममता बनर्जी के पास कोलकाता के भीषण अग्निकांड के पीड़ित से मिलने का समय नहीं है। लेकिन, घुसपैठियों के हितों की रक्षा के लिए दिल्ली में ड्रामा करने का समय है।

सियासी विवाद का विषय बना सैन्य निर्णय तो डगमगाएगा सेना व राजनीतिक नेतृत्व के बीच भरोसा

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : पूर्व सेना प्रमुख जनरल मनोज मुकुंद नरवणे की अप्रकाशित पुस्तक पर संसद में छिड़े संग्राम से साफ है कि अब सेना और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े मसले पर भी राजनीति भारी पड़ने लगी है। इस अप्रकाशित पुस्तक के आधार पर लोकसभा में नेता विपक्ष राहुल गांधी पूर्वी लद्दाख की कैलास रेंज में 2020 में चीनी सेना के आगे बढ़ने के दौरान फैसला सेना प्रमुख पर छोड़ने को शीर्ष सरकारी नेतृत्व की कमजोरी के रूप में पेश करने का प्रयास कर रहे हैं। जबकि सरकार इसे संसदीय मर्यादाओं के विरुद्ध और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े संवेदनशील विषय का राजनीतिकरण करने का आरोप लगा रही है। अगर हर सैन्य निर्णय राजनीतिक बहस का विषय बनाया गया तो इससे भविष्य में सेना और राजनीतिक नेतृत्व के बीच भरोसे का ताना-बाना प्रभावित हो सकता है।

पुस्तक की प्रति हाथ में लेकर बुधवार को संसद पहुंचे राहुल: नरवणे की अप्रकाशित पुस्तक का हवाला देकर राहुल गांधी जिस तरह सरकार पर सवाल उठा रहे हैं, उसका मतलब है कि सीमा पर किसी भी सैन्य कार्रवाई का फैसला वहां तैनात सैन्य कमांडर व शीर्ष सैन्य नेतृत्व नहीं, बल्कि सरकार और प्रधानमंत्री के स्तर पर होता है। राहुल इसी विमर्श को आगे बढ़ाने के लिए नरवणे की पुस्तक की प्रति हाथ में लेकर बुधवार को संसद आए। नरवणे की पुस्तक में दावा किया गया है कि 2020 में कैलास रेंज में जब चीनी सेना चार टैंक लेकर आगे बढ़ रही थी, तब उत्तरी क्षेत्र के कमांडर की सूचना के बाद सेना प्रमुख ने रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह से निर्देश मांगा था। जवाब में विलंब हुआ तो उन्होंने विदेश मंत्री एस. जयशंकर और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल को भी फोन किया था।

इसके बाद दोबारा रक्षा मंत्री को फोन किया, तो उन्होंने प्रधानमंत्री से बात करके बताया कि शीर्ष नेतृत्व ने कहा है कि जो उचित समझो, करो। राहुल का आरोप है कि जब सीमा पर गंभीर संकट की स्थिति थी, तब राजनीतिक नेतृत्व ने दो घंटे से अधिक की देरी की और अपनी जिम्मेदारी निभाने के बजाय फैसला सेना प्रमुख पर छोड़ दिया। यह राजनीतिक नेतृत्व की गंभीर कमजोरी को दर्शाता है।

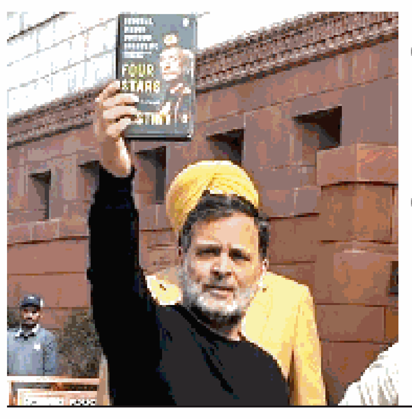

- नरवणे की किताब को आधार बना राहुल दे रहे संकेत, शीर्ष स्तर पर होता है सैन्य कार्रवाई का फैसला
- सत्ता पक्ष का तर्क- मोर्चे पर जवाब की रणनीति सेना स्तर पर तय होती है, ऐसे में उचित थे पीएम के निर्देश

नरवणे की किताब के साथ राहुल

सत्ता पक्ष इस तर्क को आधारहीन बताते हुए इसे सेना को राजनीतिक बहस में घसीटने का प्रयास बता रहा है। उसका कहना है कि मोर्चे पर चुनौतियों का जवाब कैसे देना है, इसकी रणनीति सेना के स्तर पर ही होती है। इस लिहाज से नरवणे को दी गई सलाह सेना एवं सरकार के बीच स्थापित संचालन व्यवस्था के तहत थी और सैन्य व राजनीतिक निर्णय प्रक्रिया का हिस्सा था। बेशक हमारी संघीय व्यवस्था में सेना पूर्णतः सरकार के अधीन है, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि हर सामरिक निर्णय राजनीतिक नेतृत्व ही लेता है। कई बार संकट की स्थिति में राजनीतिक नेतृत्व व्यापक नीति एवं दिशा तय करता है और जमीनी हालात के अनुसार मोर्चे पर तत्कालिक निर्णय सेना प्रमुख व उनके कमांडरों पर छोड़े जाते हैं। सत्ता पक्ष का कहना है कि प्रधानमंत्री का 'जो उचित समझो, करो' का निर्देश इसी स्थापित प्रक्रिया का हिस्सा था। इसे नेतृत्व की विफलता के रूप में पेश करना सरकार व सेना के बीच कार्य संचालन की स्थापित प्रणाली को नकारना है।

चीन की सामरिक चुनौती से निपटने की रणनीति का हिस्सा: सेना एवं राष्ट्रीय सुरक्षा को राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल करना इस दृष्टि से भी उचित नहीं है कि यदि कैलास रेंज में जमीनी हालात के अनुसार फैसला लेने की जिम्मेदारी सेना प्रमुख को दी गई थी, तो यह सामरिक-रणनीतिक विवेक का हिस्सा भी हो सकता है। ऐसे में इस पहलू को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि प्रधानमंत्री के जिस कदम को राहुल उनकी कमजोरी बता रहे हैं, वह चीन की सामरिक चुनौती से निपटने की रणनीति का हिस्सा रहा हो। बेशक अहम विषयों पर सरकार पर सवाल उठाना विपक्ष की जिम्मेदारी है, मगर राष्ट्रीय सुरक्षा, सेना और राजनीतिक जवाबदेही के बीच संतुलन बनाए रखना भी उतना ही अहम है।

'खाद्य व कृषि से जुड़े हितों का रखा गया ख्याल'

वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने अमेरिका के साथ हुए व्यापार समझौते के बारे में संसद को दी जानकारी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने बुधवार को संसद में भारत-अमेरिका व्यापार समझौते के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस ऐतिहासिक समझौते में खाद्य, कृषि और डेरी क्षेत्र में भारत की संवेदनशीलता का पूरा ख्याल रखा गया है। इस समझौते को भारत-अमेरिका संबंधों को मजबूत करने के साथ ही 2047 तक भारत को विकसित देश बनाने के लक्ष्य को गति देने वाला बताते हुए उन्होंने कहा कि यह दुनिया के दो सबसे बड़े लोकतंत्रों के बीच मजबूत जुड़ाव को दर्शाता है, जो साझा समृद्धि के लिए मिलकर काम कर रहे हैं। इस समझौते से अमेरिकी बाजार में निर्यात प्रतिस्पर्धा भी बढ़ेगी। सोमवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बीच टेलीफोन पर वार्ता के बाद व्यापार समझौते की घोषणा की गई थी।

दोनों पक्ष तकनीकी प्रक्रियाओं और कागजी कार्रवाई को अंतिम रूप देने में जुटे: रूस से तेल खरीद को लेकर लगाए जा रहे कयासों पर गोयल ने कहा, 'मैं स्पष्ट करना चाहता हूं कि जैसा सरकार ने कई बार सार्वजनिक तौर पर कहा है कि 140 करोड़ भारतीयों की ऊर्जा आवश्यकताओं की सुरक्षा सुनिश्चित करना सर्वोच्च प्राथमिकता है। वस्तुनिष्ठ बाजार परिस्थितियों और बदलते अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य के अनुरूप ऊर्जा आपूर्ति में विविधता लाना हमारी कार्यनीति का मूल आधार है। भारत की सभी कार्रवाइयां इसी को ध्यान में रखकर की जाती हैं।' गोयल ने भारत और अमेरिका की अर्थव्यवस्था को एक दूसरे का पूरक बताते हुए कहा कि जैसे-जैसे भारत विकास पथ पर बढ़ रहा है उसे ऊर्जा, विमानन, डाटा सेंटर, परमाणु ऊर्जा आदि क्षेत्रों में अपनी क्षमताओं को बढ़ाने की जरूरत है। अमेरिका इन क्षेत्रों में अग्रणी देश है, जिससे न केवल हमारी खरीद बढ़ेगी बल्कि हमारा निर्यात भी बढ़ेगा। अनुमान है कि कई क्षेत्रों में अमेरिका को भारत का निर्यात बढ़ेगा। आगे की रणनीति के बारे में गोयल ने बताया कि दोनों पक्ष अब तकनीकी प्रक्रियाओं और कागजी कार्रवाई को अंतिम रूप देने में जुटे हैं। समझौते की विस्तृत रूपरेखा इन प्रक्रियाओं के समापन के बाद शीघ्र घोषित की जाएगी। समझौते को राष्ट्र हित में बताते हुए उन्होंने कहा कि यह विकसित भारत और आत्मनिर्भर भारत दोनों को सशक्त बनाएगा।

बजट सत्र के दौरान बुधवार को लोकसभा में अपनी बात रखते केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ● एएनआइ

- कहा, 140 करोड़ भारतीयों की ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करना सर्वोच्च प्राथमिकता
- डील को 2047 में भारत को विकसित देश बनाने के लक्ष्य को गति देने वाला बताया

विपक्ष का परंपरा तोड़ने का आरोप, सभापति ने किया खारिज

वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने भारत-अमेरिका व्यापार समझौते पर संसद में ब्योरा रख दिया है, लेकिन विपक्ष इससे संतुष्ट नहीं है। बुधवार को राज्यसभा की कार्यवाही शुरू होते ही कांग्रेस के उपनेता प्रतिपक्ष प्रमोद तिवारी ने व्यवस्था का प्रश्न उठाते हुए कहा कि संसद नियम-परंपरा से चलती है। परंपरा है कि जब संसद सत्र चल रहा हो तो नीतिगत विषयों की जानकारी सबसे पहले संसद में दी जाती है। इसके बावजूद वाणिज्य मंत्री ने मंगलवार को प्रेसवार्ता कर जानकारी साझा की। लेकिन सभापति सीपी राधाकृष्णन ने व्यवस्था का यह प्रश्न यह कहते हुए खारिज कर दिया कि मंत्री स्वयं ही बुधवार को संसद में वक्तव्य रखना चाहते थे।

जयशंकर-रूबियो के बीच द्विपक्षीय संबंधों को गति देने पर बनी सहमति

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : वाशिंगटन में मंगलवार देर रात भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर और अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रूबियो के बीच हुई उच्चस्तरीय बैठक में द्विपक्षीय संबंधों से जुड़े सभी आयामों पर चर्चा हुई और संबंधों को नई गति देने की सहमति बनी। यह बैठक सोमवार को घोषित भारत-अमेरिका व्यापार समझौते के बाद दोनों देशों के बीच रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है।

इस बैठक में दुर्लभ खनिजों की खोज, खनन और प्रसंस्करण पर द्विपक्षीय सहयोग को औपचारिक रूप देने पर जोर दिया गया। दोनों पक्षों ने लोकतंत्रों के रूप में मिलकर नए आर्थिक अवसरों को खोलने और साझा ऊर्जा सुरक्षा लक्ष्यों को आगे बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया। जयशंकर बुधवार को देर रात क्रिटिकल मिनरल्स पर आयोजित एक अन्य अंतरराष्ट्रीय बैठक में भी हिस्सा लेंगे। यह बैठक अमेरिका के विदेश मंत्री की तरफ से बुलाई गई है। जयशंकर व रूबियो की बैठक में क्वाड (क्वाड्रिलेटरल सिक्योरिटी डायलाग - भारत, अमेरिका, जापान और आस्ट्रेलिया का संगठन) को प्रमुखता से उठाया गया। दोनों मंत्रियों ने क्वाड के माध्यम से द्विपक्षीय और बहुपक्षीय सहयोग को विस्तार देने की प्रतिबद्धता जताई। उन्होंने कहा कि इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में समृद्धि और स्थिरता दोनों देशों के साझा हितों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

वाशिंगटन डीसी में वहां के विदेश मंत्री मार्को रूबियो से मुलाकात करते भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर ● एएनआइ

अमेरिकी विदेश मंत्रालय की तरफ से जारी बयान के मुताबिक-'रुबियो और जयशंकर ने महत्वपूर्ण खनिजों की खोज, खनन और प्रसंस्करण पर द्विपक्षीय सहयोग को औपचारिक बनाने पर चर्चा की। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप व प्रधानमंत्री मोदी के बीच हुए व्यापार समझौते का स्वागत किया गया। दोनों नेताओं ने जोर दिया कि हमारे लोकतंत्र मिलकर नए आर्थिक अवसरों को खोलें और साझा ऊर्जा सुरक्षा लक्ष्यों को आगे बढ़ाएं।

किताब बनाम किताब के गतिरोध में फंसी लोकसभा

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : लोकसभा में बुधवार का दिन सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच तीखे टकराव, शोर-शराबे और अव्यवस्था की भेंट चढ़ गया। प्रकाशित और अप्रकाशित पुस्तकों के हवाले को लेकर शुरू हुआ विवाद इतना बढ़ गया कि सदन की कार्यवाही बार-बार स्थगित करनी पड़ी। शाम को राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव के जवाब में प्रधानमंत्री मोदी को वक्तव्य देना था, लेकिन विपक्ष की महिला सांसद बैनर लेकर उनकी सीट की ओर बढ़ गईं। इस कारण सदन की कार्यवाही दिनभर के लिए स्थगित कर दी गई और प्रधानमंत्री का वक्तव्य नहीं हो सका।

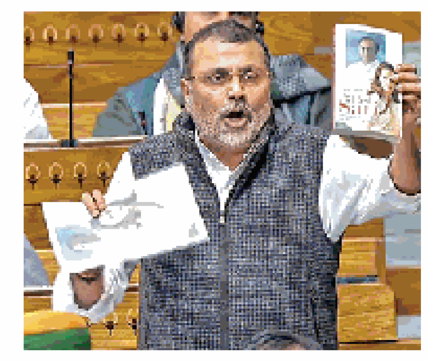

लोकसभा में बुधवार को अपने हाथों में किताब लेकर कांग्रेस पर निशाना साधते भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ● एएनआइ

कार्यवाही शुरू होते ही नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने फिर से पूर्व थल सेनाध्यक्ष एमएम नरवणे की एक अप्रकाशित पुस्तक के अंशों का हवाला देते हुए 2020 के भारत-चीन सीमा विवाद पर चर्चा करने की कोशिश की। उन्होंने इसे राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा गंभीर विषय बताया और कहा कि पुस्तक में लद्दाख घटनाक्रम से जुड़े अहम तथ्य दर्ज हैं। राहुल ने सदन में उन अंशों को उद्धृत करने की अनुमति मांगी, लेकिन स्पीकर ओम बिरला ने नियमों का हवाला देते हुए स्पष्ट किया कि किसी अप्रकाशित पुस्तक या दस्तावेज का संदर्भ सदन में नहीं दिया जा सकता। अनुमति नहीं मिलने पर राहुल ने संसद परिसर में पत्रकारों से बातचीत में उसी पुस्तक का हवाला देकर सरकार पर हमला बोला। उन्होंने आरोप लगाया कि पुस्तक में उल्लेख है कि चीन के टैंक भारतीय क्षेत्र में आने के बावजूद शीर्ष स्तर से स्पष्ट निर्देश नहीं दिए गए और प्रधानमंत्री ने 'जो उचित समझो, वह करो' कहकर जिम्मेदारी टाल दी थी। उन्होंने इसे जिम्मेदारी से बचने का उदाहरण बताया। सदन के बाहर राहुल के इस रवैये का जवाब सत्तापक्ष ने सदन के भीतर देना तय किया। जब भाजपा सदस्य निशिकांत दुबे की बारी आई तो वह पुस्तकों का ढेर लेकर खड़े हुए। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी तो अप्रकाशित पुस्तक का हवाला दे रहे हैं, जबकि उनके पास कई प्रकाशित पुस्तकें हैं। उन्होंने नेहरू समेत कांग्रेस नेताओं के नाम लेकर निजी आरोप लगाने शुरू कर दिए। आसन की ओर से उन्हें बार-बार रोका गया। किंतु वह लगातार बोलते रहे। इस पर कांग्रेस सहित पूरा विपक्ष वेल में आकर नारेबाजी करने लगा। पांच बजे सदन की बैठक फिर शुरू हुई तो विपक्ष की महिला सदस्य वेल में आ गईं। वे जैसे ही पीएम की सीट के पास पहुंची, पीठासीन अधिकारी ने कार्यवाही स्थगित कर दी।

मणिपुर में राष्ट्रपति शासन खत्म, भाजपा के नेतृत्व में बनी सरकार

इंफाल, प्रेट्र : मणिपुर में लगभग एक वर्ष से जारी राष्ट्रपति शासन समाप्त हो गया है। भाजपा नेता युमनाम खेमचंद सिंह ने बुधवार को राज्य के मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ग्रहण की। वह अनुभवी राजनेता, कुशल प्रशासक और ताइक्वांडो ब्लैक बेल्ट हैं। कुकी समुदाय के भाजपा विधायक नेमचा किपगेन और नगा पीपुल्स फ्रंट के विधायक एल. दिखो ने उपमुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ली।

राज्यपाल ने दिलाई शपथ : मणिपुर में जातीय हिंसा के कारण पिछले वर्ष नौ फरवरी को बीरेन सिंह के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने के बाद 13 फरवरी को राज्य में राष्ट्रपति शासन लगा दिया गया था। तब से यह अशांत राज्य राष्ट्रपति शासन के अधीन था। राष्ट्रपति शासन हटाए जाने के कुछ घंटों बाद बुधवार शाम यहां लोक भवन में आयोजित समारोह में राज्यपाल अजय कुमार भल्ला ने 62 वर्षीय खेमचंद को शपथ दिलाई। भाजपा के गोविंददास कोंथौजम और नेशनल पीपुल्स पार्टी के के. लोकेन सिंह ने मंत्री पद की शपथ ली। उपमुख्यमंत्री के तौर पर किपगेन ने नई दिल्ली स्थित मणिपुर भवन से वर्चुअली शपथ ली। बैठक में भाजपा के 37 में से 35 विधायकों के अलावा केंद्रीय पर्यवेक्षक तरुण चुघ, पूर्वोत्तर मामलों के प्रभारी संबित पात्रा और भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ए. शारदा देवी आदि भी शामिल हुए थे।

इम्फाल में मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के बाद युमनाम खेमचंद सिंह (बाएं) व बधाई देते राज्यपाल अजय भल्ला ● एएनआइ

नीट पीजी कट-आफ में कटौती पर सुप्रीम कोर्ट का केंद्र को नोटिस

नई दिल्ली, प्रेट्र : सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को नेशनल बोर्ड आफ एग्जामिनेशन इन मेडिकल साइंसेज (एनबीईएमएस) द्वारा नीट पीजी 2025-26 के लिए क्वालीफाइंग कट-आफ पर्सेंटाइल में भारी कटौती के फैसले को चुनौती देने वाली याचिका पर केंद्र सरकार और अन्य संबंधित पक्षों से जवाब मांगा है। जस्टिस पीएस नरसिम्हा और जस्टिस आलोक अराधे की पीठ ने केंद्र सरकार, एनबीईएमएस और राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग को नोटिस जारी किया है। देशभर में पोस्ट-ग्रेजुएट मेडिकल की 18,000 से अधिक सीटों के खाली रहने के कारण एनबीईएमएस ने क्वालीफाइंग पर्सेंटाइल में अभूतपूर्व संशोधन किया है। मामले में याचिका समाज सेवी हरिशरण देवगन और डा. सौरव कुमार सहित अन्य डाक्टरों द्वारा दायर की गई है। याचिकाकर्ताओं का तर्क है कि कट-आफ में इस तरह की कमी संविधान के अनुच्छेद 14 और अनुच्छेद 21 का उल्लंघन है।

राहुल ने बिट्टू को 'गद्दार' कहा तो मंत्री ने 'दुश्मन' बताया

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : संसद के अंदर दिखने वाली आपसी तकरार भी सामान्यतया सदन के बाहर परिसर में ही हल्की हो जाती है लेकिन बुधवार को संसद भवन के गेट पर अलग ही नजारा देखने को मिला। कांग्रेस नेता राहुल गांधी और केंद्रीय मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू के बीच उस समय सीधी भिड़ंत हो गई जब राहुल गांधी ने उन्हें 'गद्दार' दोस्त कहकर संबोधित किया तो बिट्टू ने भी उन्हें 'देश का दुश्मन' कहते हुए तीखा पलटवार किया। इस दौरान बिट्टू ने राहुल की ओर से बढ़ाया गया हाथ मिलाने से भी मना कर दिया। उधर, भाजपा ने राहुल गांधी की इस टिप्पणी को हर सिख का अपमान बताते हुए इस मामले पर लोकसभा स्पीकर से राहुल गांधी के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

हुआ यह कि केंद्रीय मंत्री बिट्टू बुधवार को जब संसद भवन के गेट से भीतर जा रहे थे, तभी वहां बजट सत्र के शेष समय के लिए निलंबित किए गए अपने सांसदों के साथ राहुल गांधी प्रदर्शन कर रहे थे। इनमें अधिकांश पंजाब के सांसद थे। उन्हें देखकर केंद्रीय मंत्री बिट्टू ने कहा -'यहां ये सब यानी निलंबित कांग्रेस सांसद ऐसे बैठे हैं जैसे उन्होंने कोई युद्ध जीत लिया हो।' इस पर राहुल ने कहा -'बात यह है कि यहां से गद्दार ठीक बगल से जा रहा है। चेहरा देखो। वह कैसा दिखता है।' यह बोलते हुए राहुल गांधी ने बिट्टू की ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा- 'नमस्ते भाई, मेरे गद्दार दोस्त। चिंता मत करो, तुम वापस (कांग्रेस में) आ जाओगे।' इसके बाद तो बिट्टू ने हाथ मिलाने से मना करते हुए राहुल गांधी की ओर इशारा कर उन्हें 'देश का दुश्मन' कहा। इस तीखे वार्तालाप के बाद बिट्टू संसद के भीतर चले गए। इस बीच, नए संसद भवन के प्रवेश द्वार पर राहुल गांधी की ओर से बिट्टू पर की गई टिप्पणी पर केंद्रीय मंत्री हरदीप पुरी ने भी तीखी प्रतिक्रिया दी और कहा कि कांग्रेस नेता ने शिष्टाचार की सभी सीमाएं पार कर दी हैं।

संसद के बजट सत्र के दौरान बुधवार को लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी से बातचीत करते केंद्रीय राज्य मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू ● प्रेट्र

बिट्टू बोले- गांधी परिवार के वंशज से कभी हाथ नहीं मिलाएगा यह सरदार : राहुल गांधी के व्यवहार को लेकर केंद्रीय मंत्री बिट्टू ने बाद में मीडिया से कहा कि वह देश के गद्दार और देश के दुश्मन हैं। यह सरदार गांधी परिवार के वंशज से कभी हाथ नहीं मिलाएगा, जो सिखों का हत्यारा है। वहीं मामले से आक्रोशित भाजपा नेताओं व कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस के अकबर रोड स्थित कार्यालय पर प्रदर्शन और नारेबाजी की।

सुप्रीम कोर्ट में दलील के दौरान ममता ने चुनाव आयोग को कहा वाट्सएप आयोग

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली: बंगाल में एसआइआर प्रक्रिया के विरोध में सीएम ममता बनर्जी की याचिका पर सुनवाई के दौरान सालिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कोर्ट को बताया कि एक और याचिका अदालत में लंबित है, जिसमें चुनाव आयोग ने जवाब दाखिल किया है। कोर्ट ने इस मामले को भी साथ में सोमवार को सुनवाई के लगाने का आदेश दिया। वहीं प्रेट्र के अनुसार, ममता ने कहा-मैं एक बंधुआ मजदूर हूं, महोदय...मैं एक साधारण परिवार से हूं। वे बंगाल को निशाना बनाकर वहां के लोगों को कुचलना चाहते हैं। सीएम ने चुनाव आयोग को वाट्सएप आयोग कहकर संबोधित किया, जो कथित तौर पर चुनाव आयोग द्वारा अधिकारियों को वाट्सएप के माध्यम से दिए जा रहे निर्देशों की ओर इशारा था।

कोर्ट में यूं चला दलीलों का दौर

ममता : पक्ष रखने की इजाजत देने के लिए मैं आभारी हूं। हमारे वकीलों ने शुरू से ही हमारा केस लड़ा। न्याय बंद दरवाजों के पीछे हो रहा है। हमें कहीं न्याय नहीं मिल रहा है। मैंने छह पत्र चुनाव आयोग को लिखे, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। मैं अपने लिए नहीं लड़ रही हूं।

सीजेआइ : राज्य का प्रतिनिधित्व करने के लिए सर्वश्रेष्ठ लीगल टीम मौजूद है, जिसमें कपिल सिब्बल, गोपाल शंकर नारायण और श्याम दीवान हैं। आपकी इस याचिका में कुछ अतिरिक्त मुद्दे उठाए गए हैं। हर समस्या का समाधान होता है। हमें समाधान पर विचार करना चाहिए।

ममता : अगर कोर्ट मुझे पांच मिनट का समय दे तो मैं कोर्ट को बताऊंगी।

सीजेआइ : हम आपको पांच मिनट नहीं, 15 मिनट का समय देंगे।

ममता : एसआइआर प्रक्रिया सिर्फ नाम हटाने के लिए है। नाम शामिल करने के लिए नहीं। विवाहित महिलाओं को ससुराल में रहने और पति के उपनाम का प्रयोग करने पर नोटिस भेजा जा रहा है। चुनाव आयोग तार्किक विसंगतियों के बारे में सुप्रीम कोर्ट के आदेश का पालन नहीं कर रहा। बंगाल के लोग इस बात से खुश हैं कि कोर्ट ने आधार कार्ड को प्रमाण पत्र के रूप में मान्यता दी है, लेकिन आयोग उसे नहीं मान रहा। अन्य दस्तावेज मांगे जाते हैं। कई जिंदा लोगों को मृत घोषित कर दिया गया है। इतनी जल्दी क्या थी? जो काम दो साल में होता, उसे तीन महीने में किया जा रहा है। उत्पीड़न की वजह से बीएलओ आत्महत्या कर रहे हैं।

सीजेआइ : कोर्ट अभी आधार के मुद्दे पर टिप्पणी नहीं कर पाएगा, क्योंकि एसआइआर की कानूनी वैधता को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर कोर्ट को फैसला सुनाना है। आधार की भी अपनी सीमा है और यह कानून में स्पष्ट है। नाम में मामूली अंतर पर चुनाव आयोग देखेगा कि यह केवल बोली के आधार पर अंतर है या कुछ और है। जो लोग मर गए हैं या माइग्रेट कर गए हैं, अयोग्य हैं...उनके नाम हटेंगे। लेकिन, कोई असली व्यक्ति नहीं छूटना चाहिए।

ममता : बीएलओ और ईआरओ नाम नहीं डिलीट कर रहा। आयोग ने 8300 माइक्रो आब्जर्वर नियुक्त किए हैं। वे बाहर के हैं। उन्हें ही नाम काटने का अधिकार दिया गया है। पहले चरण में 50 लाख से ज्यादा नाम डिलीट किए गए। फिर अब नाम में मामूली अंतर पर एक लाख से ज्यादा लोगों को नोटिस भेजा गया है।

राकेश द्विवेदी (चुनाव आयोग के वकील) : आयोग ने राज्य सरकार को कई पत्र लिखे और क्लास टू अधिकारियों की मांग की। लेकिन राज्य सरकार ने सिर्फ 80 अधिकारी उपलब्ध कराए। बाकी तृतीय श्रेणी के कर्मचारी दिए। इसलिए आयोग को माइक्रो आब्जर्वर नियुक्त करने पड़े।

ममता : सिर्फ बंगाल को निशाना बनाया जा रहा है। बीएलओ या इआरओ ही नाम डिलीट करे। माइक्रो आब्जर्वर नहीं।

सीजेआइ : हम सोमवार को फिर केस सुनेंगे। तब तक चुनाव आयोग निर्देश लेकर जवाब देगा।

29 वर्ष पहले हुगली कोर्ट में वकील के लिबास में पहुंचीं थीं ममता बनर्जी

राज्य ब्यूरो, जागरण ● कोलकाता: मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को बुधवार को सुप्रीम कोर्ट में एक याचिकाकर्ता के रूप में अपना पक्ष रखते हुए देखा गया। सफेद साड़ी और काली शाल लपेटें ममता ने जब अपनी दलीलें पेश कीं, तो बंगाल के लोगों को 29 साल पुरानी वह घटना याद आ गई जब उन्होंने वास्तव में वकील का गाउन पहनकर अदालत में जिरह की थी।

यह घटना जुलाई 1997 की है। हुगली के गुप्तीपाड़ा में रथयात्रा के दौरान पुलिस फायरिंग में एक व्यक्ति हलधर मंडल की मौत हो गई थी। तत्कालीन विपक्षी व कांग्रेस नेता ममता बनर्जी मृतक के परिवार को न्याय दिलाने के लिए खुद मैदान में उतरी थीं। जब पुलिस प्रशासन शव का गुपचुप अंतिम संस्कार करने की तैयारी में था, तब ममता ने हुगली जिला अदालत में वकील के रूप में खड़े होकर पुलिस कार्रवाई को चुनौती दी थी। जोगेश चंद्र ला कालेज से कानून की डिग्री प्राप्त ममता अक्सर कहती हैं कि वह आज भी प्रैक्टिस कर सकती हैं। 1997 में वह एक परिवार की लड़ाई लड़ रही थीं और आज 2026 में वह एसआइआर के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में खड़ी हुई हैं। हुगली के स्थानीय लोगों के लिए वह दृश्य आज भी जीवंत है जब सुश्री बनर्जी ने न्याय के लिए काला गाउन पहना था।

सुप्रीम कोर्ट परिसर से बुधवार को बाहर निकलतीं सीएम ममता बनर्जी ● प्रेट्र

कर्नाटक विधानसभा में 'वीबी-जी राम जी' के खिलाफ प्रस्ताव पारित

बेंगलुरु, प्रेट्र : कर्नाटक विधानसभा ने बुधवार को केंद्र से 'वीबी-जी राम जी' को तुरंत निरस्त करने और मनरेगा को पुनर्स्थापित करने का प्रस्ताव पारित किया, जबकि विपक्षी भाजपा और उसके सहयोगी जद (एस) ने सदन से वाकआउट किया। यह प्रस्ताव मुख्यमंत्री सिद्दरमैया द्वारा मंगलवार को प्रस्तुत किया गया था, जिसे बुधवार को सदन ने स्वीकार कर लिया।

प्रस्ताव में कहा गया है कि 'वीबी-जी राम जी' अधिनियम, जिसे केंद्र द्वारा "एकतरफा" रूप से लागू किया गया है, "संघीयता के मूल सिद्धांतों और ग्रामीण लोगों के आजीविका के अधिकार के लिए हानिकारक" है। विपक्ष के नेता आर.अशोक ने कहा कि भाजपा सत्तारूढ़ कांग्रेस द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव का विरोध करती है। जअशोक ने प्रस्ताव की प्रति फाड़ दी और इसे विधानसभा में फेंक दिया। भाजपा ने कर्नाटक विधानसभा के अंदर एक रात का आंदोलन किया, जो बुधवार को जारी रहा।

चिंतन

बच्चों की मोबाइल गतिविधियों पर अभिभावक रखें पैनी नज़र

आज के डिजिटल युग ने बच्चों की दुनिया को जितना आसान बना दिया है, उतना ही जटिल भी कर दिया है। मोबाइल फोन, टैबलेट और इंटरनेट आज बच्चों की पढ़ाई, मनोरंजन और संवाद का अहम हिस्सा बन चुके हैं, लेकिन यही तकनीक जब नियंत्रण से बाहर हो जाती है, तो बच्चों के मानसिक, शारीरिक और सामाजिक विकास के लिए गंभीर खतरा बन जाती है। ऐसे में माता-पिता की भूमिका केवल मोबाइल दिलाने तक सीमित नहीं रह जाती, बल्कि बच्चों की डिजिटल गतिविधियों पर सतर्क निगरानी रखना उनकी जिम्मेदारी बन जाती है। आजकल साफ तौर पर देखा जा रहा है कि अत्यधिक स्क्रीन टाइम बच्चों में चिड़चिड़ापन, एकाग्रता में कमी, नींद की समस्या और सामाजिक अलगाव को जन्म दे रहा है। लंबे समय तक मोबाइल पर गेम खेलने या सोशल मीडिया पर सक्रिय रहने वाले बच्चे परिवार और दोस्तों से कटने लगते हैं। वे वास्तविक दुनिया की गतिविधियों से दूरी बना लेते हैं, जिससे उनका भावनात्मक और सामाजिक विकास प्रभावित होता है। यही वजह है कि विशेषज्ञ लगातार सलाह दे रहे हैं कि बच्चों के लिए स्क्रीन टाइम की स्पष्ट और सख्त सीमा तय की जाए। हाल ही में गाजियाबाद में तीन सगी बहनों की आत्महत्या की घटना ने पूरे समाज को झकझोर दिया। 12, 14 और 16 साल की इन बच्चियों को कोरियाई लवर गेम की लत थी। बताया गया कि वे स्कूल तक छोड़ चुकी थीं और हर गतिविधि एक साथ करती थीं। सुसाइड नोट में लिखा गया "सॉरी मम्मी-पापा, गेम नहीं छोड़ पाएंगे।" यह घटना एक कड़वी सच्चाई को उजागर करती है कि डिजिटल लत किस हद तक बच्चों को अपनी गिरफ्त में ले सकती है। ऐसे में माता-पिता के लिए सबसे पहला कदम है समय सीमा निर्धारित करना। बच्चों के मोबाइल उपयोग के लिए प्रतिदिन का समय फिक्स होना चाहिए। इसके साथ-साथ गूगल फैमिली लिंक जैसे पेरेंटल कंट्रोल ऐप्स का इस्तेमाल कर स्क्रीन टाइम को सीमित किया जा सकता है और यह जाना जा सकता है कि बच्चे मोबाइल पर क्या देख रहे हैं। निगरानी के साथ-साथ संवाद भी उतना ही जरूरी है। बच्चों को केवल डांटना या मोबाइल छीन लेना समाधान नहीं है। खुलकर बातचीत करने से बच्चे अपनी समस्याएं साझा करते हैं और गलत डिजिटल कंटेंट से दूर रहने के लिए खुद को तैयार करते हैं। बच्चों को मोबाइल से दूर रखने का सबसे कारगर तरीका है उन्हें बेहतर विकल्प देना। आउटडोर खेल, किताबें, संगीत, चित्रकला और अन्य रचनात्मक गतिविधियां बच्चों के लिए न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि उनके व्यक्तित्व विकास में भी सहायक हैं। जब बच्चों को सकारात्मक और रोचक विकल्प मिलते हैं, तो वे खुद-ब-खुद मोबाइल से दूरी बनाने लगते हैं। आज सबसे बड़ा खतरा मोबाइल पर खेले जाने वाले कुछ ऑनलाइन गेम्स से जुड़ा है। ब्लू व्हेल चैलेंज, मोमो चैलेंज, कोरियाई लवर गेम, पबजी और ब्लैकआउट चैलेंज जैसे टास्क-बेस्ड गेम्स बच्चों को मानसिक रूप से इतना प्रभावित कर देते हैं कि वे जानलेवा कदम उठाने तक के लिए प्रेरित हो जाते हैं। मोमो चैलेंज डर और धमकी के जरिए बच्चों को जानलेवा काम करने को मजबूर करता है। चोकिंग गेम और ब्लैकआउट चैलेंज जैसी चुनौतियां भी सोशल मीडिया के जरिए फैल रही हैं। अगर समय रहते हम सतर्क हो गए, तो कई मासूम जिंदगियों को बचाया जा सकता है।

भारत-अमेरिका डील
महेन्द्र तिवारी

भारत और अमेरिका के बीच हाल में हुए व्यापारिक समझौते ने केवल दो देशों की नीतियों को ही नहीं बदला, बल्कि वैश्विक राजनीति के समीकरणों को भी नई दिशा दी है। जिस अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने कार्यकाल के दौरान आयात शुल्क को हथियार बनाकर पूरी दुनिया को चेतावनी दी थी, वही ट्रंप अचानक भारत के मामले में नरम पड़ते दिखाई दिए। जिन शुल्कों को उन्होंने पहले पचास प्रतिशत तक पहुंचा दिया था, उन्हें घटाकर अठारह प्रतिशत पर लाना कोई सामान्य फैसला नहीं था। आने वाले वर्षों में भारत और अमेरिका के बीच सहयोग और गहरा हो सकता है। उभरती तकनीकों, रक्षा उत्पादन और निवेश के क्षेत्रों में नए रास्ते खुलेंगे।

वैश्विक राजनीति को मिली नई दिशा

भारत और अमेरिका के बीच हाल में हुए व्यापारिक समझौते ने केवल दो देशों की नीतियों को ही नहीं बदला, बल्कि वैश्विक राजनीति के समीकरणों को भी नई दिशा दी है। जिस अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्डट्रंप ने अपने कार्यकाल के दौरान आयात शुल्क को हथियार बनाकर पूरी दुनिया को चेतावनी दी थी, वही ट्रंप अचानक भारत के मामले में नरम पड़ते दिखाई दिए। जिन शुल्कों को उन्होंने पहले पचास प्रतिशत तक पहुंचा दिया था, उन्हें घटाकर अठारह प्रतिशत पर लाना कोई सामान्य फैसला नहीं था। यह बदलाव न तो अचानक हुआ और न ही एकतरफा दबाव का परिणाम था। इसके पीछे भारत की एक सधी हुई, दूरदर्शी और संतुलित कूटनीति काम कर रही थी, जिसने अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश को भी बातचीत की मेज पर सम्मान के साथ बैठने को मजबूर कर दिया। ट्रंप की राजनीति हमेशा आक्रामक रही है। उनका मानना रहा कि आर्थिक दबाव के जरिए ही किसी देश को झुकाया जा सकता है। सत्ता में आते ही उन्होंने चीन के साथ व्यापार युद्ध छेड़ दिया और उसी क्रम में भारत को भी निशाने पर लिया। भारत पर यह आरोप लगाया गया कि वह विदेशी वस्तुओं पर बहुत अधिक कर लगाता है और अमेरिकी कंपनियों को उचित अवसर नहीं देता। इसी सोच के तहत भारत को विशेष व्यापारिक सुविधा की सूची से बाहर कर दिया गया, जिससे भारतीय निर्यातकों को भारी नुकसान उठाना पड़ा। इस फैसले से दवाइयों, कपड़ों, रत्नों और कृषि उत्पादों पर अतिरिक्त बोझ पड़ा और भारत के लिए अमेरिकी बाजार कठिन हो गया। भारत ने इस दबाव को चुपचाप स्वीकार नहीं किया। उसने जवाबी कदम उठाए और अमेरिका से आने वाले कई उत्पादों पर कर बढ़ा दिए। इससे अमेरिका के किसान और उद्योगपति प्रभावित हुए। बादाम, सेब और अन्य कृषि उत्पादों के निर्यात पर असर पड़ा। यह संकेत साफ था कि भारत केवल सुनने वाला देश नहीं है, बल्कि अपने हितों की रक्षा करना जानता है। इसके बावजूद भारत ने टकराव की भाषा नहीं अपनाई। उसने संवाद के दरवाजे खुले रखे और यही उसकी सबसे बड़ी ताकत साबित हुई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विदेश नीति का मूल आधार संतुलन रहा है। न तो किसी के आगे झुकना और न ही अनावश्यक टकराव। इसी नीति के तहत भारत ने अमेरिका के साथ रणनीतिक सहयोग बढ़ाया। सुरक्षा, रक्षा उत्पादन, तकनीक और निवेश के क्षेत्र में साझेदारी को मजबूत किया गया। भारत ने यह संदेश स्पष्ट रूप से दिया कि वह केवल एक बाजार नहीं, बल्कि भरोसेमंद साझेदार है। अमेरिका की बड़ी कंपनियों को भारत में निवेश के अवसर दिए गए, उत्पादन को बढ़ावा देने वाली योजनाओं के माध्यम से उद्योगों को आकर्षित किया गया और नौकरशाही अड़चनों को कम करने की दिशा में ठोस कदम उठाए गए। इन सभी प्रयासों का असर तब दिखा जब ट्रंप ने खुद स्वीकार किया कि प्रधानमंत्री मोदी से बातचीत के बाद उन्होंने अपने रुख पर पुनर्विचार किया। यह कोई साधारण फोन वार्ता नहीं थी, बल्कि वर्षों की रणनीति और विश्वास का परिणाम थी। ट्रंप जैसे नेता, जो आमतौर पर सार्वजनिक रूप से किसी की प्रशंसा नहीं करते, उन्होंने मोदी को प्रभावशाली और सम्मानित नेता बताया। यह बदलाव केवल शब्दों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि नीतियों में भी दिखाई दिया। नए व्यापारिक

समझौते के तहत भारत और अमेरिका दोनों ने एक दूसरे को राहत दी। भारत ने कुछ कृषि उत्पादों पर शुल्क कम करने का संकेत दिया, जबकि अमेरिका ने भारतीय इस्पात, कपड़ा और दवा उद्योग को बड़ी राहत दी। इससे भारत के निर्यात को बढ़ावा मिलेगा और लाखों लोगों के रोजगार सुरक्षित होंगे। दवा उद्योग के लिए यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि भारतीय दवाइयाँ सस्ती और प्रभावी मानी जाती हैं और अमेरिका में उनकी मांग लगातार बढ़ रही है। इस पूरे घटनाक्रम में एक बड़ा सवाल यह भी उठा कि क्या अमेरिका से बढ़ती नजदीकी का असर भारत के रूस के साथ संबंधों पर पड़ेगा। यह सवाल इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यूक्रेन युद्ध के बाद रूस से सस्ता तेल खरीदने के कारण भारत पश्चिमी देशों की आलोचना के केंद्र में रहा है। भारत ने अपने राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देते हुए रूस से तेल खरीद जारी रखी, जिससे उसे अरबों रुपये की बचत हुई और ऊर्जा सुरक्षा मजबूत हुई। अमेरिका ने इस पर असंतोष जरूर जताया, लेकिन कोई ठोस प्रतिबंध नहीं लगाया। रूस की ओर से भी यह स्पष्ट किया गया कि भारत के साथ उसके संबंधों में कोई बदलाव नहीं आया है। रूसी नेतृत्व ने कहा कि भारत एक भरोसेमंद रणनीतिक साझेदार है और दोनों देशों का सहयोग आगे भी जारी रहेगा। रक्षा क्षेत्र में चल रही परियोजनाएं, मिसाइल प्रणालियों की आपूर्ति और सैन्य सहयोग पर कोई असर नहीं पड़ेगा। यह प्रतिक्रिया इस बात का प्रमाण है कि भारत ने अपनी कूटनीति में संतुलन बनाए रखा है और किसी एक खेमे में खुद को सीमित नहीं किया है। आज़ादी के बाद से ही भारत ने गुटनिरपेक्षता और रणनीतिक स्वायत्तता का रास्ता चुना है। भारत अपने फैसले स्वयं करता है, दबाव में नहीं। अमेरिका के साथ व्यापारिक समझौता भी इसी सोच का परिणाम है। इसमें न तो आत्मसमर्पण है और न ही टकराव, बल्कि आपसी लाभ का रास्ता है।

इस समझौते का असर केवल भारत और अमेरिका तक सीमित नहीं रहेगा। वैश्विक अर्थव्यवस्था में भी इसके सकारात्मक संकेत दिखाई देंगे। जब दो बड़ी अर्थव्यवस्थाएं सहयोग का रास्ता चुनती हैं, तो बाजारों में स्थिरता आती है। निवेशकों का भरोसा बढ़ता है और विकास को गति मिलती है। भारत के लिए यह अवसर है कि वह खुद को विश्व उत्पादन केंद्र के रूप में स्थापित करे और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में अपनी भूमिका मजबूत करे। हालांकि चुनौतियां अभी भी मौजूद हैं। डिजिटल कर, बौद्धिक संपदा अधिकार और आंकड़ों की सुरक्षा जैसे मुद्दों पर मतभेद बने हुए हैं। भारत को सावधानी से आगे बढ़ना होगा ताकि घरेलू हितों की अनदेखी न हो। विदेशी कंपनियों को अवसर देते समय यह सुनिश्चित करना होगा कि देश के कानूनों और संप्रभुता से कोई समझौता न हो। राजनीतिक दृष्टि से भी यह समझौता महत्वपूर्ण है। इससे यह संदेश जाता है कि भारत अब केवल प्रतिक्रिया देने वाला देश नहीं, बल्कि वैश्विक नीतियों को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। प्रधानमंत्री मोदी की विदेश नीति की यह एक बड़ी परीक्षा थी, जिसमें वे सफल दिखाई देते हैं। ट्रंप का नरम रुख इस बात का संकेत है कि भारत की बात अब सुनी जाती है। आने वाले वर्षों में भारत और अमेरिका के बीच सहयोग और गहरा हो सकता है। उभरती तकनीकों, रक्षा उत्पादन और निवेश के क्षेत्रों में नए रास्ते खुलेंगे। साथ ही रूस के साथ ऊर्जा और रक्षा सहयोग भी जारी रहेगा। भारत दोनों शक्तियों के साथ अपने हितों के अनुसार संबंध बनाए रखेगा। अंततः यह कहानी बदलती दुनिया में समझदारी भरी कूटनीति की है। यह दिखाती है कि शोर मचाने से नहीं, बल्कि संवाद और संतुलन से बड़े फैसले लिए जाते हैं। भारत ने यही रास्ता चुना है और यही उसकी सबसे बड़ी ताकत बनकर उभर रहा है।

(लेखक स्वतंत्र स्तंभकर हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया **haribhoomi@gmail.com** पर दे सकते हैं।

विचार
राजीव श्रीवास्तव

चित्रोत्पला फिल्म सिटी : सपना बड़ा है, शुरुआत संवेदनशील होनी चाहिए

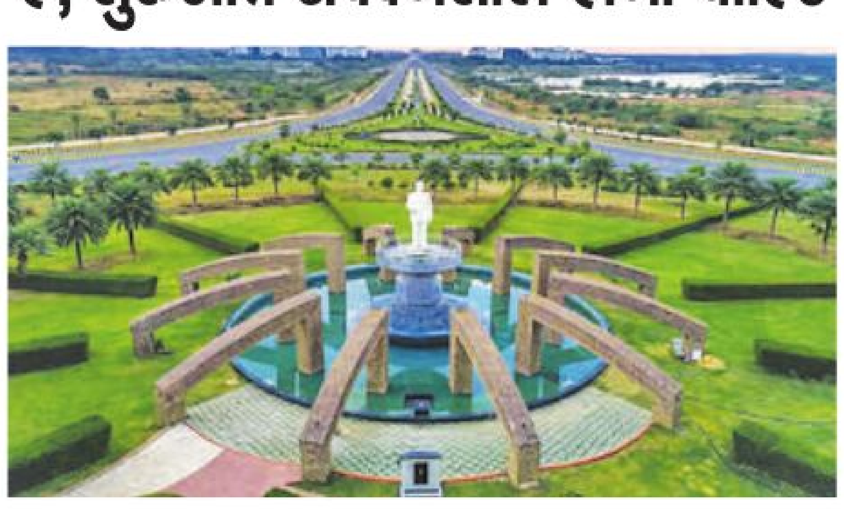

छत्तीसगढ़ में चित्रोत्पला फिल्म सिटी का निर्माण राज्य के सांस्कृतिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ है। यह परियोजना न केवल फिल्म निर्माण से जुड़ी है, बल्कि इससे छत्तीसगढ़ की कला, संस्कृति और रचनात्मक पहचान को राष्ट्रीय मंच मिलने की संभावना भी जुड़ी हुई है। ऐसे में इस परियोजना की हर शुरुआत, हर प्रतीक और हर निर्णय का सांस्कृतिक अर्थ भी होता है। भूमिपूजन कार्यक्रम के दौरान सामने आया विवाद इसी संवेदनशीलता की ओर संकेत करता है, जिसे केवल औपचारिक प्रतिक्रिया देकर टालना उचित नहीं होगा।

जब अपनी ही जमीन पर कलाकार हाशिये पर हों

यदि छत्तीसगढ़ के नाम पर बन रही फिल्म सिटी के पहले सार्वजनिक आयोजन में स्थानीय कलाकार, रंगकर्मी और छत्तीसगढ़ी सिनेमा से जुड़े लोग स्वयं को उपेक्षित महसूस करें, तो यह केवल एक आयोजन की त्रुटि नहीं, बल्कि सोच में आई दूरी का संकेत है। बॉलीवुड कलाकारों के कट-आउट और प्रतीकों के बीच छत्तीसगढ़ की अपनी सांस्कृतिक उपस्थिति का कमजोर दिखना यह प्रश्न खड़ा करता है कि— क्या हम विकास की दौड़ में अपनी जड़ों को पीछे छोड़ते जा रहे हैं?

संस्कृति आयोजन नहीं, सहभागिता मांगती है

अपने प्रशासनिक अनुभव के आधार पर मैं यह स्पष्ट रूप से कहना चाहता हूँ कि संस्कृति विभाग का कार्य केवल कार्यक्रम आयोजित करना नहीं होता, बल्कि कलाकारों के आत्मसम्मान और भागीदारी को सुनिश्चित करना होता है। कलाकार मंच नहीं मांगते, वे यह महसूस करना चाहते हैं कि— वे इस परियोजना का हिस्सा हैं,

केवल दर्शक नहीं। यदि चित्रोत्पला फिल्म सिटी वास्तव में छत्तीसगढ़ की है, तो उसकी पहली तस्वीर में छत्तीसगढ़ी कलाकारों की केंद्रीय भूमिका स्वाभाविक होनी चाहिए थी।

सरकार की मंशा और ज़मीनी अपेक्षाएं

सरकार और आयोजन से जुड़े पक्षों ने यह कहा है कि सभी को साथ लेकर चलने की मंशा है और किसी को जानबूझकर नजरअंदाज नहीं किया गया। इस आश्वासन का स्वागत किया जाना चाहिए।

लेकिन यह भी उतना ही जरूरी है कि आने वाले समय में—स्थानीय कलाकारों की निर्णायक भागीदारी

छत्तीसगढ़ी फिल्मों और रंगमंच के लिए ठोस नीति प्रशिक्षण, प्रोत्साहन और मंच के स्थायी प्रावधान

स्पष्ट रूप से दिखाई दें। क्योंकि सांस्कृतिक विश्वास शब्दों से नहीं, कार्यवाही से बनता है।

चित्रोत्पला : नाम के साथ जिम्मेदारी

चित्रोत्पला केवल एक आधुनिक फिल्म सिटी का नाम नहीं है। यह छत्तीसगढ़ की उस सांस्कृतिक स्मृति का प्रतीक है, जहाँ लोककला, शिल्प और रचनात्मकता पीढ़ियों से जीवित रही है। इस नाम के साथ यह जिम्मेदारी भी जुड़ी है कि फिल्म सिटी की आत्मा स्थानीय हो और दृष्टि वैश्विक।

अंततोगत्वा मैं यह कहना चाहता हूं कि....

चित्रोत्पला फिल्म सिटी छत्तीसगढ़ के लिए एक ऐतिहासिक अवसर है। लेकिन यदि इसकी नींव में संवेदनशीलता और संवाद की कमी रही, तो भव्य संरचनाएं भी सांस्कृतिक रूप से अधूरी रह जाएंगी। आलोचना को विरोध नहीं, समय रहते मिला संकेत समझना चाहिए। क्योंकि संस्कृति में संकेतों की अनदेखी, सबसे महंगी भूल होती है।

(पूर्व आयुक्त, संस्कृति विभाग, छत्तीसगढ़ शासन)

ईश्वर की प्राप्ति ही तो जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य है

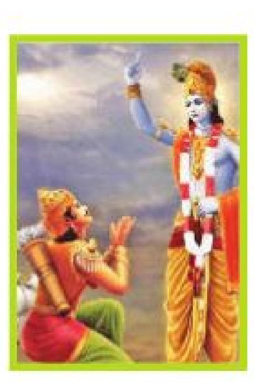

संकलित
दर्शन

गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने ईश्वर प्राप्ति के तीन -ज्ञान, कर्म तथा भक्ति मार्ग बताए हैं। ज्ञान मार्ग में सांख्य की सहायता से मनुष्य तर्क-वितर्क द्वारा तत्व ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश करता है, परंतु अक्सर तर्क-वितर्क में वह अपने मार्ग से भटक जाता है। कर्म मार्ग में भी मनुष्य को निष्काम भाव से कर्म करना होता है। अपने कर्म को ईश्वर को समर्पित करना पड़ता है। इसलिए इसमें भी भटकने की पूरी संभावना होती है। वहीं भक्ति मार्ग में वह अपने आप को पूर्णतया ईश्वर भक्ति में समर्पित कर देता है। वह स्वयं को विचलित नहीं करता है। इसलिए भक्ति मार्ग में ईश्वर प्राप्ति की पूरी संभावना होती है। इन तीनों मार्गों पर चलकर सफल होने के लिए मनुष्य को अष्टांग योग के पहले दो चरणों को जीवन में अपनाना जरूरी है। यह हैं यम और नियम। यम में सत्य, अहिंसा, ब्रह्माचर्य, अस्तेय और अपरिग्रह आते हैं। सत्य शब्द से तात्पर्य है सत्यता का जीवन में हर समय पालन करना। अहिंसा केवल जीव हिंसा से ही संबंधित नहीं है, इसमें दूसरों की भावनाओं को आहत नहीं करना भी आता है। अस्तेय का अर्थ है चोरी न करना और अपरिग्रह से तात्पर्य है कि आवश्यकता से ज्यादा किसी वस्तु या धन का संग्रह न करना। वहीं नियम में शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर-प्राणिधान आते हैं। शौच से मतलब मन की सफाई होता है। इसके लिए मनुष्य को स्वाध्याय को अपनाना चाहिए। यम और नियम को जीवन में अपनाने के लिए सर्वप्रथम ज्ञानेंद्रियों पर नियंत्रण करना जरूरी है।

आखिर कर्म ही महान है

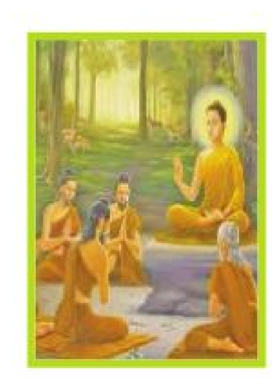

संकलित
प्रेरणा

एक बार बुद्ध एक गांव में अपने किसान भक्त के यहां गए। शाम को किसान ने उनके प्रवचन का आयोजन किया। बुद्ध का प्रवचन सुनने के लिए गांव के सभी लोग उपस्थित थे, लेकिन वह भक्त ही कहीं दिखाई नहीं दे रहा था। गांव के लोगों में कानाफूसी होने लगी कि कैसा भक्त है कि प्रवचन का आयोजन करके स्वयं गायब हो गया। प्रवचन खत्म होने के बाद सब लोग घर चले गए। रात में किसान घर लौटा। बुद्ध ने पूछाः कहां चले गए थे? गांव के सभी लोग तुम्हें पूछ रहे थे। किसान ने कहा, दरअसल प्रवचन की सारी व्यवस्था हो गई थी, पर तभी अचानक मेरा बैल बीमार हो गया। पहले तो मैंने घरेलू उपचार करके उसे ठीक करने की कोशिश की, लेकिन जब उसकी तबीयत ज्यादा खराब होने लगी तो मुझे उसे लेकर पशु चिकित्सक के पास जाना पड़ा। अगर नहीं ले जाता तो वह नहीं बचता। आपका प्रवचन तो मैं बाद में भी सुन लूंगा। अगले दिन सुबह जब गांव वाले पुनः बुद्ध के पास आए तो उन्होंने किसान की शिकायत करते हुए कहा, यह तो आपका भक्त होने का दिखावा करता है। प्रवचन का आयोजन कर स्वयं ही गायब हो जाता है। बुद्ध ने उन्हें पूरी घटना सुनाई और फिर समझाया, उसने प्रवचन सुनने की जगह कर्म को महत्व देकर यह सिद्ध कर दिया कि मेरी शिक्षा को उसने बिल्कुल ठीक ढंग से समझा है। उसे अब मेरे प्रवचन की आवश्यकता नहीं है। मैं यही तो समझाता हूं कि अपने विवेक और बुद्धि से सोचो कि कौन सा काम पहले किया जाना जरूरी है।

तोतों का जोड़ा

मोरीगांव के पोबितोरा वाइल्डलाइफ सैंक्चुअरी में बुधवार को टूरिस्ट हाथी की सवारी करते हुए।

आज की पाती

उचित खानपान व जीवनशैली की जरूरत

कैंसर से बचने और इसके बारे में लोगों में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से पिछले कुछ वर्षों से दुनियाभर में विश्व कैंसर दिवस, 4 फरवरी को मनाया जाता आ रहा है। दुनिया में ही नहीं, बल्कि हमारे देश में भी इसके मरीजों की संख्या बढ़ी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार हमारे देश में कैंसर के मरीज तेजी से बढ़ रहे हैं। कुछ समय पहले हमारे देश में 11 लाख से ज्यादा कैंसर के नए मामले सामने आए, जबकि 7 लाख 84 हजार 800 लोगों की मौत कैंसर से हुई। हमारे देश में कैंसर के बढ़ते आंकड़े चिंताजनक है। अगर इसके लिए जल्दी से जल्दी चिंतन नहीं किया गया और गंभीरता नहीं दिखाई गई तो यह हमारे देश के लिए और भी मुसीबत बन सकता है। उचित खानपान व जीवनशैली की जरूरत है।

- राकेश गुप्ता, रायगढ़

ट्रेंड

ऐतिहासिक व्यापार समझौता

भारत और अमेरिका के बीच हुआ ऐतिहासिक व्यापार समझौता देश और विशेषकर हमारे राजस्थान के लिए प्रगति के नए द्वार खोलने वाला है। इस कदम से ज्वेलरी, हैंडीक्राफ्ट, गारमेंट और स्टोन इंडस्ट्री के लिए वैश्विक बाजार के द्वार खुलेंगे, जिससे निर्यात में वृद्धि होगी।

- भजनलाल, सीएम, राजस्थान

सवालों का जवाब दे केंद्र

केंद्रीय भाजपा सरकार विपक्ष नेता राहुल गांधी द्वारा उठाए गए सवालों से क्यों डर रही है? सरकार को सदन के सदस्यों के सवालों का जवाब देने और राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक हितों से जुड़े मामलों पर स्पष्टता प्रदान करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

- एम.के. स्टालिन, सीएम, तमिलनाडु

दिल्ली असुरक्षित क्यों

दिल्ली में सिर्फ 15 दिन में 807 लोग गायब हो गए, ये हालात सामान्य नहीं, बेहद डराने वाले हैं। राजधानी में लोगों की सुरक्षा भगवान भरोसे छोड़ दी गई है। दिल्ली में हर स्तर पर बीजेपी के पास पूरी ताकत है, फिर भी दिल्ली इतनी असुरक्षित क्यों है ?

-अरविंद केजरीवाल, पूर्व सीएम, नई दिल्ली

जनता के लिए हानिकारक

ये डील नहीं, ढील है। भाजपा की उल्टी गणित से जनता फिर पूछ रही है : जीरो बड़ा या अठारह, इस देश में कोई भी डील जो 70 फीसदी कृषि आधारित जनता के लिए हानिकारक है वो कभी लाभकारी साबित नहीं हो सकती है।

- अखिलेश यादव, सांसद, सपा

करंट अफेयर

जिल बाइडन के पूर्व पति पर पत्नी की हत्या का आरोप

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति जो बाइडन की पत्नी जिल बाइडन के पूर्व पति पर दिसंबर के अंत में डेलावेयर स्थित घर में अपनी पत्नी की हत्या करने का आरोप लगाया गया है। अधिकारियों ने मंगलवार को एक प्रेस विज्ञप्ति में यह जानकारी दी। विलमिंगटन निवासी विलियम स्टीवेन्सन (77) का जिल बाइडन से वैवाहिक रिश्ता 1970 से 1975 तक चला था। डेलावेयर के अटॉर्नी जनरल की प्रवक्ता कैरोलिन हैरिसन ने फोन पर बातचीत में पुष्टि की कि स्टीवेन्सन, जिल बाइडन के पूर्व पति हैं। पूर्व राष्ट्रपति और भूतपूर्व प्रथम महिला के कार्यालय के प्रवक्ता द्वारा ईमेल के माध्यम से दिए गए जवाब के अनुसार, जिल बाइडन ने टिप्पणी करने से इनकार कर दिया। हत्या के आरोप में सोमवार को गिरफ्तार किए जाने के बाद पांच लाख अमेरिकी डॉलर की जमानत राशि जमा करने में विफल रहने के कारण स्टीवेन्सन जेल में ही है। उन पर 28 दिसंबर को 64 वर्षीय लिंडा स्टीवेन्सन की हत्या का आरोप है। विज्ञप्ति के अनुसार, रात 11 बजे के बाद घरेलू विवाद की सूचना पर पुलिस को घर बुलाया गया और उन्होंने बैठक कक्ष में एक महिला को बेहोश पाया। लिंडा स्टीवेन्सन के शोक संदेश के मुताबिक, वह व्यवसाय करती थी और उन्हें परिवार-उन्मुख मां और दादी बताया गया है।

ऑफ बीट

आधा अरब क्षुद्रग्रह सूर्य की परिक्रमा कर रहे

क्षुद्रग्रह हमारे सौर मंडल के निर्माण के बाद बचे चट्टानों के टुकड़े हैं। चार मीटर से अधिक व्यास वाले लगभग आधा अरब क्षुद्रग्रह सूर्य की परिक्रमा करते रहते हैं, जो हमारे सौर मंडल से लगभग 30 किलोमीटर प्रति सेकंड की गति से गुजरते हैं – लगभग पृथ्वी के समान गति से। ज्यादातर मामलों में, सबसे छोटे क्षुद्रग्रह पृथ्वी के वायुमंडल से टकराने पर काफी हद तक टूट जाते हैं, और सतह तक भी नहीं आ पाते हैं। जब एक छोटा क्षुद्रग्रह (या उल्कापिंड, क्षुद्रग्रह से छोटी वस्तु) पृथ्वी के वायुमंडल से टकराता है, तो यह एक चमकीला 'आग का गोला' बन जाता है – एक शूटिंग स्टार या उल्का का एक बहुत लंबे समय तक चलने वाला और उजला संस्करण। यदि वस्तु का कोई बचा हुआ टुकड़ा जमीन से टकराता है, तो उसे उल्कापिंड कहा जाता है। अधिकांश वस्तु वायुमंडल में जल जाती है। प्रति वर्ष एक बार, औसतन, चार मीटर का क्षुद्रग्रह पृथ्वी की सतह से टकराता है। यदि आपने उस सतह क्षेत्र को दोगुना कर दिया, तो आपको प्रति वर्ष दो मिलेंगे। पृथ्वी की त्रिज्या 6,400 किमी है। दोगुने सतह क्षेत्रफल वाले एक गोले की त्रिज्या 9,000 किमी है। तो, प्रति वर्ष लगभग एक बार, चार मीटर का क्षुद्रग्रह पृथ्वी की सतह के 2,600 किमी के भीतर आएगा – 9,000 किमी और 6,400 किमी के बीच का अंतर।

अपने विचार

हरिभूमि कार्यालय

टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-42422221 पर या सीधे मेल से **aapkepatra.haribhoomi@gmail.com** पर भेज सकते हैं।

खबर संक्षेप

टाटा पावर का लाभ मामूली बढ़कर 1,194 करोड़ रुपये

नई दिल्ली। टाटा पावर का चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही में एकीकृत शुद्ध लाभ मामूली रूप से बढ़कर 1,194 करोड़ रुपये हो गया। राजस्व में कमी के बावजूद कंपनी के मुनाफे में यह बढ़त दर्ज की गई है। पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही (अक्टूबर-दिसंबर) में कंपनी को 1,188 करोड़ रुपये का एकीकृत शुद्ध लाभ हुआ था।

बजाज फिनसर्व का शुद्ध लाभ 2,229 करोड़ रुपये पर स्थिर

नई दिल्ली। बजाज फिनसर्व का चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही में एकीकृत शुद्ध लाभ लगभग स्थिर रहा और यह 2,229 करोड़ रुपये दर्ज किया गया। पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में कंपनी को 2,231 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ हुआ था। कंपनी ने बुधवार को शेयर बाजार को दी जानकारी में अक्टूबर-दिसंबर 2025 तिमाही के वित्तीय नतीजों की जानकारी दी। आलोच्य तिमाही में बजाज फिनसर्व की कुल आय बढ़कर 39,708 करोड़ रुपये हो गई।

वित्त मंत्रालय ने कहा, बजट में की गई घोषणा, विदेशी कंपनियों को निश्चितता प्रदान करेगी

भारत में डेटा सेंटर स्थापित करने वाली विदेशी कंपनियों पर कोई कर जोखिम नहीं

एजेंसी ⏭ नई दिल्ली

वैश्विक स्तर पर क्लाउड सेवाएं प्रदान करने वाली विदेशी कंपनियों को 20 साल की कर छूट देने का बजट प्रस्ताव केवल उन्हीं कंपनियों पर लागू होगा, जिन्होंने भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय की ओर से अधिसूचित डेटा सेंटर स्थापित किया है। ऐसे मामलों में इन विदेशी कंपनियों की वैश्विक आय पर भारत में कर लगाए जाने का कोई जोखिम नहीं होगा।

वित्त मंत्रालय के सूत्रों ने बुधवार को यह जानकारी दी। सूत्रों ने कहा कि बजट की यह घोषणा उन विदेशी कंपनियों को भी निश्चितता प्रदान करेगी, जो भारत में डेटा सेंटर से क्लाउड सेवाएं और खरीद सेवाएं प्राप्त करने के कारोबार में हैं। सूत्रों ने कहा, '' अब भारतीय डेटा सेंटर वैश्विक क्लाउड इकाइयों को आत्मविश्वास के साथ अपनी सेवाएं दे सकते हैं क्योंकि इन वैश्विक इकाइयों को भारतीय डेटा सेंटर का उपयोग करने पर किसी कर जोखिम की आशंका नहीं रहेगी।

क्लाउड सेवाएं प्रदान करने वाली कंपनियों को मिलेगा फायदा

15 प्रतिशत का सुरक्षित मुनाफा उपलब्ध कराया गया

भारतीय डेटा सेंटर विदेशी कंपनी की संबद्ध इकाई (कॉस्ट-प्लस सेंटर) हालांकि जहां है, वहां 15 प्रतिशत का सुरक्षित मुनाफा (सेफ हार्बर) उपलब्ध कराया गया है। सूत्रों के अनुसार, विदेशी क्लाउड सेवा इकाइयों के लिए कर उपचार समान रहेगा, चाहे डेटा सेंटर भारतीय स्वामित्व का हो या वैश्विक इकाई की अनुषंगी कंपनी हो। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने अपने 2026-27 के बजट में घोषणा की थी कि जो भी विदेशी कंपनी भारत से डेटा सेंटर सेवाओं का उपयोग कर वैश्विक ग्राहकों को क्लाउड सेवाएं प्रदान करती हैं, उसे 2047 तक कर छूट दी जाएगी।

सेवा ली जाने वाली कंपनी भारतीय होनी चाहिए

दूसरी शर्त यह है कि भारत में जिस डेटा सेंटर कंपनी से सेवाएं ली जा रही हैं, वह एक भारतीय कंपनी हो। तीसरी शर्त यह है कि डेटा सेंटर इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा अधिसूचित हो। विदेशी कंपनी का भारतीय उपयोगकर्ताओं को सेवाएं एक भारतीय 'रीसेलर' इकाई (जो कि एक भारतीय कंपनी हो) के माध्यम से प्रदान करना चौथी शर्त है।

कंपनियों के वैश्विक आय पर भारत में नहीं लगेगा कर

वित्त मंत्रालय के सूत्रों ने कहा, '' इस आधार पर विदेशी कंपनियों की वैश्विक आय पर भारत में कर लगाए जाने का कोई जोखिम नहीं होगा।'' प्रस्ताव को स्पष्ट करते हुए सूत्रों ने बताया कि कर छूट का लाभ उठाने के लिए विदेशी कंपनी को चार आवश्यक शर्तें पूरी करनी होंगी। पहली शर्त यह है कि विदेशी कंपनी अधिसूचित हो।

350 विदेशी कंपनियों ने कराया पंजीयन

कंपनी अधिनियम के अनुसार, विदेशी कंपनियां वे होती हैं जिनका गठन भारत के बाहर हुआ हो और जिनका भारत में व्यवसाय स्थल हो। ये कंपनियां विदेशी पूंजी से स्थापित होती हैं। 2020 से 2024 के बीच विभिन्न क्षेत्रों की करीब 350 विदेशी कंपनियों ने कॉरपोरेट मामलों के मंत्रालय में पंजीकरण कराया है।

आरबीआई की मौद्रिक नीति समिति की बैठक हुई शुरू

रेपो दर को यथावत रखने की संभावना

एजेंसी ⏭ मुंबई

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के गवर्नर संजय मल्होत्रा की अध्यक्षता वाली छह सदस्यीय मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) ने बुधवार को द्विमासिक मौद्रिक समीक्षा पर विचार-विमर्श शुरू कर दिया। यह बैठक अर्थव्यवस्था में वृद्धि पर केंद्रित आम बजट और भारत-अमेरिका व्यापार समझौते की घोषणा की पृष्ठभूमि में हो रही है, जिससे बाजार की धारणा मजबूत हुई है। मौद्रिक नीति समिति का फैसला शुक्रवार सुबह गवर्नर मल्होत्रा द्वारा घोषित किया जाएगा। विशेषज्ञों का मानना कि भारतीय रिजर्व बैंक ने पिछले फरवरी से अब तक प्रमुख नीतिगत दर रेपो में 1.25 प्रतिशत अंक की कटौती कर दी है और चूंकि फिलहाल न तो वृद्धि और न ही मुद्रास्फीति के मोर्चे पर कोई बड़ी चिंता है, इसलिए इस बार दरों में यथास्थिति बनाए रखी जा सकती है। रिपोर्ट में कहा गया, ''हमारा यह भी मानना है कि आरबीआई ने अब ब्याज दरों में कटौती करना बंद कर दिया है, लेकिन वह अपने तरलता प्रावधानों का सावधानीपूर्वक प्रबंधन करना जारी रखेगा।

PUBLIC NOTICE

This is to inform public in general that Kotak Mahindra bank Ltd has organized an auction in below mention respect of Vehicles.

VEHICLES FOR SALE

1) ASHOK_LEY AL_5525
REG. NO. NL01AH2860-YOM- 2023
2) TATA MOTORS TATAACE
REG. NO. DL1LAJ9567-YOM-2023
3) ASHOK_LEY AL_GA1920
REG. NO. HR38AF3195-YOM -NA
4) FORCE FORCE19D
REG. NO. DL1VC4909-YOM-2024
5) EICHR_VECV 1095_GOODS
REG. NO. HR38AA6282-YOM-2019
6) EICHR_VECV EICPRO3019
REG.NO. HR38AB8543-YOM-2021
7) TATA MOTORS LPT1212
REG. NO. HR55AM0985-YOM-2022
8) TATA MOTORS LPT1109T
REG. NO. UP15GT8447-YOM-NA
9) TATA MOTORS T_INTRAV20
REG.NO. DL1LAM9326-YOM- NA
10) TATA MOTORS TATA3118_T
REG.NO. RJ14GJ3039-YOM-2017
11) BHARATBENZ BB1617RGC
REG.NO. HR38AC0412-YOM- 2022
12) ASHOK_LEY AL3520CC
REG.NO. UP13CT8187-YOM- 2023
13) EICHR_VECV EICHER_PRO
REG.NO. HR38AD5549-YOM- 2022

UNDER HYPOTHECATION WITH M/S KOTAK MAHINDRA BANK IS UNDER SALE IN ITS "AS IS WHERE IS CONDITION" INTERESTED PARTIES CAN GIVE THEIR QUOTATIONS WITH IN 7 DAYS AT

BRANCH ADDRESS:
KOTAK MAHINDRA BANK
3RD FLOOR, PLOT NO 7,
SECTOR 125, NOIDA-201313
OR CONTACT : RAMAN AHUJA
KOTAK MAHINDRA BANK LTD.
CONTACT NO. 8377988238
EMAIL-raman.ahuja@kotak.com

दो माह बाद दिए गए जांच के आदेश

सीसीआई ने दिए इंडिगो के खिलाफ जांच के आदेश

नई दिल्ली । भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (सीसीआई) ने परिचालन अड़चनों के कारण दिसंबर में हजारों उड़ानें रद्द किए जाने के मामले में बुधवार को देश की सबसे बड़ी एयरलाइन इंडिगो के खिलाफ विस्तृत जांच का आदेश दिया। घटना के करीब दो महीने बाद जारी इस आदेश में सीसीआई ने कहा कि बड़ी संख्या में उड़ानें रद्द कर इंडिगो ने अपनी निर्धारित क्षमता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बाजार से हटा लिया, जिससे कृत्रिम अभाव की स्थिति पैदा हुई और व्यस्त मांग के दौरान यात्रियों की हवाई यात्रा तक पहुंच सीमित हुई। आयोग ने कहा, /''किसी प्रभुत्वशाली कंपनी की तरफ से ऐसे आचरण को प्रतिस्पर्धा अधिनियम की धारा चार (2)(बी)(आई) के तहत सेवाओं की आपूर्ति सीमित करने के रूप में देखा जा सकता है। प्रतिस्पर्धा अधिनियम की धारा चार बाजार में दबदबे की स्थिति के दुरुपयोग से संबंधित है। ने कहा कि प्रथम दृष्टया इंडिगो का यह आचरण भारत में प्रतिस्पर्धा पर प्रतिकूल प्रभाव डालता प्रतीत होता है। इसके मद्देनजर आयोग ने मामले की विस्तृत जांच के लिए अपने महानिदेशक को निर्देश दिए हैं।

आईटी शेयर में बड़ी गिरावट से बाजार की बढ़त सीमित

मुंबई । सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) क्षेत्र की प्रमुख कंपनियों के शेयरों में तेज गिरावट के बीच घरेलू शेयर बाजार में बुधवार को मामूली बढ़त दर्ज की गई। सेंसेक्स 79 अंक की बढ़त पर रहा जबकि निफ्टी 48 अंक चढ़कर बंद हुआ। कारोबारियों ने कहा कि अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपये में कमजोरी और कच्चे तेल के दाम में तेजी से भी निवेशक धारणा प्रभावित हुई। हालांकि, चुनिंदा शेयरों में तेजी से सूचकांक हल्की बढ़त के साथ बंद हुए। पिछले कारोबारी सत्र में जोरदार उछाल के बाद बीएसई का 30 शेयर वाला मानक सूचकांक सेंसेक्स 78.56 अंक बढ़कर 83,817.69 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान यह 83,947.53 अंक के उच्चस्तर तक गया और 83,119.95 अंक के निचले स्तर तक आया। इस तरह इसमें 827.58 अंक का उतार-चढ़ाव देखा गया। निफ्टी 48.45 अंक यानी 0.19 प्रतिशत चढ़कर 25,776 अंक पर बंद हुआ। रेलिगेयर ब्रोकिंग लिमिटेड के शोध विभाग के वरिष्ठ उपाध्यक्ष अजित मिश्रा ने कहा, '' वैश्विक बाजार के मिले-जुले संकेतों और हालिया वैश्विक प्रौद्योगिकी शेयरों में कमजोरी का असर घरेलू आईटी शेयर पर भी पड़ा।''

अभियुक्त व्यक्ति की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्घोषणा

धारा 82 CrPC देखिए

मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि अभियुक्त **केवल कृष्ण कुमार पुत्र** स्व0 जुगल किशोर कुमार, **निवासी:** ई–202, रमेश नगर नई दिल्ली–110015, ने **CC No. 59/2016, U/S 138 NI Act, पुलिस स्टेशन राजेंद्र नगर, केन्द्रीय जिला, नई दिल्ली,** के अधीन दंडनीय अपराध किया है (या संदेह है कि उसने किया है) और उस पर जारी किया गया गिरफ्तारी के वारंट को यह लिख कर लौटा दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **केवल कृष्ण कुमार** मिल नहीं रहा है और मुझे समाधानप्रद रूप में दर्शित कर दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **केवल कृष्ण कुमार** फरार हो गया है (या उक्त वारंट की तामील से बचने के लिए अपने आप को छिपा रहा है)

इसलिए इसके द्वारा उद्घोषणा की जाती है कि **CC No. 59/2016, U/S 138 NI Act, पुलिस स्टेशन राजेंद्र नगर, केन्द्रीय जिला, नई दिल्ली,** के उक्त अभियुक्त **केवल कृष्ण कुमार** से अपेक्षा की जाती है कि वे इस न्यायालय के समक्ष (या मेरे समक्ष) उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए दिनांक **25.03.2026** को या इससे पहले हाज़िर हो।

आदेशानुसार
श्री अरविंद तोमर
न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी (एनआई एक्ट)–07,
केंद्रीय जिला, कमरा नं0–507, विस्तार खण्ड,
तीस हजारी कोर्ट, दिल्ली

DP/1541/CD/2026
(Court Matter)

सूचना

सभी पाठकों से अनुरोध है कि हरिभूमि समाचार-पत्र में प्रकाशित विज्ञापनों (डिस्पले/क्लासीफाईड) में दिए गए तथ्यों/दावों के बारे में अपने विवेक से निर्णय लें और विज्ञापन के दावों की विश्वसनीयता को परखें। हरिभूमि समूह के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की विज्ञापनों के तथ्यों से सम्बन्धित कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।

सन फार्मा ने तीन साल के लिए आरसीबी से की साझेदारी

नई दिल्ली । सन फार्मास्युटिकल इंडस्ट्रीज ने बुधवार को कहा कि उसने रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के साथ वर्ष 2026 सत्र से शुरू होने वाले तीन साल की अवधि के लिए प्रमुख प्रायोजक और स्वास्थ्य साझेदार के रूप में साझेदारी की है। कंपनी ने बयान में कहा कि यह साझेदारी मुंबई स्थित दवा कंपनी का क्रिकेट प्रायोजन में पहला कदम है, जो उसकी कॉरपोरेट ब्रांड यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। सन फार्मा के प्रबंध निदेशक, कीर्ति गनोरकर ने कहा, ''आरसीबी और सन फार्मा दोनों अपने-अपने क्षेत्रों में अगुवा हैं, और यह सहयोग निरंतरता, जुनून और नवाचार के हमारे साझा मूल्यों को दर्शाता है।'' उन्होंने कहा कि इस साझेदारी के जरिये सन फार्मा का लक्ष्य पूरे भारत में लोगों के साथ अपने कॉरपोरेट ब्रांड संपर्क को मजबूत करना है, उन्हें उस कंपनी के करीब लाना है जिस पर वे हर दिन दवाओं के लिए भरोसा करते हैं।

दो बांड एक साथ

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के मुख्य परिचालन अधिकारी (सीओओ) राजेश मेनन ने कहा, ''सन फार्मा का हमारे साथ प्रधान प्रायोजक के बतौर जुड़ना इस प्रतिबद्धता को मजबूत करता है, जो प्रभाव और नवाचार पर केंद्रित दो ब्रांड को एक साथ लाता है।''

सिगरेट पर ऊंचे कर से बढ़ेगा अवैध कारोबार

नई दिल्ली। इस महीने की शुरुआत से लागू हुए अतिरिक्त उत्पाद शुल्क के कारण सिगरेट की कीमतों में हुई बढ़ोतरी से इसके अवैध व्यापार में उछाल आ सकता है और कर संग्रह पर दबाव पड़ सकता है। एक रिपोर्ट में बुधवार को यह आशंका जताई गई। 'सिगरेट पर नया कर शासन और उसका प्रभाव' शीर्षक वाली इस रिपोर्ट में कहा गया है कि संपूर्ण सिगरेट मूल्य श्रृंखला और अर्थव्यवस्था पर उच्च कर दरों का प्रभाव काफी गहरा होगा, जिसे बाद में बदलना मुश्किल हो सकता है। अर्था आर्बिट्रेज कंसल्टिंग ने अपनी रिपोर्ट में कहा, सिगरेट कर दरों में मौजूदा वृद्धि से न केवल अवैध सिगरेट व्यापार और खपत को बढ़ावा मिलने की संभावना है, बल्कि इसके व्यापक सामाजिक-आर्थिक प्रभाव भी होंगे। एक फरवरी से पान मसाला पर स्वास्थ्य उपकर के साथ-साथ सिगरेट और तंबाकू उत्पादों पर 40 प्रतिशत की उच्चतम जीएसटी दर के ऊपर अतिरिक्त उत्पाद शुल्क लागू हो गया है। रविवार से अतिरिक्त उत्पाद शुल्क लागू होने के बाद 10 स्टिक वाले सिगरेट के एक पैक की कीमतों में न्यूनतम 22 से 25 रुपये की वृद्धि हुई है। आंकड़ों के मुताबिक, बढ़ती कीमतों से अवैध तंबाकू उत्पादों की मांग लगभग 39 प्रतिशत बढ़ने की उम्मीद है, जिससे सिगरेट की कुल अवैध खपत 46 अरब स्टिक से अधिक हो सकती है।

राशिफल

मेष — शैक्षिक कार्यों के लिए किसी दूसरे स्थान पर जा सकते हैं। रहन-सहन अव्यवस्थित रहेगा। आय वृद्धि के साधन विकसित होंगे।

वृष — व्यर्थ के क्रोध से बचें। किसी मित्र के सहयोग से नौकरी के अवसर मिल सकते हैं। आय में वृद्धि होगी। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

मिथुन — अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। धर्म के प्रति श्रद्धाभाव रहेगा। व्यर्थ की भाग-दौड़ रहेगी। सन्तान की ओर से सुखद समाचार मिल सकते हैं।

कर्क — आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। परिवार का साथ मिलेगा। वस्त्रों के प्रति रुझान बढ़ सकता है। खानपान के प्रति सचेत रहें। मन में निराशा एवं असंतोष के भाव रहेंगे।

सिंह — शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी। लेखनादि-बौद्धिक कार्यों से आय के साधन बन सकते हैं। रहन-सहन कष्टमय हो सकता है।

कन्या — क्रोध एवं आवेश के अतिरेक से बचें। मन में निराशा एवं असन्तोष के भाव रहेंगे। स्वभाव में चिड़चिड़ापन हो सकता है। व्यर्थ के विवादों से बचने का प्रयास करें।

तुला — पठन-पाठन में रुचि रहेगी। शैक्षिक कार्यों के सुखद परिणाम मिलेंगे। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा।

वृश्चिक — घर-परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं। परिश्रम अधिक रहेगा। मित्रों का सहयोग मिलेगा। वस्त्रों पर खर्च बढ़ेंगे। रहन-सहन कष्टमय हो सकता है।

धनु — पिता का साथ रहेगा। सेहत का ध्यान रखें। शैक्षिक कार्यों में व्यवधान आएंगे। नौकरी में तरक्की के मार्ग प्रशस्त होंगे।

मकर — परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। परिश्रम अधिक रहेगा। स्थान परिवर्तन सम्भव है। लंबे समय से रुके हुए काम बनने की उम्मीद है।

कुंभ — परिवार की समस्याएं परेशान कर सकती हैं। वाहन के रख-रखाव एवं वस्त्रों पर खर्च बढ़ सकते हैं। शिक्षा में सुधार होगा। आत्मविश्वास में कमी आएगी।

मीन — वस्त्र उपहार में मिल सकते हैं। मित्र के सहयोग से आय वृद्धि के स्रोत विकसित हो सकते हैं। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। परिवार में अशांति रहेगी।

भारत दो-तीन दशकों में 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनेगा: अंबानी

नई दिल्ली । रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर मुकेश डी अंबानी ने कहा कि भारत अगले 20–30 वर्षों में 25 से 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की क्षमता रखता है और यह दौर देश की युवा पीढ़ी के लिए निवेश का एक बहुत बड़ा अवसर होगा। मुंबई में आयोजित जियो–ब्लैकरॉक कार्यक्रम इन्वेस्टिंग फॉर ए न्यू एरा में ब्लैकरॉक के सीईओ लैरी फिंक के साथ फायरसाइड चैट के दौरान अंबानी ने भारत की विकास यात्रा का स्पष्ट खाका पेश किया। जियो ब्लैकरॉक इवेंट में मुकेश अंबानी ने कहा कि भारत पारंपरिक रूप से बचत का देश रहा है, लेकिन अब समय है कि देश के आगे बढ़ने का फायदा निवेश करके उठाया जाए। बचत को निवेश में बदला जाए। सेविंग्स का पैसा यदि कैपिटल मार्केट्स में निवेश हो, तो इससे न केवल परिवारों की संपत्ति बढ़ेगी बल्कि देश की आर्थिक वृद्धि को भी गति मिलेगी। लैरी फिंक ने भी इस विचार का समर्थन करते हुए कहा कि लॉन्ग-टर्म इक्विटी निवेश भारत जैसे तेजी से बढ़ते देश में संपत्ति सृजन का सबसे प्रभावी जरिया बन सकता है।

वंदे भारत स्लीपर ट्रेनसेट के 260 रैक बनाने की योजना: अश्विनी वैष्णव

नई दिल्ली। वंदे भारत स्लीपर जैसी नई रोलिंग स्टॉक के विकास की प्रक्रिया में एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, जिसमें सुरक्षित, विश्वसनीय और आरामदायक यात्रा सुनिश्चित करने के लिए तकनीकी नवाचार, रणनीतिक योजना और उत्पादन का संयोजन शामिल है। इसमें प्रोटोटाइप का विकास, व्यापक परीक्षण और प्रयोग के बाद श्रृंखला उत्पादन शामिल है।

वंदे भारत स्लीपर ट्रेन निर्माण कार्यक्रम को बीईएमएल और इंटीग्रल कोच फैक्ट्री, चेन्नई और प्रौद्योगिकी भागीदारों द्वारा प्रोटोटाइप विकास, प्रयोग और श्रृंखला उत्पादन के माध्यम से चरणबद्ध तरीके से निष्पादित किया जा रहा है।

इन ट्रेनसेटों को नियमित यात्री सेवा में शामिल करना मांग और परिचालन तत्परता के आधार पर चरणबद्ध तरीके से किया जाएगा। वंदे भारत स्लीपर ट्रेनसेट के कुल 260 रेक के निर्माण की योजना बनाई गई है। यात्रियों के यात्रा अनुभव को बेहतर बनाने और सुरक्षित एवं आरामदायक यात्रा के मामले में नए मानक स्थापित करने के लिए, इन ट्रेनसेटों में आधुनिक कोच लगाए गए हैं।

अभियुक्त की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्घोषणा

धारा 82 Cr.P.C. देखिए

मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि अभियुक्त नाम **युवराज शर्मा (निदेशक) मैसर्स एनएमएम प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड पुत्र:** श्री राज कुमार शर्मा **पता:** फ्लैट नंबर 102 (9201) टावर 9 एटीएस वन हैमलेट सेक्टर 4 नोएडा जीबी नगर ने **Ct 360/2020 थाना: मंडावली दिल्ली,** के अधीन दण्डनीय अपराध किया है (या संदेह है कि उसने किया है), और उस पर जारी किए गए गिरफ्तारी के वारण्ट को यह लिख कर लौटा दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **युवराज शर्मा** मिल नहीं रहा हैं और मुझे समाधानप्रद रूप में दर्शित कर दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **युवराज शर्मा** फरार हो गया है (या उक्त वारण्ट की तामील से बचने के लिए अपने आप को छिपा रहा हैं)।

इसलिए इसके द्वारा उद्घोषणा की जाती है कि **Ct 360/2020 थाना: मंडावली दिल्ली,** के उक्त अभियुक्त **युवराज शर्मा** से अपेक्षा की जाती है कि वे इस न्यायालय के समक्ष (या मेरे समक्ष) उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए दिनांक **28.02.2026** को या इससे पहले हाजिर हो।

आदेशानुसार
श्री सचिन
जेएमएफसी–03, पूर्वी जिला, कमरा नंबर–16
कड़कड़डूमा कोर्ट, दिल्ली

DP/1551/ED/2026
(Court Matter)

शब्द पहेली - 6129

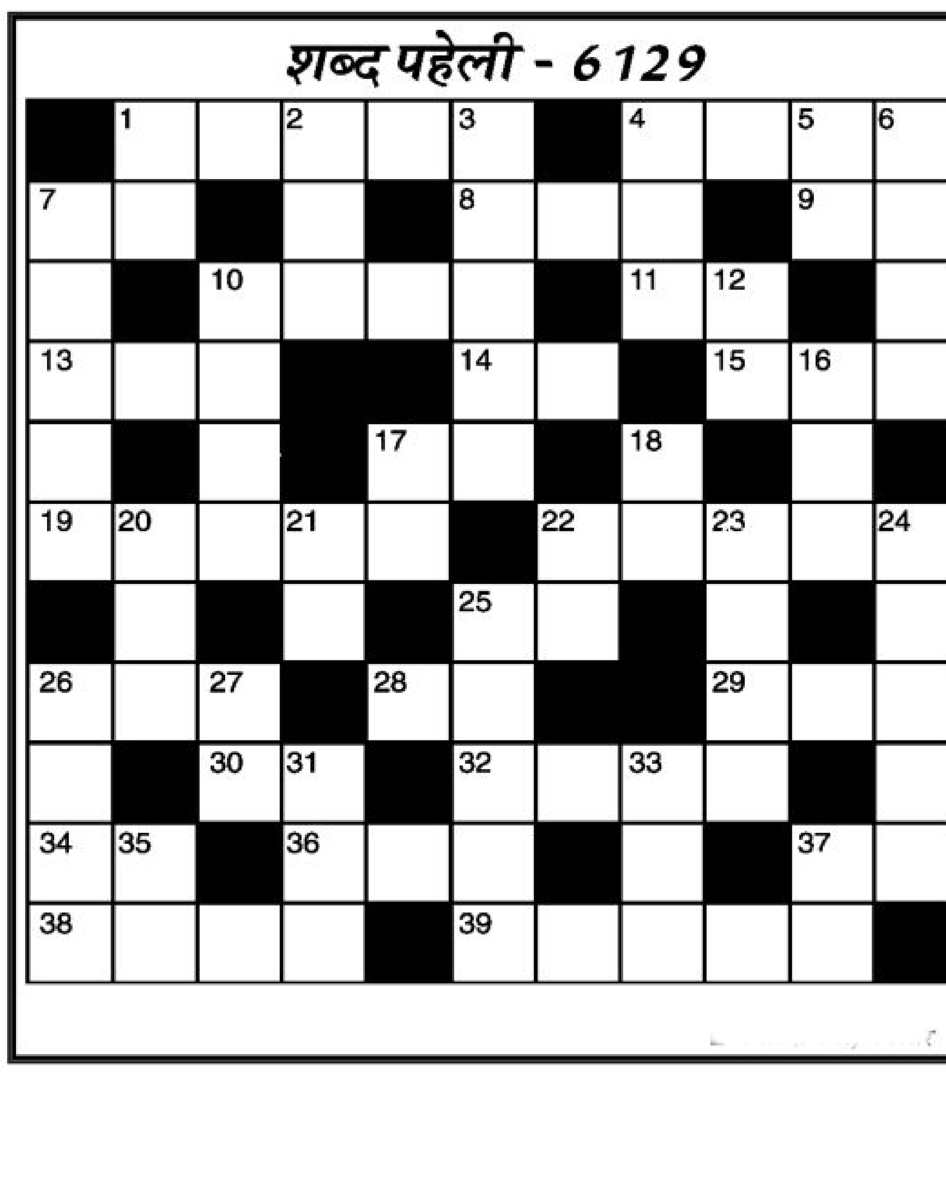

बाएँ से दाए

1.पावर हाऊस -5
4.दिमागी,कल्पित-4
7.हृदय-2
8.खोदना-3
9.प्रचार वाक्य,स्लोगन-2
10.नुकीला-4
11.कलिका-2
13.प्यारा,लाडला-3
14.विशिष्ट,विशेष-2
15.खर्च,उपभोग-3
17.नौका-2
19.नाम करण-2,3
22.चमकीला-5
25.महोदय (अंग्रेजी-2)
26.रनिवास,जनवासा-3
28.संध्या,सांझ-2
29.दलना,महीन करना-3
30.जस,सम्मान -2
32.कारागृह-4
34.आलाप,लय,सुर-2
36.पागल स्त्री-3
37.इंकार,मना-2
38.सराबोर,सना हुआ -4
39.वेश्या,तवायफ-5

ऊपर से नीचे

1.चूहे का घर-2
2.नेता-3
3.सार-संभार-2,3
4.आदर्श,कसौटी-3
5.छाती-2
6.अचरज भरा कार्य-4
7.हृदय को ठेस लगना-5
10.अनवरत वर्षा-4
12.जूं का अंडा-2
16.ओट,घूंघट-3
17.मां के पिता-2
18.दुख,कष्ट-2
20.राष्टीय पक्षी-3
21.पत्र,लैटर-2
22.गुप्तचर,दूत-2
23.कपड़ों के टुकड़े (अंग्रेजी-4)
24.रवानगी, प्रस्थान करना-3,2
25.समयुगीन,समवर्ती-5
26.बंद,स्ट्राइक-4
27.सुरा,शराब-2
31.वचन,प्रतिज्ञा-3
33.बंदर-3
35.नथनी,नथिया-2
37.शहद-2

शब्द पहेली- 6128 का हल